शैतान

(हास्यरस की कहानियाँ)

लेखक

शफ़ीकुर्रहमान

अनुवादक

महमूद अहमद 'हुनर'

२, मिन्टोरोड — इलाहाबाद — २

मैं और मेरी कहानियाँ

मैं—६ नवम्बर १६२० को पंजाब में पैदा हुआ। आर्टस का शौक था लेकिन जून १६४२ की एक चमकीली सुबह को अचानक मालूम हुआ कि मेडिकल कालेज लाहौर से यम० बी०, बी० यस० कर चुका हूँ। कुछ अरसा 'हाउस सर्जन' इरकर इण्डियन मेडिकाल सर्विस में शामिल हो गया। तब से फौज में हूँ। इस अर्से में देशाटन के खूब मौके मिले और नई-नई जगहों पर रहने का अवसर प्राप्त हुआ।

फिर गया के करीब से गुजरते हुए वह चीज मिल गई जो मुद्दतों पहले महात्मा बुद्ध को वहीं कहीं एक दरख्त के नीचे प्राप्त हुई थी, फर्क इतना था कि महात्मा बुद्ध को निर्वाण हासिल करने के लिए तपस्या करनी पड़ी थी और मेरा मामला कि "आग लेने को जायें, पयम्बरी मिल जाय" वाला था।

यह है मेरी जिन्दगी का हाल। अब इसमें न तो कोई खास घटना है और न इतनी लम्बी चौड़ी जिन्दगी है कि उसके बारे में झूठ-सच लिखा जाय। हक़ीकत यह है कि इंसान सत्तर अस्सी बरस की उम्र से पहले अपना जीवन-चरित्र लिख ही नहीं सकता।

भला इस उम्र में क्या लिखा जा सकता है जब हर हफ्ते, हर महीने जिन्दगी के नजरिए (दृष्टिकोण) बदलते रहते हों।

मेरी कहानियां—मैंने अब तक सात किताबें लिखी हैं। पहली किताब सन् १६४२ में छपी थी। तब यह इरादा था कि हर 'लीप' के साल एक नई किताब छपवाऊँगा लेकिन कुछ प्रकाशकों का कुसूर और कुछ मेरा, इस पर अमल न हो सका। हालांकि अब तक सिर्फ़ साढ़े

पाँच किताबें आनी चाहिए थी। खुद मुझे अपनी किताबों में से एक भी पसन्द नहीं। छपने के बाद एकाध महीने तक किताब में दिलचस्पी रहती है फिर महसूस होता है कि यह तो कुछ नहीं।

मैंने कुछ संजीदा किस्म की कहानियां लिखी थीं जिन्हें हास्य प्रधान समझा गया। कुछ हास्य-प्रधान चीजें लिखीं जिन्हें समाजी समझा गया। कुछ रूमानी कहानियाँ लिखीं जिन्हें रूमानी समझा गया। चुनांचे एक मरतबा दो तरक्की पसन्द नज्में भी "लिख दी" ("लिख दी" इसलिए कि आजाद नज्में थीं।) उन्हें न जाने क्या समझा गया।

इन दिनों मैं Mess के एक रोशन और हवादार कमरे में रहता हूँ। सर्दियों में क्रिकेट खेलता हूँ, गर्मियों में तैरता हूँ, बरसात में जो किताब सामने आ जाय पढ़ डालता हूँ। सुबह-सुबह भैरवी और जोगिया सुनता हूँ, शाम को मोटर सायकिल पर क्लब जाता हूँ, ।

जिन्दगी की सबसे बड़ी ख्वाहिश है कि दुनिया भर में घूमने के बाद बाकी उम्र लन्दन या पेरिस के किसी तनहा और खामोश कोने में खुदा की याद में बसर कर दूँ। देखिये यह ख्वाहिश कब पूरी होती है—न हो उससे मायूस उम्मीदवार......

शफ़ीकुर्रहमान

क्रम

शैतान

उस रात संयोग वश मैंने शैतान को स्वप्न में भी देख लिया। ख्वाहमख्वाह दिखाई पड़ गया। मैं रात को अच्छा भला सोया था, न शैतान के बारे में कुछ सोचा था, न कोई चर्चा हुई थी। न जाने क्यों शैतान से सारी रात बातें होती रहीं। और शैतान ने स्वयं अपना परिचय नहीं दिया कि, "खाकसार को शैतान कहते हैं।" यह मेरी अपनी काल्पनिक तस्वीर थी, जिसने कान में चुपके से कह दिया कि ये हजरत शैतान हैं। छोटे छोटे नोकदार कान, जरा-जरा से सींग, दुबले-पतले, बाँस जैसे लम्बे। एक लम्बी दुम, जिसकी नोक तीर के समान तेज थी। दुम का सिरा शैतान महोदय के हाथ में था। मैं डरता ही रहा कि कहीं ये चुभो न दे। एक अजीब बात और थी कि शैतान ने ऐनक लगा रखी थी।

अब सुबह चाय की मेज पर जो बैठे, तो मेरी आखें खुली की खुली रह गईं। रूफी की शकल बिल्कुल शैतान से मिलती थी। शकल क्या हरकतें भी वैसी ही थीं। वैसा ही कद, वही छोटा सा चेहरा, लम्बी गर्दन, वैसी ही ऐनक, वही कुटिल सी मुस्कराहट।

मुझसे न रहा गया। मैंने चुपके से रजिया के कान में कह दिया—"रूफी शैतान से मिलते हैं।"

वह बोली—"आपको क्या पता ?"

मैंने कहा—"अभी-अभी तो मैंने असली शैतान को स्वप्न में देखा था।"

हुकूमत आपा रजिया के साथ बैठीं थीं। उन्होंने जो हमें काना-फूसी करते देखा तो बस वे काबू हो गईं। तुरन्त पूछा—"क्या है ?

रजिया ने बता दिया। हुकूमत आपा को बस ऐसा मौका मिल भर जाय। बस मेज के गिर्द जो-जो बैठा था, उसे पता लग गया कि रूफी का नया नाम रखा जा रहा है। लेकिन केवल स्वप्न देखने पर तो नाम नहीं रखा जा सकता था। वैसे रूफी ने हमें तंग बहुत कर रखा था। बच्चों तक की इच्छा थी कि उनका कोई नाम रखा जाय।

हम चाय खत्म करने वाले थे। मुझे अपने आमलेट का इन्तजार था और रजिया को काफी का। कालेज में अभी आधा घन्टा बाकी था, इसलिये मजे-मजे से नाश्ता कर रहे थे। इतने में नन्हा हामिद भागा भागा आया। स्कूल का वक्त होगया था, इसलिए जल्दी में था। रूफी के बराबर बैठ गया। हामिद को बुखार हो गया था, इसलिये उसकी हजामत जरा बारीक करवा दी गई थी। रूफी ने बड़ी ललचाई हुई दृष्टि से हामिद के सिर को देखा। जैसे ही हामिद ने टोस्ट खाना शुरू किया, रूफी ने एक हलकी-सी चपत हामिद के सिर पर जमा दी। और मैंने तुरन्त रजिया से कह दिया—"आखिर, रूफी शैतान ही तो हैं।

बुजुर्गों ने कहा है कि अगर कोई नंगे सिर खाए, तो शैतान धौल मारता है!" हुकूमत आपा चौंक कर हमारी ओर आकृष्ट हो गईं। उनको पता चलना था कि सारे कुटुम्ब को मालूम हो गया कि रूफी आज से शैतान कहे जायेंगे। यह था सारा किस्सा, जिससे रूफी शैतान मशहूर हो गये। कुछ ही दिनों में हर एक की जबान पर यह नया नाम पड़ गया। स्वयं रूफी ने इस नाम को बहुत पसन्द किया। बोले—"जब मैं हज करके लौटूँगा तब मुझे शैतान न कहना। तब मैं इबलीस (शैतान का दूसरा नाम) बन कर आऊँगा।" रूफी और मैं बचपन के दोस्त थे, और मुझे उनकी सारी कहानियाँ याद थीं। जब हम बिलकुल छोटे-छोटे थे तब एक दिन रूफी को उनकी नानी अम्माँ इतिहास पढ़ा रही थीं। जब पत्थर और धातु के युग का जिक्र आया, तो रूफी ने मुँह बना कर पूछा—"नानी अम्माँ आप पत्थर के जमाने में कितनी बड़ी थीं?" फिर कहीं सुकरात, बुकरात का जिक्र आया, तो आप कहने लगे—"नानी अम्मां सुकरात और बुकरात कैसे थे!"

उन्होंने पूछा—"क्या मतलब तुम्हारा?"

आप कहने लगे—"आप ने तो देखे होंगे?"

हर वक्त रूफी को कुछ न कुछ सूझती रहती थी। हमारे स्कूल के सामने जो सड़क थी, उस पर असंख्य घोड़े गुजरते रहते थे (सवारों सहित। कोई सवार मज़े-मज़े जा रहा है। एकाएक रूफी चिल्लाते—"अरे जनाब" जनाब सवार साहब" वह कुछ गिर पड़ा है। घोड़े की दुम गिर गई है""उठा लीजिये साहब, नहीं तो घोड़ा लंडूरा हो जायगा।" और सवार तुरन्त चौंक कर ठहर जाता और घूम कर देखता। खास कर घोड़े की दुम तो अवश्य ही देखता।

एक दिन रूफी क्लास में तोता ले आए।

पूछा—"यह क्या इल्लत है?"

बोले—"अभी पिछले महीने मैंने पढ़ा है कि तोता सौ साल तक ज़िन्दा रहता है। मैंने सोचा कि लिखी-लिखाई बातों का क्या भरोसा। खुद तजर्बा करके देख लेते हैं।" मास्टरों से तो उनकी सदैव मुकदमा-बाजी रहती थी। एक दिन मास्टर साहब ने चहलक़दमी का अर्थ पूछा। किसी ने जवाब न दिया। रूफ़ी उठ कर बोले—"दो बार बीस क़दमी।"

उनकी समझ में न आया। रूफ़ी बोले—"जनाब चहल के मानी हैं चालीस और चालीस कदमी से दो बार बीस क़दमी कहीं अच्छा लगता है।

भूगोल के अध्यापक महोदय ने एक दिन रूफी से पूछा—"अगर तुम पूर्व की ओर मुँह करके दोनों हाथ फैला दो, तो तुम्हारे बाएँ हाथ पर क्या होगा?"

रूफी ने बड़ी मुसमुसी शकल बना कर कहा—अंगुलियाँ।"

गणित में तो बिलकुल फिसड्डी थे। सवाल पूछा जा रहा है रुपये के सम्बन्ध में, जवाब निकलता है महीनों में। इसी तरह महीनों का जवाब कुत्ते और बिल्लियों में निकल रहा है। पूछा—"यह क्या बद-तमीजी है?"

जवाब मिलता—"जनाब, मैं क्या करूँ? यह कमबख्त जवाब इसी तरह आया था।" और फिर जब मजदूरी और समय का सवाल निकालते, तो जवाब आता सवातीन लड़के या साढ़े उन्नीस स्त्रियाँ। इस पर मास्टर साहब बहुत चिढ़ते। एक दिन रूफी ने जवाब निकाला '२।३ औरत।' मास्टर साहब गरज कर बोले—"नालायक! २।३ औरत भी कभी देखी आज तक?"

रूफी सिर खुजला कर बोले—"जनाब कोई लड़की होगी।" और जब दूसरी कक्षा में इन्सपेक्टर साहब मुआयना करने आये, तो वे रूफी से बहुत खुश हुए और इनाम दे कर गये। उन्होंने पूछा—"अगर पानी

को ठण्ढा किया, जाय तो क्या बन जायगा ?" हमने सोचा अब रूफी कह देंगे कि बर्फ बन जायगा।

रूफी बोले—" कितना ठण्डा किया जाय ?"

वे बोले—"बहुत ठण्डा किया जाय।"

रूफी सोच कर बोले—" तो वह बहुत ठण्ढा हो जायगा।" 'बहुत' शब्द को रूफी ने बहुत खींच कर कहा।

"अगर और भी ठंडा किया जाय तो ?" इन्स्पेक्टर साहब ने पूछा।

"अगर और भी ठण्ढा किया जाय तो फिर वह और भी ठण्ढा हो जायगा" रूफी ने इन्सपेक्टर साहब के स्वर की नकल उतारते हुए कहा।

इन्सपेक्टर साहब मुस्कराने लगे। बोले—" अच्छा अगर पानी को गर्म किया जाय, तब ?"

"तब वह गर्म हो जायगा।"

"नहीं अगर हम उसे बहुत गर्म करें और देर तक गर्म करते रहें, फिर ?"

रूफी कुछ देर सोचते रहे फिर एकाएक उछल कर बोले—" हम जानते हैं—चाय बन जायगी।"

इन्स्पेक्टर साहब ने बहुत जोर का ठहाका लगाया। मास्टरों ने कोशिश की कि कहीं उन्हें इधर-उधर ले जायँ, किन्तु वे पूर्ववत् वहीं खड़े रहे और रूफी से सवाल किया—"बिल्ली की कितनी टाँगें होती हैं ?"

"करीब-करीब चार।"

"और आँखें ?"

"कम से कम दो...।"

"और दुमें ?"

"ज्यादा से ज्यादा एक !" इन्सपेक्टर साहब हँस-हँस कर लोटन कबूतर बने जा रहे थे।

"और कान ?" उन्होंने पूछा।

"तो क्या सचमुच आपने अब तक बिल्ली नहीं देखी ?" रूफी मुँह बना कर बोले। और इन्स्पेक्टर साहब हँसते-हँसते लुढ़क गये।

उन दिनों हम और रूफी दोस्त थे।

मैं जज साहब के यहाँ रहता था। पहले भी हम वहीं रहते थे। पर अब्बा की बदली हो गई, और वे ऐसी जगह बदल कर गये जहाँ कालेज तो एक ओर कोई स्कूल तक न था। जज साहब ने होस्टल न जाने दिया। उधर उनकी बेगम ने अम्मी से पूछ लिया था। अतः मैं उनके यहाँ रहने लगा। रूफी वहीं रहते थे। जज साहब से उनकी कोई दूर की रिश्तेदारी थी। मेरा अनुमान था कि रूफी उनके भतीजे थे। कुटुम्ब के सारे लोग मुझे अच्छे लगते थे और उनमें एक हस्ती तो मुझे सबसे अधिक प्रिय थी—वह थी रजिया !

और जिनसे मैं डरता था वह थीं रजिया की बड़ी बहिन जिनका असली नाम तो खुदा जाने क्या था, सब बच्चे उन्हें हुकूमत आपा कहते थे। मेरी ही आयु की थीं या शायद कुछ बड़ी ही होंगी। यदि वे वहाँ न होतीं, तो मैं और रजिया कभी के बड़े गहरे दोस्त बन गये होते। लेकिन मैं उन्हें एक आँख भी न भाता था।

सारा दिन कालेज में बीतता। शाम को खेलने चला जाता और रात को सिनेमा। रजिया से बातें करने का समय ही न मिलता। हफ्ते भर में एक-दो बार मौका मिलता था, वह भी हुकूमत आपा की भेंट हो जाता। बनती तो उनकी किसी से भी न थी। मैं तो चुप हो जाता, किन्तु रूफी वह जवाब देते कि हुकूमत आपा खिसिया कर रह जातीं।

सारे दिन लड़ती-झगड़ती और दूसरों की व्यर्थ आलोचना करती

रहतीं ! किसी बात का शहर में ढिंढोरा पिटवाना हो, तो जाकर हुकूमत आपा से कह दीजिये । बस, हर एक को पता लग जायगा ।

मैं बिलकुल न समझा कि आखिर इनकी पालिसी क्या है, इनके उद्देश्य क्या हैं ! रूफी का ख्याल यह था कि यह अपना भी समय नष्ट कर रही हैं और दूसरों का भी । और मुझे उनका यह ख्याल बिलकुल सच मालूम होता था ।

उधर मैं और रूफी बड़े गहरे मित्र थे । मैंने कोई बात भी उनसे छिपा कर न रक्खी थी, यहाँ तक कि रजिया के विषय में भी सब कुछ उन्हें बता रक्खा था । और जो बातें हम आपस में करते वह तुरन्त मैं रूफी से कह देता और सदैव उनकी सलाह से काम करता । रूफी बड़े प्रेम से मुझे बताते कि आज रजिया से यह कह देना, आज यह पूछ कर देखना, आज यह करना, आज वह करना । और मैं भी उसी तरह करता ।

हमें एक साहब ने सिनेमा देखने के लिये निमंत्रण दिया । बिलकुल नये दोस्त बने थे । वह भी इस तरह कि एक दिन अपने पिता के साथ जज साहब से मिलने आये । वहाँ मैं और रूफी बैठे थे । उनके पिता रूफी की बातों से भड़क उठे, बोले—"क्यों, बेटे, आज-कल तुम क्या करते हो ?"

रूफी बोले—"जी, आज-कल मैं बी० ए० का इम्तिहान दिया करता हूँ !" और वास्तव में रूफी न जाने कितने वर्षों से बी० ए० का इम्तिहान दे रहे थे ।

फिर वह बुजुर्ग जज साहब से बोले—"क्या बताऊँ, कितना जी चाहता है कि आपको फोन करूँ, मगर नम्बर भूल जाता हूँ । आज-कल तो कुछ भी याद नहीं रहता । पहले याददाश्त के तौर पर एक नोट-बुक में ऐसी बातें लिख लिया करता था, लेकिन अब वह नोट बुक ही कहीं भूल जाता हूँ ।"

कितना मना किया था उसे। और छोटी-छोटी दाढ़ी भी उगा ली है। गोया दाढ़ी, मूँछों की खेती हो रही है।"

तुरन्त नौकर को बुलाया और एक तार लिख कर दिया कि भेज दे।

मैने तार का मजमून पढ़ा। लिखा था—"Shave at once" वह तार उसी समय भेज दिया गया।

हम सिनेमा के लिये तैयार तो हो गये, किन्तु वे महाशय अभी तक गायब थे। रूफ़ी ने फोन करना चाहा, लेकिन नम्बर न मिला। आखिर खीज कर बोले—"तो किसी और को फोन कर दें ?"

"किसी और को ?"

"हाँ क्या हर्ज है ? किये देते हैं।" उन्होंने न जाने कौन से नम्बर को बुला लिया। मैं सरक कर चोंगे के निकट आ गया।

"कौन साहब बोल रहे हैं ?" रूफी बोले।

"खाकसार है अब्दुल मजीद 'मजबूर'।"

"ओह ! अब्दुल मजीद 'तरबूज !" तो गोया आप शायर हैं ?" यद्यपि उन्होंने साफ 'मजबूर' कहा था।

"जी नहीं, मजबूर !" वह बोले।

"माफ कीजिये, मैं तो हरगिज यह बेअदबी नहीं कर सकता। आप जरूर मजाक कर रहे हैं, यानी अब्दुल मजीद 'लंगूर'....।"

"ओफ्फोह जनाब ! मजबूर...मज....बू..ऊ....र !" वे बोले।

"अच्छा, तो मजबूर साहब हैं। तो आप कुल कितने भाई हैं ?"

"चार हैं हम !" वह बोले

"अगर आप पाँच होते तो हमारा क्या बिगाड़ लेते।" रूफी बोले और जल्दी से टेलीफोन का चोंगा रख दिया।

इतने में वह महाशय आ गये और हम सिनेमा चल दिये। पूछा—"कौन सी पिक्चर है ?" वह बोले—"इन्साफ की तोप !"

मैंने विरोध प्रकट किया कि क्रिकेट आदि जैसी दिलचस्प चीजें छोड़कर फिल्म देखना सरासर हिमाकत है।

रूफी बोले—"चलो, अब तैयार हो गए हो, तो चाहे 'खूँखार फुलझड़ी' ही क्यों न हो, जरूर देखेंगे।"

अब रास्ते में उन महाशय ने अपने पिता जी के सम्बन्ध में जो बातें शुरू की हैं, तो हम तङ्ग आ गये। उनकी बातें समाप्त होने ही में न आती थीं। उनके पिता जी मुंसिफ थे, अच्छे-खासे भारी-भरकम आदमी थे। वे उनकी तारीफें कर रहे थे कि किस तरह उन्होंने लम्बी-लम्बी सजा वाले अपराधियों को छोड़ दिया था और अच्छे भले आजाद लोगों को कैदखाने में भेज दिया था; और अब सारे देश में इस आश्चर्यजनक इन्साफ का डङ्का बज रहा था। आखिर तङ्ग आकर रूफी बोले—"तो वे बहुत अच्छा इन्साफ करते हैं !"

"जरूर !" जवाब मिला।

"यानी बहुत ही ऊँचे दर्जे का इन्साफ करते हैं वह ?"

"जी !"

"फिर तो वह "इन्साफ की तोप" हुए" रूफी ने कहा।

और मेरे लिये हँसी रोकना मुश्किल हो गया।

कितनी बार मेरी इच्छा हुई कि हुकूमत आपा से पूछूँ—'आखिर आपा चाहती क्या हैं ? हम क्या करें, जो आप के इस अजीब-गरीब गुस्से से बच सकें, जिसके हम हर समय शिकार हुआ करते हैं।' चौबीसों घंटे हाथ धोकर (बल्कि हाथ मुँह धोकर) वह मेरे पीछे पड़ी रहती थीं। रजिया की तरफ मैंने जरा भी आँख उठाई कि आ गईं।

इसमें मेरा क्या कसूर था। घर में एक अच्छी लड़की है, जो इतनी प्यारी लगती है, तो उसे क्यों न देखें ? अगर यही मरजी है तो हुकूमत आपा रजिया को किसी सन्दूक में क्यों नहीं बन्द कर देतीं। जिसमें कि कोई न देख सके। मेरे सम्बन्ध में तरह तरह की अलोचनाएँ करती रहती थीं। पहले तो मैं बहुत विरक्त हो जाता, किन्तु बाद में मुझे उनकी अलोचनाएँ स्टैंडर्ड से गिरी हुई मालूम होने लगीं और मैंने उनका ख्याल ही छोड़ दिया। उनकी अलोचनाएँ भी सुनिये—शौकीन लड़का है, रंगीन-मिजाज है रंग-बिरंगे कपड़े पहिनता है, खुशबू लगाता है! इसका सीना काफी चौड़ा है, लेकिन चेहरा कुछ दुबला है। इसका कोई विश्वास नहीं। (न कीजिये विश्वास, किस मसखरे ने खुशामद की है आप से ?)....हर वक्त बाजुओं-पुट्ठों को टटोलता रहता है (खूबसूरत पुट्ठे हैं, क्यों न टटोलें ?) बेजारी को बजारी कहता है। (यह आप के कानों की शरारत है।) हर वक्त अकड़ कर चलता है, (तो क्या कुबड़ा हो कर चला करूँ ?), रजिया के बारे में सोचता रहता है, उसे घूरता रहता है; और उसी की बातें करता है (रजिया अच्छी जो लगती है!) मुझे जरा भी अच्छा नहीं लगता, (मुझे भी आप, जरा भी अच्छी नहीं लगतीं)!

और हुकूमत आपा का तकिया-कलाम था यह वाक्य, 'मुझे पहले ही पता था' ('पहले' शब्द पर खूब जोर दे कर)। एक दिन मैंने रजिया के नाम की एक अँगूठी पहिन ली। हुकूमत आपा ने देख ली। बोलीं—"मुझे पहले ही से पता था!" एक दिन एक छोटे से नाटक में लगातार दो घंटे तक रजिया को देखता रहा और पार्ट गलत-सलत कर गया। हुकूमत आपा ने देख लिया। चिल्ला कर बोलीं—"मुझे पहले ही से पता था!" और रूफी बोले—"जब आप को हमेशा पहले ही से पता रहता है, तो आप हमें टोक क्यों नहीं देतीं ?"

रूफी अक्सर उन्हें आड़े हाथों लेते थे। एक दिन बेगम साहबा का

कोई गहना खो गया। हम सब ढूँढ़ रहे थे। एकाएक रूफी बोले—"आहा! हुकूमत, तुम्हें तो पता होगा कि जेवर कहाँ है?"

"मुझे क्या पता?" वह बोलीं।

"तुम्हें तो पहले ही से पता रहा करता है।"

फिर एक दिन एक अजीब-सा मामला हो गया था, जो हमारी समझ में बिलकुल न आता था। जज साहब भी पूरा जोर लगा चुके। रूफी बोले—"लो, हुकूमत, बता दो इसका हल।'

सब हुकूमत आपा के पीछे पड़ गये कि बताओ क्या है हल!

रूफी बोले—"भाइयो और बहनो, ऐसे मौकों पर आप हमेशा हुकूमत से सलाह लिया कीजिये। यह पहुंची हुई और अल्लाह वाली औरत हैं, और इन्हें हर चीज का पहले ही से पता रहता है।"

मगर यह सब होने पर भी आपा की वह वाक्य बोलने की आदत बनी रही।

रूफी मुझे रजिया के बारे में तरह-तरह की सलाहें दिया करते, किन्तु सदैव मुझे विरक्त कर देते। सब से पहले तो यह सवाल पैदा होता था कि आखिर मेरे पास क्या सबूत है कि रजिया को मैं अच्छा लगता हूँ। निस्सन्देह, कोई सबूत न था। इस लिये यह सिर्फ एकतरफा कार्रवाई बताई जाती थी। किसी को पसन्द करने से कुछ नहीं बनता जब तक वह भी पसंद न करे। अतएव उनके सिद्धांत के अनुसार मैं और रजिया बिलकुल अपरिचित थे।

वह हमेशा यही कहा करते—"भैया, दुनिया बहुत बड़ी है। कहीं और जाकर कोशिश करो। रजिया से भी अच्छी लड़कियाँ मिलेंगी।" और उनकी यह बात मुझे तनिक भी पसन्द न आती।

एक दिन बोले—"रजिया की निगाह कमजोर है, उसे दूर की चीजें, धुँधली दिखाई पड़ती हैं।"

"तुम्हें क्या पता ?"

"ईद का चाँद उसे नजर न आ सका, और इसीलिए उसने जज साहब की ऐनक से देखा था।"

"फिर ?"

"फिर क्या ? शादी तक तो वह क्या ऐनक लगाएगी, हाँ शादी के बाद फौरन लगा लेगी।"

गरज कि इसी तरह की उलटी-सीधी बातें वे सुना जाते।

उसी दिन शाम को रूफी और हुकूमत आपा की बहस छिड़ गई। विवाद का विषय था 'ऐनक'। न जाने कौन ऐनक के पक्ष में बोल रहा था और कौन विरोध में ! कमरे में एक गदर मची थी। मैं कुछ देर तक बाहर सुनता रहा, फिर अन्दर चला गया।

रूफी बोले—"तो गोया खाकसार जीत ही गया।"

हुकूमत आपा बोलीं—"ताज्जुब है कि पाँच घंटे की बहस के बाद भी आप कायल नहीं हुये।"

"पाँच घंटे की बहस के बाद ?" मैंने पूछा।

"हाँ, भाई, पाँच घंटे तक बहस होती रही। पौने पाँच घंटे हुकूम बोलीं, दस मिनट खामोशी रही, और पाँच मिनट मैं बोला।"

और हुकूमत आपा जल ही तो गईं, क्यों कि वह बोलती बहुत थीं। फिर हम सब खामोश हो गये।

इतने में 'टन-टन' करता हुआ आग बुझाने का इन्जन सड़क से गुजर गया। हुकूमत आपा बोलीं—"कहीं आग लगी है, शायद इस तरफ।"

इतने में दूसरा इञ्जन दूसरी ओर टन-टन करता हुआ चला गया। रूफी बोले—"ओह ! उधर भी आग लगी है !"

और आपा हुकूमत नाराज होकर चली गईं।

"यार, ये तो इस तरह गायब हो गईं जैसे गधा सींगों के नीचे से निकल जाय।"

"क्या मतलब ?"

"ऐसी गायब हुई जैसे गधे के सिर से सींग !"

कुछ देर यों ही बैठे रहे, फिर वे बोले—"अमरूद खाये जायँ ?"

मैंने सिर हिला कर 'हाँ' कहा।

बोले—"कोई नौकर आये, तो उसे बाग में भेजते हैं।"

इतने में जुम्मन (दानव) गुजरा। यह जुम्मन साहब एक अत्यन्त काले और कुरूप मोटे नौकर थे, जिन्हें बच्चे रात को देख कर बिलबिला उठते थे। इसलिये हमने उनकी ड्योटी दिन को लगा रक्खी थी। रात को उनकी छुट्टी थी।

रूफी ने आवाज दी—"जुम्मन !"

उसने सुना ही नहीं। रूफी ने फिर आवाज दी। उसने फिर नहीं सुना।

रूफी बोले—'अँगूठी घिसें इसके लिये ?'

मैं न समझ सका।

रूफी ने समझाया—"अरे भाई देव (दानव) ऐसे-वैसे थोड़े ही आ जायगा। कम से कम अँगूठी तो घिसनी पड़ेगी।"

थोड़ी देर बाद जुम्मन फिर गुजरा। हमने बुलाया, तो वह आ गया। रूफी बोले—"भाई, हमने अँगूठी घिसी थी। तुम आये ही नहीं ?

वह अच्छा-खासा मसखरा था, पर उस समय अत्यन्त उदास दिखाई पड़ रहा था। मालूम हुआ कि उसका तार आया है घर से, जिसमें उसे तुरन्त बुलाया गया है।

"पहले तो मैं खुद आ जाऊंगा, नहीं तो आप बुला लीजियेगा" वह बोला।

"हाँ हाँ, जरूर बुला लेंगे", मैंने विश्वास दिलाया।

"भला आप किस पते पर खत लिखेंगे ? मैं तो न जाने कहाँ-कहाँ की खाक छानता फिरूँगा।"

आप बताइये इसका क्या जवाब हो सकता था ?

रूफी बोले—"भाई, इसका तो यही इलाज है कि तुम अपनी मूँछ का एक बाल हमें दे जाओ ताकि जब हम तुम्हें बुलाना चाहें, तो बाल को धूप में रख दें। पहले आँधी आएगी, फिर पानी, और बाद में तुम उड़ते हुए आ जाओगे।"

वह खिल खिला कर हँस पड़ा, और बोला—"लाहौल बिला कूवत !"

जब हमने हँसी खत्म की, तो देखते हैं कि रूफी कमरे में नहीं थे। दूसरे दिन फिर इसी प्रकार की घटना घटी। मुझे कुछ सन्देह सा हो गया। मैंने रजिया से कहा। हमने एक योजना सोची और सुबह की चाय पर रजिया ने जान-बूझ कर लाहौल पढ़ दी, और बिजली की तरह रूफी कमरे से निकल गये। यद्यपि अभी चाय शुरू भी न हुई थी। मैंने सबको बता दिया कि चूँकि रूफी लाहौल से भागते हैं और पहले भी कई प्रमाण दिये जा चुके हैं, इसलिये आज से वह पूरे शैतान हुए और भविष्य में कोई उन्हें रूफी न कहे, सब शैतान कहें—यानी अगर सामने हिम्मत न पड़े, तो कम से कम पीछे तो कहा ही करें।

बस उसी दिन से रूफी शैतान मशहूर हो गए।

वह एक अत्यन्त मनोहर चाँदनी रात थी। पूर्ण चन्द्र वृक्षों के झुन्ड से उदय हुआ था। वायु के शीतल झोंकों से पौधे झूम रहे थे। मैं फौवारे के पास बैठा था। विचार-धारा को जहाँ कहीं से भी शुरू

करता था। एकाएक रजिया पर ही टूटती थी। एकाएक जो देखा तो रजिया प्लाट में बैठी चाँद को ताक रही थी। बिलकुल गुम-सुम बैठी थी।

यह पहली बार नहीं हो रहा था। उन दिनों बहुधा मैं उसे एकान्त में बैठे देखा करता था। आखिर, किसके संबंध में सोचा करती है यह ? मैं बेचैन हो गया। मुझसे न रहा गया। पहुंचा सीधा शैतान के कमरे में। वह सो गये थे। उन्हें जबरदस्ती जगाया।

"अरे !" मेरे मुँह से निकल गया—"तुम ऐनक लगा कर सोते हो ?"

"कल ऐनक लगाना भूल गया था। रात भर ख्वाब धुंधले-धुंधले दिखाई पड़े।"

मैं इतना बेचैन था कि मुझसे हँसा भी न गया। मैंने जल्दी से सब कुछ उन्हें बता दिया, और कहा—"भाई, रजिया को किसी का ख्याल जरूर है। लेकिन यह पता नहीं कि वह भाग्यवान है कौन। वैसे वह आज कल चौबीसों घंटे किसी के बारे में सोचती रहती है।"

देर तक हम इसी प्रकार की बातें करते रहे। अब प्रश्न यह था कि यह समस्या कैसे हल हो। और वैसे मैं स्वयं यह जानना चाहता था कि उसे मेरा कितना ख्याल है।

आखिर बड़े सोच-विचार के बाद शैतान बोले—"भाई, इसके लिये तो थोड़ी-सी हिम्मत करनी पड़ेगी।"

"वह क्या ?"

"अगर मेरी मानो, तो यार तुम खुदकुशी (आत्म-हत्या) कर लो।"

"खुदकुशी कर लूं ?" मैं चौंक पड़ा।

"असली नहीं, नकली खुद कुशी। वैसे हम यही जाहिर करेंगे, कि तुमने सचमुच खुदकुशी कर ली है। फिर देखेंगे कि रजिया क्या करती है।" मैंने साफ इन्कार कर दिया। बेगम साहबा को पता जरूर चल

जायगा, और अगर उन्होंने अम्मी को लिख दिया तो आफत आ जायगी। और वैसे खुदकुशी करना है भी फिजूल-सा।" शैतान बोले— "बेगम साहबा को तो हरगिज पता न चलने देंगे। इस एतवार को सारा कुनबा एक पार्टी में जा रहा है। रजिया का इम्तहान अगले हफ़्ते है, वह यहीं रहेगी। बस मैदान साफ पाकर तुम खुदकुशी कर लेना। सारा इन्तजाम मैं कर दूँगा।" बड़ी लंबी जिरह के बाद शैतान ने मुझे बहका लिया। अगले दो दिन हमने खूब रिहर्सल किये।

एतवार का दिन आया। रज़िया के सिवा सब पार्टी में चले गये। मुझे और शैतान (रूफ़ी) को भी बहुत कहा गया, किन्तु हमने एक क्रिकेट-मैच का बहाना कर दिया।

कई छोटी-मोटी बातों के बाद (जिनका उल्लेखजान-बूझ कर नहीं किया जा रहा है) मैंने आत्म-हत्या करली। एक सोफे पर लेट गया। मेरा एक हाथ नीचे लटक रहा था और फ़र्श पर अँगुलियों के नीचे एक खाली शीशी पड़ी थी, जिस पर 'ज़हर' लिखा था। शैतान ने मेरी ओर देखा।

बोले—"तैयार हो ?"

मैंने कहा—"हाँ।"

और उन्होंने एक अजीब-बेढगे स्वर में शोर-मचाना शुरू कर दिया, जिस पर मुझे हँसी आ गई। रज़िया भागी-भागी आई। मैंने तुरन्त आँखें बन्द कर लीं, परन्तु पलकों में-से सब-कुछ देखता रहा। शैतान ने तुरन्त उसे बताया कि मैंने आत्म हत्या कर ली है। रज़िया ने पहले शीशी उलट-पलट कर देखी, फिर मेरी नाड़ी देखी। भला मैं नाड़ी कैसे बन्द कर सकता था। बोली—"अरे। अभी थोड़ी सी जान बाकी है।" घबराई हुई साथ के कमरे में गई। मुझे उसकी आवाज़ साफ सुनाई दे रही थी। उसके स्वर में घबराहट थी, बेचैनी थी। वह डाक्टर साहब को फ़ोन कर रही थी, बल्कि विनय कर रही थी। उसके शब्द थे—"खुदा के लिए जल्दी कीजिये,

ज़िन्दगी और मौत का सवाल है।" और मेरा दिल आनन्द से खिल उठा। किसकी जिन्दगी और मौत का सवाल है? मेरी ज़िन्दगी या रजिया की जिन्दगी का? या शायद दोनों का मैंने शैतान को इशारा किया। वह मुस्कराए। रज़िया घबराई हुई आई और सिर दबाने लगी। अब जो उसकी अँगुलियाँ गरदन तक पहुँची हैं, तो मुझे बड़ी गुदगुदी लगी। पहले तो मैंने बहुत रोका: किन्तु जब न रह सका, तो खिलखिला कर हँस पड़ा और जल्दी से बैठ गया।

"हाय"! रजिया के मुँह से निकला।

"हाय।" शैतान ने चिंघाड़ कर कहा।

"देखा, डरा दिया न तुम्हें?" मैं बोला।

"सचमुच मैं तो डर गई थी।"

और मेरा मारे प्रसन्नता के बुरा हाल हो गया। तो इसके अर्थ ये हुए कि रज़िया को मेरा बहुत ख्याल था। उसने स्वयं जो कहा था कि जिन्दगी का सवाल है।

"तो क्या तुम सचमुच बहुत घबरा गई थीं?" मैंने बन कर पूछा।

"हाँ, कुछ घबरा ही गई थी।" वह मुस्करा रही थी।

"कुछ क्या? यों कहो कि पूरे तौर पर घबरा गई थी, बहुत बुरी तरह घबरा गई थी।"

"ख़ैर! इतनी तो नहीं घबराई। दर असल खुदकुशी अच्छी तरह नहीं की गई, इसमें कुछ भूलें हो गईं।"

"अब चाहे तुम कुछ भी कहो, एक बार बहुत ही परेशान हो गई थीं।"

"जैसे इसी जहर की शीशी को ले लीजिये," वह बोली—"माना कि इसमें कभी टिंक्चर आयोडिन आई थी। लेकिन दो साल से इसमें

बादाम का तेल पड़ा था और अगर सचमुच बादाम के तेल से खुदकुशी हो सकती है, तो यह अर्से से खाली पड़ी थी।"

"लेकिन तुमने फोन तो बड़ी घबराहट में किया था।" मैं खिसियाना हो चला था।

"अच्छा बताइये, फ़ोन है किस कमरे में ?"

"ड्राइङ्ग-रूम में"—मैंने कहा।

"और मैंने फोन किस कमरे में किया था ?

"साथ के कमरे में।"

"और साथ का कमरा है गोदाम। अब बताइये, यहाँ टेलीफोन कहाँ से आ गया ?"

और मुझे विश्वास हो गया कि मैं रजिया को बिलकुल अच्छा नहीं लगता, बल्कि शायद बुरा ही लगता होऊँ।

अगले दिन हम सब एक नर्तक का नाच देखने गये। बहुत प्रसिद्ध नर्तक था। असंख्य लोग देखने आये थे। पहले तो इधर उधर की चीजें होती रहीं, फिर नाच शुरू हुआ। आर्केस्ट्रा बजने लगा। पहले तो वह चुपचाप खड़ा रहा, फिर उसने एकदम से हवा में एक छलाँग लगाई और कला बाजियाँ-सी खानी शुरू कर दीं।

नन्ही हैरान होकर बोली—"भइया, यह पत्थर का बुत अब तो खूब हिल रहा है।"

अब जो उस भले आदमी ने हाथ-पाँव मारने शुरू किये हैं, तो नन्ही घबड़ा गई। बोली—"भैया, यह आदमी क्या कर रहा है ?"

हुकूमत आपा बोलीं—"नाच रहा है।"

नन्ही बोलीं—"इस तरह नाचा करते हैं क्या ?"

हुकूमत आपा बोलीं—"चुपचाप देखती रहो। इसे 'क्लासिकल' नाच कहते हैं।"

नन्ही मचल गई—"नहीं तो, यह आदमी तो कुछ और तमाशा कर रहा है।"

शैतान बोले—"नन्हो बात असल यह है कि इसने सुबह को 'क्रूशन साल्ट' पिया था, और अब इसे 'क्रूशन फीलिंग' हो रही है।"

शैतान ने लाल छींट का अँगरखा पहिन रक्खा था, और सब लोग उन्हें ही देखते थे। विश्राम की घंटी बजी और मैं तथा शैतान बाहर गये। छींट का अँगरखा सचमुच एक अजीब-सी चीज थी। जो देखता था ठहर जाता था। कुछ लोगों ने तो सचमुच हँसना शुरू कर दिया। शैतान रुक गये, और पीछे घूमकर बोले—"साहबान, आपकी हँसी सिर आँखों पर। लेकिन आप मेहरबानी करके जल्दी से हँस लीजिये, क्योंकि मुझे एक जरूरी काम है और आपका शौक पूरा किये बगैर मैं यहाँ से नहीं जा सकता।"

वे बेचारे शरमा गये।

"तो आप हँस चुके क्या?" शैतान बोले।

वे चुप रहे।

"क्या मैं जा सकता हूँ?"

उनमें से एक ने सिर हिला दिया।

हम जब वापस हुए, तो अभी अच्छा-खासा दिन बाकी था। बाग से गुजरते हुए शैतान रुक गये। माली को बुलाया और मिट्टी का एक ढेर दिखाकर बोले—"यह ढेर यहाँ नहीं होना चाहिए।"

"सरकार, यह बिना कई आदमियों के बाहर नहीं फेंका जा सकता।"

"वाह! मामूली-सा काम है। एक बड़ा-सा गड्ढा खोद लो और उसमें यह मिट्टी दबा दो।"

बात माली की समझ में आ गई। वह काम में लग गया। कोई

घन्टे भर के बाद वह फिर हमारे पास आया, और बोला—"सरकार, वह मिट्टी तो भर दी गई। पर जो नये गड्ढे की मिट्टी है, उसका क्या किया जाय।

"अरे भाई, यह भी कोई पूछने की बात है ? एक और गड्ढा खोद कर उसमें दाब दो।" शैतान ने कहा।

माली फिर चला गया। कुछ देर बाद हाँफता हुआ आया, और बोला—"हुजूर, वह मिट्टी तो दबा दी गई। पर अब नये गड्ढे की मिट्टी ? वह कहाँ फेंकी जाय ?"

"हम नहीं जानते।" शैतान झल्ला कर बोले—"मामूली-सी बात है। एक और गड्ढा खोद लो।"

और माली बेचारा सिर खुजाता हुआ चला गया। इतने में जज साहब आ गये। और वहीं बैठ गये। हम खेलों के सम्बन्ध में बातें करने लगे।

"तुम्हें कौन से खेल पसन्द हैं ?" जज साहब बोले।

"कबड्डी और पोलो।"

"कोई खास अच्छे खेल तो हैं नहीं," वह बोले।

"आप को कौन-सा खेल पसन्द है ?" शैतान ने पूछा।

"उसे खेल तो नहीं कहा जा सकता। मुझे घुड़दौड़ बहुत पसन्द है। जब मैं योरोप में था। तो बड़े शौक से घुड़दौड़ देखा करता था।"

"माफ कीजिये, मुझे घुड़दौड़ बिलकुल पसन्द नहीं" शैतान बोले।

"यह क्यों"

"देखिये, यह तो सब जानते हैं कि कुछ घोड़े कुछ घोड़ों से तेज दौड़ते हैं; और यह भी लाजिमी बात है कि अगर बहुत घोड़े दौड़ेंगे, तो कुछ आगे निकल जायेंगे और कुछ पीछे रह जायेंगे, और आखिर में

एक घोड़ा सब से आगे निकल जायगा। भला यह जानने की क्या जरूरत है कि कौन-सा घोड़ा आगे निकलता है। या तो यह हो कि कोई घोड़ा अपना दोस्त हो, तो आदमी उसे देखने चला भी जाय; नहीं तो सब घोड़े एक-से होते हैं।"

जज साहब से कोई जवाब न बन पड़ा। कुछ देर सोचते रहे फिर मुस्करा कर बोले "लाहौल विलाकुवत!"

मुझे और शैतान को एक बहुत बड़ी दावत में बुलाया गया। बड़े-बड़े लोग आये हुए थे। जज साहब और बेगम साहब न जा सके; इस लिये हमें पूरी आज़ादी मिल गई और शैतान उतर आये उलटी-सीधी हरकतों पर। एक खतरनाक-से बुजुर्ग हमें बहुत बुरी तरह देख रहे थे। कुछ मौलाना-से मालूम होते थे। न जाने क्यों बेतरह आँखें फाड़-फाड़ कर हमें घूर रहे थे। अन्त में जब उनसे न रहा गया, तो शैतान से बोले—" साहबजादे मैं देख रहा हूँ कि तुम पूरे आधे घन्टे से उन लड़कियों को घूर रहे हो। यह बहुत बुरी बात है।"

शैतान बोले—"किबला! घूरना दो किस्म का होता है—घूरना 'बिल तहक़ीक' (खोज के लिये) और घूरना 'बिलतफरीह' (मनोरंजन-के लिये)। यह खाकसार इस वक्त पहली बात कर रहा है। क्यों कि मुझे अभी किसी ने बताया है कि उन खातून (महिला) की नाक तिर्छी है और एक आँख बड़ी है और एक छोटी।"

मौलाना कुछ कहने ही वाले थे कि शैतान जल्दी से बोले—"और आप उन्हें क्यों नहीं मना करते, जो तफरीह के लिये घूरते हैं। ऐसे यहाँ बेशुमार लोग हैं। मिसाल के तौर पर उन साहब को (इशारा करके) ही ले लीजिये, जो 'ज़ेरे मूंछ' (मूंछ के नीचे) मुस्करा रहे हैं।"

"ज़ेरे मूंछ मुस्करा रहे हैं! क्या मतलब हुआ?"

"लोग 'जेरे लब' (होठों के नीचे) मुस्कराया करते हैं, लेकिन

इनकी मूंछे इतनी घनी और खूंखवार हैं कि हम उस मुस्कराहट को महज ज़ोरे मूंछ मुस्कराहट ही कह सकते हैं। शायद यह साहब बड़े फ़ख्र (गर्व) से कहते होंगे कि—'मूंछों के साए में हम पल कर जवाँ हुए हैं'।"

बात शुरू कहाँ से हुई थी और जा पहुँची कहाँ ! मौलाना खिसियाने होकर बोले—"खैर ! कुछ भी हो, बहरहाल इंसान को परहेजगार होना चाहिये।"

"मैं परहेजगार हूँ।" शैतान बोले।

"तुम और परहेजगार !.. खूब !"

"जी नहीं, मुझे फ़ख्र है कि खुदा के फजल से मैं परहेजगार हूँ और खुदा ने चाहा तो हमेशा रहूँगा। परहेजगार वह आदमी है जो खटाई, चिकनी और गर्म चीजों से परहेज करे, और यह मैं करता हूँ।"

इतने में कुछ मेहमान आ गये और उनसे हमारा परिचय कराया गया। वह मौलाना इधर-उधर हो गये। जहां चारों तरफ शोर-गुल मचा हुआ था वहाँ हमने एक साहब को देखा जो चुपचाप बैठे थे, जैसे तपस्या करने को बैठे हों। शैतान झट वहाँ पहुँचे, और उनसे बोले—"अगर जनाब बुरा न मानें तो एक बात पूछूँ ?"

"कहिये।"

"आप चुप क्यों हैं ?"

"बस यों ही। ?"

"तो साहब, अगर आप अक्लमन्द हैं, तो निहायत बेवकूफी कर रहे हैं; और अगर बेवकूफ हैं, तो निहायत अक्लमन्दी कर रहे हैं।"

और वह महाशय सोचने बैठ गये कि उसका मतलब क्या हुआ। इधर-उधर ढूंढ़ने पर वह मौलाना फिर हमें मिल गये, और पहले की तरह फिर बड़े गुस्से से हमें घूरने लगे। शैतान चाहते थे कि उनसे बातें

हों, किन्तु कोई बहाना नहीं मिलता था । इतने में कुछ छोटे-छोटे कद की महिलायें दाखिल हुईं । बिलकुल छोटी-छोटी थीं ।

शैतान जल्दी से बोले—"देखिये जनाब, ये 'पेंगुइन सीरीज' की औरतें हैं ।" और मौलाना ने बड़े ही खतरनाक ढंग से एक 'हूँ' की ।

उसी समय एक अत्यंत दुबले साहब एक अत्यंत मोटे महाशय के साथ दाखिल हुये । दोनों में इतना अधिक अन्तर था कि दोनों एक-दूसरे को बुरी तरह प्रकट कर रहे थे ।

शैतान उन बुजुर्ग के पास सरक कर बोले—"वह देखिये, जनाब, उनमें से एक 'इस्तेमाल से पहले' हैं, और दूसरे 'इस्तेमाल के बाद' हैं ।" वह शायद समझ न सके ।

शैतान बोले—"आपने ताकत बढ़ाने वाली दवाइयों के इश्तहार तो देखें होंगे । वहाँ 'इस्तेमाल से पहले' और 'इस्तेमाल के बाद' भी देखा होगा । वही चीज आप यहाँ देख लीजिये ।"

इस बार तो उन्होंने बहुत ही बुरा मुंह बनाया ।

एक दरवाजा खुला, और एक अत्यन्त छोटे कद के आदमी और एक बहुत ही लम्बे महाशय दाखिल हुए । उनके कद में कोई तीन-चार फीट का फर्क होगा । मौलाना झल्ला कर बोले—"इन पर तुमने कुछ नहीं कहा ? कह दो इनके बारे में भी—" शैतान बोले—"अजी क्या खाक कहूँ ? साफ तो है कि गुल्ली-डण्डा आ रहा है ।" इतने में खाना शुरू हो गया । हम दोनों जान-बूझ कर उन साहब के पास बैठे । शायद उन्हें मछली बहुत पसन्द थी, अतएव उन्होंने कई बार मछली मंगवाई । अब जो वे मछली मँगवाते हैं, तो नौकर कई इधर-उधर की चीजें तो दे जाता है किन्तु मछली नहीं लाता । स्पष्ट था कि मछली खत्म हो गई है । किन्तु मौलाना बार-बार यही कहे जाते थे कि मछली लाओ । नौकर बेचारा साफ जवाब भी नहीं दे सकता था और हाँ भी कह जाता था । आखिर उनसे न रहा गया । बोले—"यह कमबख्त मछली क्यों नहीं

लाता ? और अब तो गायब ही हो गया। न जाने कहाँ मर गया ?"
"मछलियाँ पकड़ने गया है !" शैतान बोले, और एक बहुत जोरों का ठहाका पड़ा। दावत के बीच में ही बाहर जोरों से वर्षा होने लगी थी, अतएव खाने के बाद यह निश्चय हुआ कि वर्षा के रुकने का इन्तजार किया जाय और उतनी देर 'काफी' और चुटकुलों के दौर चलें।

सब लोग चुप हो गए। और एक साहब ने (जो तुरन्त ही सभापति बना दिये गये थे) किसी एक का नाम लिया और कहा—"आप अपने जीवन की कोई सच्ची घटना सुनाइये।"

उन्होंने सुना दिया। चौथा नम्बर शैतान का था। चूँकि पहले बहुत ही करुण कहानियाँ सुनाई गई थी, इस लिये सब लोग सहमे बैठे थे। शैतान बोले—"बहिनों और भाइयो ! यह घटना मेरे जीवन में मील के पत्थर का काम देती है। इसने मेरे जीवन पर सब से अधिक प्रभाव डाला है।"

और सब चुप हो कर बड़े ध्यान से सुनने लगे।

"यह उन दिनों की बात है जब मैं गदका खेला करता था। वैसे अब भी मैं अपने कालेज का सब से अच्छा गदकाबाज हूँ, पर उन दिनों बहुत ही अच्छा गदका खेलता था। एक दिन हम सब कालेज के बरामदे में खड़े थे। मूसलाधार वर्षा हो रही थी। हम इन्तजार कर रहे थे कि कब पानी बंद हो और बाहर निकलें। इतने में हमने देखा कि एक जुगनू उड़ा जा रहा है।

"दिन में जुगनू ?" वही मौलाना बोले।

"जी हाँ, या जुगनू की किस्म का कोई और पक्षी होगा।"

"जुगनू पक्षी है क्या ?" मौलाना बोले।

"अजी किबला, जो चीज उड़ती है वह पक्षी है। हाँ तो, साहब,

सब लड़कों का जी ललचाया कि उसे पकड़ें। मगर बारिश की वजह से किसी की हिम्मत न पड़ी। आखिर मैं बाहर जाने लगा। लड़कों ने मना किया कि भीग जाओगे। मैंने एक न सुनी और बाहर निकल आया। गदके का माहिर (विशेषज्ञ) था। एक बूँद आई, उसे गरदन के एक झटके से बचा गया; दूसरी आई, उसे एक ओर हट के बचाया तीसरी आई उस को हिला कर बचाया। गरज इसी तरह मुड़ता-तुड़ता तरह-तरह के पैतरे बदलता हुआ मैं ऐसी मूसलाधार बारिश में उस जुगनू को साफ पकड़ लाया। और जब बरामदे में लौट कर आया, तो मेरे कपड़ों पर एक बूँद भी न थी।"

अब जो ठहाके लगे हैं, तो वातावरण की गम्भीरता एक दम खत्म हो गई। सभापति महोदय उठकर बोले· "साहब! हम आप से एक गम्भीर घटना का वर्णन सुनना चाहते हैं। और आप को दस मिनट देते हैं। इस दरमियान में दूसरे सज्जन एक चुटकुला सुनायेंगे।"

अब यह वही महाशय थे, जो इतनी दे र से गुम सुम बैठे थे। बेचारे घबरा गए। सोचा कि यह क्या आफत आई। बहुत चाहा कि पीछा छुड़ा लें, किन्तु वहाँ कौन सुनता था। आखिर तङ्ग आकर बोले, "मुझे कोई नया चुटकुला तो याद नहीं। हाँ, एक पुराना चुटकुला याद है, जो मैंने पहले दर्जे की किताब में पढ़ा था। वह यह है कि एक जगह चार बेवकूफ बैठे थे। एक बोला कि अगर दरिया में आग लग जाय, तो मछलियाँ किधर जायें? दूसरा बोला—पेड़ों पर चढ़ जायें!"

"अरे साहब, वह तो तीन थे। ये चौथा बेवकूफ आप कहाँ से ले आए?" एक ओर से आवाज आई।

चौथे ये खुद थे,"—शैतान बोले। और लोग चीखें मार-मार कर हँसने लगे!

अब सभापति महोदय ने शैतान से कहा कि वह एक गम्भीर घटना सुनाएँ।

शैतान बोले—'आज से कुछ साल पहले की बात है। इसी कमरे का जिक्र है। मैं यहाँ जाकिर साहब (मेजबान के लड़के) के साथ आया था। यही कोई रात के दस बजे थे। बिलकुल ऐसी ही बारिश हो रही थी। मैं घर न जा सका, और मुझे इसी कमरे में सोना पड़ा। (इशारा करके) मेरा बिस्तर यहाँ बिछा हुआ था। मैं बिस्तर पर लेट गया। मेरा सिगरेट खतम हो गया, और मैंने उसे बेखबरी की हालत में एक तरफ फेंक दिया। फिर अचानक मुझे खयाल आया कि नीचे कालीन बिछा हुआ है, जलता सिगरेट फेंका था। उठ कर जो देखता हूँ, तो पलंग के नीचे से सूखा हुआ एक हाथ निकला और सिगरेट को उठा कर फिर पलंग के नीचे गायब हो गया।"

शैतान कुछ रुके। देखा, लोग एक दम सहम गए हैं।

"और साहबान! मैं विश्वास के साथ कहता हूँ कि वह हाथ किसी जीवित मनुष्य का नहीं था, बिलकुल सूखा हुआ और पीला हाथ था। खैर, मैंने कुरान की आयतें पढ़ीं। सोचा कि शायद मुझे वहम हुआ होगा, और कुछ गुन-गुनाने लगा। सोचा कि अब सो जाना चाहिये, इस लिये मैंने यों ही कह दिया—"अरे यह बिजली जल रही है, इसे बुझाना तो भूल ही गया।" यह कह कर मैं उठने लगा था कि 'टिक' की आवाज आई, और किसी ने बिजली बुझा दी। अब जो मैं इस कमरे से हड़बड़ाकर भागा हूँ, तो पीछे घूम कर नहीं देखा।"

"फिर क्या हुआ?" एक ओर से आवाज आई।

"फिर हमने इस मकान का कोना-कोना तलाश किया। पलंग के नीचे भी देखा, पर कुछ न मिला। सो इस कमरे में जरूर भूत-प्रेत हैं।.... और...अरे!...यह मुर्गी कहाँ से आ गई?" शैतान ने एक अंधेरे कोने की ओर इशारा करके कहा। सब लोग उठ खड़े हुये।

"अरे!" शैतान ने उछलते-कूदते हुए कहा—"गजब खुदा का! यह गुदगुदा कौन रहा है?" और एकदम उछलने लगे।

"यह मेरे कानों में कौन चीख रहा है ?" शैतान चिल्ला कर बोले—"अरे यह परदे के पीछे से ऊंट क्यों झाँक रहा है ?"

और कमरे में हलचल मच गई। शैतान ने मुझे इशारा किया, और मैंने चुपके से बिजली बुझा दी। अब जो धमा-चौकड़ी मची है, तो न पूछिये। सब के सब कमरे के बाहर निकल आये और बाहर बरामदे में खड़े हो गये।

थोड़ी देर के बाद लोग अपने-अपने घरों को जा रहे थे। हम पहली मञ्जिल के बरामदे में खड़े थे। वह मौलाना भी साथ थे, और नीचे सड़क पर झांक रहे थे। शायद उन्हें किसी का इन्तजार था। इतने में एक टांगा गुजरा। मौलाना चिल्ला कर बोले—"भाई, ठहरना! तुम्हारी टांगी खाला है क्या ?"

उधर टांगे वाले ने सुना ही नहीं। मुझे बड़ी हँसी आई। लेकिन रूफी बड़ी गंभीरता से बोले—"किबला, अगर आप यों फ़रमाते तो बेहतर था कि तुम्हारी खाला टांगी है क्या ?"

मौलाना झेंप गए। उनके मुंह से गलती से निकल गया था। वैसे वे भयभीत अवश्य थे।

टांगे का इन्तजार होता रहा। शैतान मौलाना से बोले—"क्यों, साहब, आपकी 'बजी' में क्या 'घड़ा' है ?"

"बारह बजने वाले हैं" शैतान का व्यंग्य समझकर भी मौलाना धीरे से बोले। "मेरे खयाल में अब चलना चाहिये। सड़क पर टांगा जरुर मिल जायगा।" और हम तीनों नीचे उतरने लगे।

"किबला! इन सीढ़ियों के बारे में भी एक पुर-असरार (रहस्यपूर्ण) किस्सा मशहूर है, जिसे मैं अंधेरे में सुनाना नहीं चाहता।" और मौलाना और भी धीरे-धीरे उतरने लगे।

"अजी, आप तो 'हज्जे करके उतर रहे हैं। जरा जल्दी कीजिये।"

शैतान बोले। "वैसे ही...ज़रा ..ये चिकनी सीढ़ियाँ हैं...कहीं...! —वह बोले।

"जी हाँ. ठीक है। सीढ़ियां उतरते-चढ़ते वक्त जरूर ख्याल रखना चाहिये, क्योंकि परसों ही की बात है कि मैं जल्दी-जल्दी जीने से उतर रहा था। एकाएक जो एक 'फिसली' से 'सीढ़ा' तो दूर तक सीढ़ता हुआ चला गया।" मौलाना ने एक बार गुस्से से घूर कर देखा जरूर, पर कुछ बोले नहीं।

शैतान को रुपयों की सख्त जरूरत हुई। मेरे पास आये। महीने की अंतिम तारीखें थीं। मैं अपना जेब-खर्च और स्कालरशिप आदि सब खर्च कर चुका था। सोच-विचार के बाद निश्चय हुआ कि हुकूमत आपा सदैव अमीर रहती हैं, उनसे उधार लिया जाय।

शैतान हुकूमत आपा के पास गये, और बोले—"ज़रा बाग में चलिये। आप से कुछ कहना है।" उन्हें ताज्जुब हुआ। बाग में पहुँचे। वहां शैतान ने चुटकी बजाई, और बोले "अरे, वह तो वहां कमरे में कहना था।" अब फिर कमरे में पहुँचे। वहां कुछ देर सोचते रहे, फिर बोले—"मैं भी कैसा खब्ती हूँ। दर असल वह बात सिर्फ छत पर कहीं जा सकती है!" मैं यह सारा तमाशा देख रहा था। ज़रा-सी बहस के बाद दोनों छत पर पहुँचे। वहां जाकर शैतान ने इल्तजा की कि यदि वह बात बाग में सुनाई जाय तो अच्छा रहेगा। और हुकूमत आपा मचल गईं। खैर बाग में पहुंचे। वे बोलीं—'अब मैं यहां से हरगिज़ न हिलूंगी।" शैतान बोले—"तुम इन दिनों मुझे बहुत अच्छी लग रही हो।" और हुकूमत आपा तुरंत बोलीं—"रुपये दर असल मेरे पास भी नहीं हैं।"

शैतान बोले—"यकीन करो कि तुम बहुत अच्छी लग रही हो।"

वे बोलीं—"यकीन कीजिये कि मैं इस वक्त कुछ भी कर्ज नहीं दे सकती।"

शैतान ने जल्दी से कहा—"कर्ज कौन, मसखरा माँगता है ? मैं तो सिर्फ यह कहना चाहता था कि तुम बहुत अच्छी लग रही हो परसों से।"

इसी तरह देर तक उलटी सीधी हाँकने के बाद हुकूमत आपा को विश्वास दिलाया कि वास्तव में सच कहा जा रहा है। वह शर्मा गईं, और धीरे से बोलीं—"क्या अच्छा लग रहा है आखिर ?"

"खुदा जाने क्या अच्छा लग रहा है। लेकिन परसों से मेरी हालत खराब है परसों से···।"

"परसों क्या बात थी ऐसी ?" उन्होंने और भी शर्मा कर कहा।
"परसों जब तुम अपने कमरे में बैठी बिसूर रही थीं, तो बस उस वक्त तुम मुझे बहुत ही अच्छी लगीं। मैं इसी इन्तजार में रहा कि तुम रोती कब हो। लेकिन जब एक आँसू भी न निकला, तो मेरी आरजूओं का खून हो गया। काश कि तुम जोर-जोर से रोतीं ! खैर ! इस बार जब कभी रोने का प्रोग्राम हो, तो मुझे जरूर बुला लेना।"

अब तक हमें पता ही न चल सका कि रजिया किसके बारे में हर वक्त सोचती रहती है। वैसे हमें यह विश्वास अवश्य था कि उसे किसी न किसी का ख्याल जरूर रहता है। चौबीस घन्टे शैतान की और मेरी यही बहस रहती। वह मुझसे अजीब-अजीब हरकतें करवाते। एक दिन बोले—"रजिया को मूँछें पसन्द हैं, तुम रख लो !" मैंने रख लीं। फिर बोले—"उसे बराबर मूँछें पसन्द नहीं। एक तरफ की बड़ी हो, दूसरी तरफ की छोटी।" मैंने कुछ दिन अपनी हँसी उड़वाई। फिर बोले—"उसे मूँछें पसन्द ही नहीं।" अतः साफ करा दी गईं।

एक दिन मुझे रजिया को उसकी किसी सहेली के यहाँ छोड़ने जाना था। शैतान बोले—"खूब अच्छे से कपड़े पहिन कर जाना। रजिया के साथ चलोगे, शान रहेगी।"

मैंने पूछा—"रजिया को किस तरह का लिबास पसन्द है ?" शैतान बोले—"तुम इसी वक्त जा कर लाल पतलून पहिन लो। हरे

रङ्ग का कोट, पीले रङ्ग की टाई, ब्राउन जूते, नीली कमीज और फाख्तई रङ्ग का रुमाल। जाओ अभी पहिन कर आ जाओ।"

और जब मैं और रजिया साथ-साथ चल रहे थे, तो जो भी हमें मिलता वह न केवल आँखें फाड़-फाड़ कर मुझे देखता, बल्कि देर तक घूम-घूम कर देखता जाता!

आखिर रजिया बोली—"यह आप को सूझी क्या थी?"

"क्या?"

"यह लिबास कैसा पहिन आये हैं आप? बिलकुल 'टेकनीकलर' बने हुए हैं।"

एक दिन अचानक शैतान ने एक लाजवाब योजना सोची कि एक नाटक किया जाय, जो मेरे नाम से मशहूर किया जाय और इन्तजाम सारा शैतान करेंगे। योजना सुन्दर थी। रजिया पर इसके द्वारा थोड़ा-सा रङ्ग जमाया जा सकता था।

पूरे एक महीने की तैयारियों के बाद हमने एक रोमैन्टिक नाटक तैयार कर लिया। अब नाटक के नाम का सवाल आया, तो शैतान बोले—"इसका नाम 'बेगुनाह ऊँट' ठीक रहेगा।"

"लेकिन इसका प्लाट तो रोमैन्टिक है, और इसमें ऊंट कहीं भी नहीं आता।"

"आज कल लोग ऐसी सूझ पर तो जान ही देते हैं। सबसे अच्छा नाम तो यही है। और भी नाम हैं जैसे 'मुफलिस आशिक' या 'महामूर्ख' या……।"

और मैं तुरन्त मान गया।

"अच्छा अब इसका 'उर्फ' जरूरी होना चाहिये। उर्फ के बगैर' तो कुछ हो ही नहीं सकता। अभी अभी मैंने एक बहुत ही अच्छी रोमैन्टिक कहानियों की किताब पढ़ी है, जिसका नाम था 'अमरूद और सितारे

उर्फ 'बिल्लियाँ और कहकशाँ' । इस उर्फ ने मुझ पर इतना असर किया मेरे आँसू निकल आए।"

"तो फिर रख लो उर्फ भी। क्या रक्खोगे ?"

"मेरे ख्याल में तो ऐसे ठीक रहेगा—'बेगुनाह ऊँट' उर्फ 'आ बैल मार'।"

"लेकिन इसमें बैल भी कहीं नहीं आता।"

"फिर वही बेवकूफों वाली बातें कीं तुमने"—शैतान ने कहा। और मैं मान गया। मुझे शाहजादा बनाया गया। शैतान ने अपना असली पार्ट स्वीकार कर लिया यानी वह शैतान का पार्ट करते थे। एक साहब 'परियों की शाहजादी' बनाये गये, और उनकी हजामत इस बुरी तरह बनाई गई कि चेहरा खुरच दिया गया। शहर के सभी सम्मानित व्यक्ति आमंत्रित किये गये। सबसे बड़ी बात यह थी कि सर कमर भी पधारे थे, जिस पर हमें गर्व था। क्लब में नाटक खेलने का प्रबंध किया गया। एक बहुत बड़ी भीड़ के सामने परदा उठा।

मैं एक अँधेरे बाग में कूदा और वहाँ परियों की शाहजादी पर आशिक हुआ। इतने में चन्द्रोदय होना था और मुझे एक दर्द—भरा सम्वाद बोलना था। अब मैं आशिक होकर चाँद का इन्तजार कर रहा हूँ। उधर चाँद है कि निकलता ही नहीं। अन्त में तङ्ग आकर मैंने बिना चन्द्रोदय के ही सम्वाद बोलना शुरू कर दिया। इतने में एकाएक चाँद उदय हुआ, और बड़ी तेजी से आसमान (मंच) को पार करता हुआ दूसरी ओर चला गया। एक ठहाका पड़ा। किन्तु मैंने अपना सम्वाद जारी रक्खा। अब चुपके से चाँद फिर निकल आया, और मैंने एक घुटने के बल झुक कर दाहिना हाथ बढ़ा कर कुछ कहना शुरू किया ही था कि देखता क्या हूँ कि चाँद दूसरी ओर पहुँच चुका है। अब जो उस ओर मुँह करता हूँ तो चाँद इधर आ गया। सारांश यह कि मेरी और चाँद की खूब आँख मिचौली हुई, और खूब

ठहाके लगे। इसी तरह एक अत्यन्त सुन्दर दृश्य पर एक दम सारे बिजली के लट्टू बुझ गए, और जब दोबारा जले तो सारा मजा किर-किरा हो चुका था। अब जो परदे की मुसीबत शुरू हुई है, तो मैं झुँझला उठा। जरा अच्छा-सा दृश्य आया और एक दम से पर्दा गिर गया, और लोगों ने तालियां बजानी शुरू कर दीं। खैर, बड़ी कठिनाइयों के बाद ड्राप सीन हुआ। शैतान साहब स्टेज पर आए, और कहने लगे—"महिलाओं और सज्जनों! मैं नाटक के लेखक (मेरा नाम लेकर) के आग्रह करने पर उनकी ओर से सर कक्कर से प्रार्थना करता हूँ कि वे स्टेज पर तशरीफ लाकर दर्शकों को एक ठुमरी या दादरा सुनाएँ। हमारा तबलची बहुत ही होशियार है। सर कक्कर चाहे जैसी रागिनी छेड़ दें, वह साथ चल निकलेगा।"

उपस्थित जन एकदम चुप रह गये, और सर कक्कर अपने कुटुम्ब के सहित उठकर तुरन्त चले गए। इतना अवकाश ही न था कि मैं शैतान से कुछ कहता।

परदा उठा। थोड़ी ही देर में शैतान का पार्ट शुरू होना था। अब जो शैतान को ढूँढ़ते हैं, तो वह गायब। बड़ी परेशानी हुई। निश्चय हुआ कि जल्दी से एक और शैतान बनाया जाय।

दृश्य था कि परियों की शहजादी बाग में टहल रही है और उसे एक ठहाका सुनाई पड़ता है। वह चौंक कर कहती है—"मैं समझती हूँ कि तू शैतान है, और मुझे डराना चाहता है, लेकिन मैं तुझ पर धिक्कार भेजती हूँ। ओ नालायक शैतान! मूर्ख कहीं के, बेवकूफ!" यह कह कर वह एक गाना गाती है। ठहाका नकली शैतान से लगवाया गया। नायिका ने अपना सम्वाद बोल दिया। एकाएक एक धमाका हुआ। स्टेज की छत से एक लपट सी निकली, और कोई विचित्र चीज कूदी जिसका रंग हरा था। आँखों की जगह दो चिंगारियां दहक रही थीं, दो चमकीले सींग थे, नुकीले कान ऊपर को उठे हुए थे। बड़ी

ही भयानक आकृति थी। नायिका ने एक हृदय-विदारक चीख मारी और खड़ी की खड़ी रह गईं। हम सब हैरान रह गये। अब जो गौर से देखते हैं तो ये असली शैतान (रूफी) थे, जो अपना मेकअप स्वयं करके आए थे।

नायिका इतनी डरी हुई थी कि उसने एक विचित्र बेढंगे स्वर में गाना शुरू किया "रस से भरे तोरे नैन।" उसका राग बिलकुल अँगरेज़ी मालूम पड़ता था। शैतान ने अत्यन्त भयनाक स्वर में हँसना शुरू कर दिया, और थियेटर हाल के सारे बच्चे चिल्ला-चिल्ला कर रोने लगे। जो-जो बच्चा रोता था, उसे घर भेज दिया जाता था।

अब जो शैतान ने डरावना अभिनय शुरू किया है, तो दर्शकों पर एक सन्नाटा छा गया। एक-एक करके सभी स्त्रियाँ चली गईं।

सारांश यह है कि शैतान ने जी खोल कर धमा चौकड़ी मचाई। अन्त में तो यहाँ तक नौबत पहुँच गई कि शैतान ने अपने मन से सम्वाद बोलना तथा प्रत्येक दृश्य में मंच पर आना शुरू कर दिया, चाहे उनका पार्ट हो या न हो। एक दृश्य आया, जहाँ शैतान को मेरे एक मन्त्र पढ़ने पर मर जाना चाहिये था। मैंने कई बार मन्त्र पढ़ा, किन्तु शैतान टस से मस न हुए। मैंने चुपके से कहा—"अब मर भी जाओ।" प्राम्पटर ने भी कहा—"मर भी जाइये, रूफी साहब!" मंच के पीछे से आवाज़ें आईं—"मर भी जाइये, जनाब।" लेकिन वह फिर भी न मरे। अन्त में मैंने गुस्से से कहा— अब मरते भी हो या नहीं?"

शैतान जोर से बोले—"नहीं मरते!" और दर्शक हँसने लगे।

"अच्छा, तो यह बात है! उठू फिर?" मैं सचमुच उठने ही लगा था, फिर खयाल आया कि यह शाहजादों की शान के खिलाफ है कि मामूली से शैतान पर हाथ उठाएँ। अतएव मैंने ताली बजाई। कुछ सिपाही आ गए। मैंने कहा—"ले जाओ, इस शैतान को पकड़ कर मार डालो।"

"जहन्नुम में भेज दो !" दर्शकों में से किसी ने नारा लगाया।

"हाँ, कत्ल करके जहन्नुम में भेज दो।"

"नहीं जाते हम।"—शैतान ने अपने लम्बे लम्बे नुकीले नाखून दिखाते कहा।

"अच्छा तो फिर लाहौल विलाकूवत !" मैंने जोर कहा। और शैतान एकदम तड़पे और छलाँग मार कर न जाने कहाँ गायब हो गए।

अब अंतिम दृश्य आया, जिसमें एक महल में दावत थी। शैतान के मरने पर खुशी मनाई जा रही थी। दावत में फल अधिक थे। असली नाटक में सेबों का जिक्र था, किन्तु शैतान बोले कि टमाटर का रङ्ग अच्छा होता है। अतएव टमाटर मँगाए गये थे। यहाँ शैतान ने एक और सलाह दी थी कि जब अभिनेता टमाटर खाएँगे, दर्शकों के मुँह में पानी भर आना आवश्यक है। क्या ही अच्छा हो यदि कुछ टमाटर दर्शकों की ओर फेंक दिये जाएँ। अतएव टमाटर फेंके गये, तो कुछ दर्शकों के लगे। आवाज आई—"और फेंकिये।" अब जो टमाटर फेंके गये, तो कुछ दर्शकों के लगे। उन्होंने टमाटर अभिनेताओं को मार दिये। हमें भी क्रोध आ गया। इधर दर्शकों ने एक दूसरे को भी निशाना बनाना शुरू कर दिया। अब वह 'टमाटर बाजी' शुरू हुई कि जरा-सी देर में इतने बड़े समूह की जगह खाली कुरसिया और टमाटर पड़े थे।

इसके बाद मुझ पर चारों ओर से बौछार हुई। सब कुछ मेरे सिर थोप दिया गया। शैतान साफ बच गये। हुकूमत आपा ने मुझसे कह दिया कि मैं कुछ बेवकूफ़-सा लड़का हूँ, नहीं तो इस तरह की हरकतें कभी भी न करता। और भी कुछ अलोचना कर दी, और यह भी कहा कि नाटक के बीच में मैं रजिया को घूरता रहा था। रजिया के बारे में पता न चल सका कि वह कितनी नाराज़ हुई।

साराँश यह कि मैं कुछ दिनों बहुत ही परेशान रहा। हुकूमत आपा की वर्ष-गाँठ के अवसर पर एक दावत हुई जिसमें अधिकतर उनकी

सहेलियाँ थीं। बड़े जान-बूझ कर शरीक न हुए। मैं और शैतान भी शरीक थे। वैसे तो जो बातें हुकूमत आपा कर रही थी, उनका जिक्र ही क्या, किन्तु दो शब्द उनके मुँह से बार बार निकल रहे थे। वह थे 'हमारी कार'। सब के सब उनकी कार की चरचा से तङ्ग आ गये थे। जज साहब चाहते तो अच्छी-खासी कार ले सकते थे, लेकिन न जाने उन्हें इस फजूल सी कार से क्या दिलचस्पी थी, जो उस पर बुरी तरह लट्टू थे। कुछ अकेले वे ही नहीं, बल्कि उनका सारा कुटुम्ब उस पर आशिक था। लेकिन हमें वह जहर दिखाई देती थी।

आखिर शैतान ने धीरे से कहा "देखो, हुकूमत अगर अब तुमने अपनी कार के बारे में एक लफ्ज भी कहा तो बस। लेकिन उन पर कोई असर न हुआ, और वे अपनी कार का बराबर गुण-गान करती रहीं। अब शैतान उठ खड़े हुए। सब आकृष्ट हो गये। शैतान गला साफ करके बोले—"महिलाओं और सज्जनों! आज मैं चन्द लफ़्ज उस चीज के बारे में कहना चाहता हूँ जिसे भूल से कार कहा जाता है। दरअसल यह कार नहीं 'बेकार' है। इसमें जब तक कुछ मेजें, कुरसियाँ और मोढ़े न रक्खें जाएं यह चलती नहीं (वह कार बहुत ही लम्बी थी), और जब तक बीस-पचीस आदमी न बैठें, अपनी जगह से नहीं हिलती। आप इसे पेट्रोल से नहीं चला सकते। जब तक इसमें मिट्टी का तेल, सरसों का तेल और कुछ चीजों का एक खास मिश्रण न डाला जाय, यह नहीं चलेगी। आप इसे पहाड़ पर चढ़ाएं, तो फौरन चढ़ जायगी, लेकिन उतार पर रुक जायगी और हरगिज-हरगिज आगे न बढ़ेगी। इसलिये कुछ पता नहीं कि यह चलती कब है और ठहरती कब है। अपनी मर्जी की मालिक है। इसमे हार्न की कोई जरूरत नहीं। इसकी मशीन का अंग्रेजी आर्केस्ट्रा आध मील से सुनाई दे जाता है, लोग इधर-उधर हट जाते हैं। चौराहे का सिपाही कानों में अँगुलियाँ देकर आँखें मीच लेता है और खुदा को याद करता हुआ एक तरफ को हो जाता। माएं अपने बच्चों को सीने से लगा लेती हैं। राहगीर सहम जाते

है, और देर तक सहमे रहते हैं। हमारे पड़ोस में इस चीज का वह आतङ्क छाया है कि बच्चों को इस चीज से डराया जाता है। एक दिन इस में दूध से भरा हुआ बरतन रख दिया गया। जब तीन चार मील जाने के बाद वह खोला गया, तो दूध पर मक्खन तैर रहा था। इसी तरह एक पिकनिक पर जाते समय हम जल्दी में आइसक्रीम न बना सके। हाँ, आइस-क्रीम की मशीन में सारी चीजें भर कर कार में रख लीं। जब वहाँ पहुँचे तो आला दर्जे की आइस-क्रीम तैयार हो चुकी थी।"

इसके बाद हुकूमत आपा ने अपनी कार की चरचा बन्द कर दी।

मुझे अब जो विश्वस्त सूत्र से सूचनाएँ मिलीं, तो मैं खुशी से बेकाबू हो गया। मुझे बताया गया कि रजिया को सिर्फ मेरा खयाल है। खयाल क्या खब्त है। वह खिची-खिची अवश्य रहती है, लेकिन इसका कारण हुकूमत आपा हैं। मैं सीधा शैतान के पास गया, और कहा कि भई अब तो पूरा विश्वास कर लेना चाहिये। मेरी हालत उन दिनों पागलों की सी थी। जो कुछ शैतान कहते थे, मैं तुरन्त कर बैठता था। पहले तो उन्होंने अपनी आदत के अनुसार मुझे रजिया से बेजार करने की कोशिश की, उसके खयाल से बाज आ जाने के लिये कहा। जब मैं न माना तो उन्होंने कहा कि दुनिया बहुत बड़ी है और रजिया की निगाह भी कमजोर है। मैं फिर भी न माना, तो उन्होंने एक ऊँट-पाटाँग सी योजना बताई कि मैं रजिया से बाग में मिलूँ लौटते में अनारों के झुन्ड की ओर से जाऊँ, और वहाँ जो गड्ढा है उसमें गिर पड़ूँ और बेहोश हो जाऊँ। रजिया जरूर सिर दबाएगी। बस मैं बेहोशी में बड़बड़ाने लगूँ, और रजिया से असल बात साफ-साफ कह दूँ। बस उस समय जो जवाब मिलेगा वह अन्तिम होगा।'

मैं हिचकिचाया। शैतान बोले—'यह आखिरी इम्तहान है। इस बार जरूर आखिरी जवाब मिलेगा। हिम्मत करही डालो।'

मैं तैयार हो गया। मैंने नन्ही को जासूस बनाया कि जैसे ही रजिया बाग की ओर जाय, मुझे तुरन्त इशारा कर दे। इशारा पाते ही मैं भागा,

और रजिया को बाग में जा मिला। पहले तो अपने ड्रामे के बारे में पूछा। बोली—"कुछ ऐसा बुरा नहीं था।" फिर इधर-उधर की बातें होने लगीं। जब लौटने लगे, तो मैं उसे अनारों के झुन्ड की ओर ले गया। अब वह छोटा-सा गड्ढा आया जहाँ मुझे गिरना था। पगडन्डी से गड्ढा दूर था, इस लिये मैं घास पर चलने लगा, और एकाएक अनायास ठोकर खाकर मैं गड्ढे में कुछ इस तरह गिरा कि सचमुच चोट लगी! गिरने का रिहर्सल भी तो नहीं किया था।

रजिया घबरा गई। उसने मुझे होश में लाने के उपाय किये, लेकिन मैं भला कहीं होश में आता। मैंने हिदायत नम्बर तीन के अनुसार धीरे से कहा—"रजिया!" और आँखें झपका कर देखा भी।

मैंने फिर धीरे से कहा—"मेरी रजिया!" और वह मेरे पास बैठ गई।

अब मेरा सिर दबाया जा रहा था। कहने को तो मैं 'मेरी रजिया!' कह गया था, लेकिन मारे डर के मेरा बुरा हाल था। मैंने पूरे एक मिनट के बाद फिर कहा—"मेरी रजिया!"

और रजिया चुपके से बोली—"हाँ!"

और मैं मानो आसमान में उड़ने लगा। अब उसने मेरा सिर अपनी हथेली पर रख लिया, और मेरे बालों में अँगुलियाँ चलाने लगी। निश्चयात्मक जवाब मिल चुका था, मेरा जी चाहता था कि नाचने लगूँ। रजिया की अँगुलियाँ बालों से खेलती-खेलती गरदन तक पहुँचीं और मुझे एकदम जोरों से गुदगुदी लगी, तो सारे यत्न कर डाले, ओंठ चबाएँ, अपनी चुटकियाँ लीं, बहुतेरा रोका, किन्तु वह कमबख्त गुदगुदी काबू में न आई, और मैं खिलखिला कर हँस पड़ा। अब जो रजिया नाराज हुई है तो बस न पूछिये।

चलते हुए बोली—"मुझे पहले ही से यकीन था कि आप हमेशा मुझसे मजाक करते हैं। भला इस तमाशे की क्या जरूरत थी?"

और मैं खड़ा का खड़ा रह गया। मैंने सोचा कि इसमें मेरा दोष ही क्या। गुदगुदी सब के होती है, किसी को कम, किसी को ज्यादा। बस रञ्ज था तो यह था कि अब रजिया कभी मुझसे बात न करेगी!

सारा मामला चौपट हो गया।

दूसरे दिन शाम को अत्यन्त उदासी के साथ मैंने शैतान को सारा किस्सा सुनाया। वह बोले—"भैया, पहले तो मुझे शक था, लेकिन अब यकीन हो गया है कि रजिया तुम्हें पसन्द नहीं करती। इसमें रंज करने की कोई बात नहीं है। अपनी अपनी पसन्द है। किसी का क्या जोर?.....और जब मोहब्बत का जवाब मुहब्बत में न मिले, तो फिर वहाँ से चले जाना चाहिये। ऐसे मौकों पर आबोहवा का बदलना बहुत अच्छा होता है। अब यहाँ रह कर सिवाय रंजो गम के तुम्हें कुछ न मिलेगा। इसलिये अच्छा यही है कि, भैया, तुम यहाँ से चले जाओ, और समझ लो कि रजिया को कभी देखा ही न था।"

मैं और भी उदास हो गया। मैंने भरे हुए स्वर में कहा—"अब मैं जहाँ भी जाऊँगा बहुत ही उदास रहा करूँगा, क्योंकि मुझे रजिया इतनी अच्छी लगती है, जिसकी कोई हद नहीं। अब मैं उसे हरगिज नहीं भुला सकता।"

हम इसी तरह बातें करते रहे। आखिर, शैतान ने मनवा कर छोड़ा कि इस समय मेरे लिये अच्छा यही है कि मैं चुपके से चला जाऊँ बिना जज साहब से बतलाये।

"और कालेज के सार्टीफिकेट?" मैंने पूछा।

"वह सब मैं भेज दूँगा"—शैतान बोले, और थोड़ी देर बाद मैं सामान बाँध रहा था। शैतान मेरी मदद कर रहे थे।

इतने में हुकूमत आपा आ गईं। पीछे पीछे नन्ही थी, जिसे वह सदैव अपने साथ रखती थीं। मैंने जल्दी से सन्दूक बन्द कर दिये। मुझे हुकूमत आपा बहुत बुरी लगीं।

मेरी और शैतान की यही इच्छा थी कि ये किसी तरह यहाँ से चली जायँ।

शैतान बोले—"नन्हीं, देख तो सही साथ के कमरे में जो क्लाक है वह चल रही है या खड़ी है!"

नन्हीं लौट कर बोली—"क्लाक चल तो नहीं रही है, खड़ी है बस अपनी दुम हिला रही है।"

शैतान नन्हीं से बोले—"तो गोया चल रही है न?"

"चल कहाँ रही है? चल किस तरह सकती है बेचारी! कीलों से तो गाड़ रक्खा है। बस अपनी दुम हिला रही है।" नन्हीं बोली।

हुकूमत आपा हँस दीं।

शैतान चिढ़ कर बोले—"यह बड़ी होकर पूरी हुकूमत बनेगी। शाबश है, हुकूमत! क्या लाजवाब ट्रेनिङ्ग दी है तुमने इस बच्ची को! सत्यानाश कर दिया!" हुकूमत आपा अभी कुछ कहने ही वाली थीं कि शैतान बोले—"तुम्हें चाहिये कि इसे सारे सबक पढ़ा कर एक सार्टीफिकेट दे दो, इस तरह कि मैंने पूरे चार साल तक इस बच्ची को अपनी ट्रेनिंग में रक्खा और इसे अच्छी तरह बिगाड़ने की कोशिश की और अब मैं बड़े फख्र (गर्व) से कह सकती हूँ कि यह एक छिछोरी, चटोरी और जिद्दी लड़की बन गई है। लोगों की खाम-खाह अलोचना करने में तो इसने मुझे भी मात कर दिया है। हर एक से लड़ना—झगड़ना, बुजर्गों का हुक्म न मानना, अपना वक्त खराब करना—इन सब बातों में यह ऐसी होशियार हो गई है कि क्या कहूँ। जहाँ भी यह जायगी मेरा नाम रोशन करेगी, मेरी हिमाकतें इसके साथ हैं।"

और हुकूमत आपा ने एक तेज सा जवाब दिया, और बाहर जाने के लिये उठ खड़ी हुईं। नन्हीं बोली—"भैया, अब तो आप

हुकूमत आपा को धमका लेते हैं। जरा इनकी शादी हो जाने दो, फिर देखेंगे इन्हे कौन धमकाता है।"

अच्छा तो हुकूमत की शादी भी होगी ?

"कौन कहता है ?" शैतान बोले।

अब हुकूमत आपा उबल पड़ीं। बोलीं—"और तुम्हारी बड़ी होगी! देख लेना जो कोई लड़की तुम्हारे नजदीक भी खड़ी हो जाय। खाहम-खाह रजिया को भी परेशान कर रक्खा है और (मेरी ओर संकेत करके) इस बेचारे को भी!"

इस पर मेरे कान खड़े हुए।

"हुकूमत तुम जाकर कोई दिमाग तर करने वाला शर्बत पियो। तुम्हारी तन्दुरुस्ती···!"

"मुझे पहले ही पता था कि तुम···!"

"खाक था पता तुम्हें!"

"अच्छा तो फिर कह दूँ सब-कुछ, कि तुम बेचारे की···!"

"तुम अपना वक्त भी खराब कर रही हो और दूसरों का भी।"

शैतान और हुकूमत आपा की खूब लड़ाई हुई। हुकूमत आपा ने सब कुछ बता दिया।

मुझे तन-बदन की सुध न थी।

मैंने शैतान को कालर से पकड़ लिया, और पूछा—'क्या सचमुच तुम रजिया को मेरे खिलाफ बहकाते रहे हो।"

"हाँ!"

"और ड्रामे में तुमने ही गड़बड़ी कराई थी ?"

"हाँ"

"और वह खुद कुशी तुमने ही खराब कराई थी ?"

'हाँ! हाँ!!"

"और वह······?"

"हाँ ! हाँ !! हाँ !!! मैंने सब कुछ किया है, और अभी बहुत कुछ करूँगा। लेकिन यह समझ लो रजिया तुम्हें बिलकुल पसन्द नहीं करती, और उसकी नजर भी कमजोर है।"

मैंने शैतान को अपनी ओर खींचा, और मुक्का ताना ही था कि इतने में जज साहब आ गये। वे सदैव की भाँति मुस्करा रहे थे। बोले—"मैंने सब कुछ सुन लिया है। बैठ जाओ। जब मैं योरप में था तो वहाँ एक लड़के से मेरी खटपट हो गई। हमारे प्रोफेसर ने हमें झगड़ते देख लिया। वे बोले कि तुम दोनों के दिलों में एक गुबार है जिसे निकाल देना अच्छा है। तुम किसी न किसी दिन आपस में जरूर लड़ोगे। इसके बाद वह हमें खेल के मैदान में ले गये और वहाँ हमारी मुक्का बाजी करवाई। हम खूब लड़े। यहाँ तक कि दोनों थककर गिर पड़े। और जब हम वापस आये तो बड़े अच्छे दोस्त बन गये थे। अब तुम दोनों भी आपस में जरूर लड़ोगे, इसलिये अच्छा यही है कि हम लोग बाग में चलें। तुम्हारा फैसला वहाँ हो जायगा।

उन्होंने ग्लव्ज़ (Gloves) मँगा लिये, और हम सब कमरे से बाहर निकल आए। बड़ी ही मनोहर चाँदनी रात थी। मैं अत्यधिक उदास था। मैं हूँ ही बुरा। जहाँ जाता हूँ कोई न कोई गुल खिला देता हूँ। मुझे चाहिये था कि चुपचाप यहाँ से चला जाता। जब रजिया को मुझसे नफरत है, तो फिर बाकी क्या रह गया ? अब यह सब बात फैल जायगी। और तो और, जज साहब ने भी सब-कुछ सुन लिया। मारे शर्म के मैं जमीन में गड़ गया। एक तमाशा और बाकी रह गया था, सो वह अब हो रहा है। बस मैं रात की ट्रेन से घर चला जाऊंगा, और फिर कभी यहाँ मुंह न दिखाऊंगा।

प्लाट में बिजली के लट्टू जल रहे थे। निश्चय हुआ कि वहाँ लड़ाई हो। हमें 'ग्लव्ज' पहिनाये गये। जज साहब ने घड़ी हाथ में ले

ली। हमारे चारों ओर सारा कुटुम्ब खड़ा था। जज साहब बोले—"कितना राउंड ?"

मैंने कहा—"जितने आप चाहें ?"

"शैतान बोले—"तीन"

जज साहब ने कहा—'तीन में तो फैसला नहीं होगा। पाँच सही।"

पहला राउंड शुरू हुआ। न जाने मेरे हाथ, पाँव क्यों शिथिल हो रहे थे। मैं बिना किसी बचाव के शैतान से पिट रहा था। सब बच्चे मेरी ओर थे और मेरी हिम्मत बढ़ा रहे थे। रजिया एक ओर अकेली खड़ी थी, बिलकुल चुपचाप।

पहला राउंड शैतान का रहा। दूसरे में फिर उन्होंने पीटना शुरू किया, मैं और बुत बना खड़ा रहा। यहाँ तक कि मेरा एक मुक्का भी उनको न लगा। बच्चे चिल्ला-चिल्ला कर मेरा उत्साह बढ़ाने का प्रयत्न कर रहे थे। और मैं न जाने क्या सोच रहा था। शायद यही कि इस लड़ाई के बाद तुरन्त यहाँ से चला जाऊँगा। एक ट्रेन रात के ग्यारह बजे जाती है।

तीसरी राउंड में भी यही हुआ। शैतान उछल-उछल कर हमला करते थे, और मैं बचाव तक न कर पाता था। बच्चे बुरी तरह शोर मचा रहे थे। तीसरा राउंड खतम हुआ। मैं बैठा ही था कि रजिया ने मेरे कान में कुछ कह दिया। मैंने काँपती हुई आवाज में पूछा—"सच ?"

वह बोली—"हाँ !"

और मेरी आँखों के सामने तितलियाँ नाचने लगीं। मैं उछल कर खड़ा हो गया।

चौथा राउंड शुरू हुआ। धड़ाम-धड़ाम-धड़ाम की आवाजें आईं। मेरे ग्लव्ज ने हरकत की ..और मेरे सामने शैतान बेहोश पड़े थे।

वह 'नाक-आउट' हो गये थे। जज साहब ने मेरा हाथ हवा में ऊँचा करके हिला दिया।

और रजिया मेरे ग्लब्ज उतारने लगी।

हुकूमत आपा बोलीं—"मुझे पहले ही पता... !"

"पहले ही पता था आप को ! यही न ?"

और रजिया बड़ा प्यारामुँह बना कर बोली—"मुझे भी पहले ही पता था !"

मैं और रजिया फौवारे की तरफ चले गये। रास्ते में हमने वह गढ़ा भी देखा, जहाँ मैं गिर कर बेहोश हो गया था। हम दोनों मुस्कराने लगे। अत्यधिक मनोहर चाँदनी छिटकी हुई थी। ऐसी चाँदनी मैंने कभी न देखी थी। मैंने देखा कि रजिया अद्वितीय सुन्दर लड़की है, और ऐसी लड़की मैंने आज तक नहीं देखी। और जब हम सुगन्धित फूलों की क्यारियों में से हो कर गुजर रहे थे, तो वातावरण में एक सन्नाटा था-सुखद तथा चित्ताकर्षक-सा सन्नाटा। तब मुझे पता चला कि शैतान तो मेरे प्रतिद्वन्दी थे। और हुकूमत आपा अपना वक्त भी खराब कर रही थीं और दूसरों का भी।

Then I turned back, and nobody was there, so glad I was that I squeezed my Razia's rose bud & kissed a few hot kisses.

Km. C. Pant.

शैतान की खाला जान

शैतान सुबह-सुबह डाक्टर साहब को ले आये। घर में रोगियों की पलटन की पलटन तैयार थी। मुआयना शुरू हुआ। अस्पताल का मजा आ रहा था। डाक्टर साहब थक जाते, तो कुर्सी पर गिर पड़ते। थोड़ी देर साँस लेकर, फिर मुआयना शुरू कर देते। अभी एक रोगी बाक़ी था, कि शैतान की खाला जान आ गईं। उन्होंने इस मनोहर दृश्य का आनन्द लेने की जगह ऐसा प्रकट किया, मानो उन्हें बुरा लग रहा हो। डाक्टर साहब के चले जाने के बाद, शैतान ने नुस्खों का पुलिन्दा अपनी मौसी के हवाले किया। उन्होंने पहले तो नाक-भौं चढ़ाईं, फिर रोगियों का दोबारा मुआयना करने की इच्छा प्रकट की। रोगी इस मुआयना नम्बर दो के लिये हरगिज तैयार नहीं थे, वे बिखर चुके थे। कोई छलाँगें लगा रहा था, कोई पेड़ पर चढ़ा बैठा था, कुछ फुटबाल

खेल रहे थे। उन सबको दोबारा घेरा गया, और लाइन में खड़ा कर दिया गया। शैतान की खाला जान ने निरीक्षण आरम्भ किया—"अरे नन्हें! तुझे क्या हो गया? देखूं तेरे कान। (नौकरानी को सम्बोधित कर) बन्नो, थोड़े से बिनौले गुलकन्द में मिला कर देना। ··· और ···"

शैतान बात काट कर, बोले—"बिनौले बाकायदा घास के साथ मिला कर न दिये जायं?"

उन्होंने दूसरे रोगी को देखा, और बोलीं—"इसकी नाक को सर्दी लग गई है। इसे तरबूज के बीज, पीपल की छाल में पीस कर गावजबान के साथ चटा दो।"

"गावजबान की जगह भैंस-जबान क्यों न इस्तेमाल की जाय?" शैतान ने फिर पूछा।

"और तू तो अच्छा-भला था। ...बन्नो, इसके लिये गुलबनफशा, हल्दी की गाँठ, केले के बीज और अमलताश की जड़ ..."

"क्या कहा आप ने? फसाद की जड़?"—शैतान ने पूछा।

"लड़के तू चुप रह।... हाँ, बन्नो, तो अमलताश की जड़। इन सब चीजों को मीठी-मीठी आँच में पका कर, पुलटिस बना कर, बाँध देना।"

इतने में शैतान ने छींक मारा।

"क्या तुझे भी ठन्डक लग गई है। देखूं तेरा गला।"

शैतान ने बहुत हाथ पाँव मारे, लेकिन कुछ न बना। शैतान का गला देखा गया, और यह नुस्खा तजवीज हुआ—जायफल और इमली को गुलाब जल में पीस कर थोड़ी सी प्याज और मूली मिलाई जाय। इसके बाद कपड़े में छान कर, अमरूद के छिलके और थोड़ी राख भी डाली जाय, और खूब गरम किया जाय। यह सब अला-बला उबलती-

उबलती गले पर बाँधी जाय, और सोने से पहले शैतान डेढ़ सेर का काढ़ा पियें। सुबह तड़के उनकी ठन्डक दूर हो जायगी।

अब शैतान बहुत खिटपिटाये। बोले—"खाला जान, कुछ हुद-हुद के पर, उल्लू की दुम, ऊदबिलाव की मूंछे और कुत्ते के कान लेकर खूब पीसे जायं, और गले पर बाँध दिये जायं।"

"लड़के मजाक उड़ाता है?" वे बोलीं—"तुझे क्या पता, ये सब टोटके हैं और कभी गलत नहीं होते। न जाने तुझे देशी इलाज से चिढ़ क्यों है। परसों जब हकीम अहमद गाजी ने खाँसी की दवा भेजी, तब वह भी तुमने नहीं पी।"

"इस ख्याल से नहीं पी, कि वे खुद तो गाजी हैं ही, हमें भी न शहीद कर दें। खाला जान, जोशाँदे की जगह तो नारियल का तेल पिला दीजिये, थोड़ी सी भङ्ग या चरस पिला कर।"

लेकिन उनकी एक न सुनी गई, और शैतान को लिटा दिया गया। तब यह आपरेशन खत्म हुआ। और शैतान के गले पर सब कुछ बाँध दिया गया, तो वे बोले—"यार, यहाँ तो बीमार होने को भी जी नहीं चाहता। यह ऐसी जगह नहीं है, जहाँ इन्सान खूब इत्मीनान से बीमार हो सके, और जितनी देर चाहे बीमार रहे।"

"क्या खूब! तो जनाब रूफी साहब यहाँ बीमार होने को पधारे हैं?" मैंने पूछा। —"हम?" शैतान ने अपनी छाती पर हाथ रख कर, कहा—"हम कमान के तीर हैं। एक बार निकल जायं, तो वापस नहीं आते।"

हुआ यों, कि मैं दिल्ली के स्टेशन पर यों ही घूम रहा था। इतने में एक गाड़ी कहीं से आ कर रुकी। शैतान उस पर से उतरे, और मुझे पकड़ लिया। बोले—"आगरे चलो।"

उन दिनों आगरे में शैतान की खाला (मौसी) और खालू (मौसा) रहते थे। मैंने बहाने बनाये, और शैतान ने प्लेटफार्म पर

कुश्ती शुरू कर दी। जब स्टेशन पर एक भीड़ इकट्ठी हो गई, तब मैंने लाचार हो 'हाँ' की। मालूम हुआ कि आप दार्जिलिंग जाने का इरादा रखते हैं। उन्होंने दार्जिलिंग और आस-पास के इलाके का पुस्तकों द्वारा खूब अध्ययन किया है। पहाड़ के लिये वे इतने गरम कपड़े साथ लाये हैं, कि कई आदमियों के लिये काफी होंगे। थोड़े पहाड़ी जूते, कैमरा, थर्मस, बरसाती, छड़ी, आदि सभी आवश्यक चीजें साथ हैं। लेकिन सिर्फ एक चीज की कसर है। वह यह, कि रुपये नहीं हैं।

मेरा बटुआ निकाला। रुपये गिने गये। एक सौ कुछ थे। कई वर्षों के बाद यह शुभ घड़ी आई थी, कि मेरे बटुये से रुपये निकले थे। शैतान के रुपये भी मिलाये गये। एक कागज पर गिन्ती लिख कर जोड़ लगाया गया तो अब डेढ़ सौ के लगभग निकला।

"अब सिर्फ ढाई सौ रुपये की कमी है," शैतान बोले।

"अगर महज ढाई सौ रुपये की तुच्छ रकम की कमी है तो आगरे क्यों जा रहे हो?" मैंने पूछा।

"खाला जान से रुपया लेने, बल्कि रुपये ऐंठने" वे बोले। सचमुच प्रस्ताव अच्छा ही था।

आगरा पहुँचे। बड़ी धूम-धाम से हमारा स्वागत हुआ। शैतान ने मेरा परिचय कराया। परिचय कराते समय यह वाक्य अवश्य कहते, "यह साहब दोपहर का भोजन नहीं करते।" सचमुच मैं कई वर्ष से 'लंच' नहीं खाता। लेकिन शैतान ने तो बाकायदा, पब्लिसिटी शुरू कर दी। आखिर तङ्ग आकर पूछा, कि यह क्या वाहियात बात है। बोले—"बता देना अच्छा है, खास कर लड़कियों को, क्यों कि वे उस आदमी को कभी पसन्द नहीं करेंगी, जो 'लंच' न खाता हो। कम-से-कम वे उसे पति के रूप में तो हरगिज नहीं देख सकतीं, कि दोपहर का समय है और बेगम साहबा अकेली बैठी खाना खा रही हैं।"

"लेकिन शौहर बनना कौन मसखरा चाहता है ? और फिर तुम हर आदमी से कह देते हो। कल तो तुमने हज्जाम से भी कहा, और बिजली के मिस्त्री, डाकिये और शोफर से भी।"

"आगे ख्याल रखेंगे।"

शैतान ने वहाँ अजब धमा-चौकड़ी मचा दी। एक लम्बा चौड़ा कुत्ता न जाने कहाँ से पकड़ लाये (शैतान को लम्बे चौड़े कुत्ते बहुत पसन्द हैं), जो कुत्ता कम और गधा अधिक जान पड़ता था। शैतान के खालू और खाला, दोनों को कुत्तों का बेहद शौक था। उनके यहाँ लगभग हर साइज और हर नम्बर के कुत्ते मौजूद थे। शैतान के कुत्ते और उन कुत्तों के विचार विभिन्न थे। अतएव प्रतिदिन मतभेद रहने लगा। पहले वाद-विवाद होता, फिर बाकायदा लड़ाई तक नौबत पहुँचती।

उधर शैतान ने बात-बात पर सब का मजाक उड़ाना शुरू कर दिया। बच्चों से भी मजाक, बड़ों से भी, बुजुर्गों से भी। मैंने समझाया, कि "हजरत, इस तरह तुम ढाई सौ रुपये क्या, ढाई रुपये भी नहीं ऐंठ सकते।" लेकिन शैतान शायद अपनी आदत से लाचार थे। वे दोनों कानों से सुनते, और तुरन्त दोनों कानों से निकाल देते।

मैं दार्जिलिंग हो आया था। शैतान रात को सोने से पहले वहाँ के जल-वायु, निवासी, पैदावार यातायात के साधन आदि पर बातें करते। टाईगर हिल से सूर्योदय के दृश्य की चर्चा अवश्य होती। उनकी फरमायश होती, कि "उस दृश्य का विस्तृत वर्णन करो।' मैं शुरू करता—"टाइगर हिल के चारों ओर ऊँचे-ऊँचे बर्फ से ढके हुए पहाड़ हैं। सूर्योदय से पहले बर्फ पर तरह-तरह के रंग जगमगाते हैं। रंगों का यह खेल कंचन चंगा पर सब से अधिक भला लगता है। इसके बाद सूर्योदय होता है। लाल रङ्ग की एक बड़ी-सी गेंद घूमती हुई एकदम बर्फ से बाहर निकल आती है। तब माउन्ट एवरेस्ट दिखाई पड़ती है—दुनियाँ की सब से ऊँची चोटी!....."

"बस बस ! इस से ज्यादा सुनने की ताव नहीं" शैतान कहते—"नहीं तो नींद नहीं आयगी। अब तो बस यही तमन्ना है, कि दार्जिलिंग जाऊँ, माउन्ट एवरेस्ट और कंचनचंगा देखूं, और भला-चंगा वापस आ जाऊँ ! भला गाड़ी कितने बजे वहाँ पहुँचती है ।"

"सिलीगुड़ी से दो गाड़ियाँ चलती हैं। एक दो बजे दोपहर को पहुँचती है। और एक शाम को। मोटरें भी जाती हैं।"

"तुम्हारे खयाल में कौन-सी-गाड़ी अच्छी होगी ? दोपहर वाली या शाम वाली ?"

"शाम वाली अच्छी होगी।"

"नहीं दोपहर वाली से चलेंगे। शाम वाली अगर लेट हो गई, या रास्ते में बिगड़ गई, तो रास्ते में ही जम जायँगे।"

"लेकिन वह गाड़ियाँ लेट नहीं होतीं। दार्जिलिंग हिमालय रेलवे हलकी-फुलकी-सी रेल है, और उसके इञ्जन बड़े ताकतवर हैं।"

"जी नहीं, हम तो दोपहर वाली गाड़ी से चलेंगे।"

"लेकिन नाश्ता......"

"हरगिज नहीं। हमने एक बार कह जो दिया, कि ....."

गरज खूब झगड़ा होता। मैं तङ्ग आ कर कहता—"भई, इस बहस से फायदा ? हालत तो ऐसी है, कि हम दार्जिलिंग सिर्फ पैदल-जा सकते हैं; या वापस चलें।"

"हम ?" शैतान अपनी छाती पर हाथ मार कर, कहते—"हम कमान के तीर हैं। एक बार निकल जायँ, तो वापस नहीं लौटते।"

हम स्टेशन से वापस आ रहे थे। शैतान चौंक कर, बोले—"नन्हा रो रहा है।" यद्यपि साफ सुनाई पड़ रहा था, कि इञ्जन की सीटी है, और घर भी दो-ढाई मील था। वैसे नन्हा रोता खूब था।

"रास्ते भर शैतान को यही वहम रहा। घर पहुँच कर देखा, तो सचमुच नन्हा रो रहा था।

"आज तो नन्हें ने रोने में अपना पिछला सब-का-सब रिकार्ड तोड़ दिया। इसकी आवाज हवा के रुख के खिलाफ ढाई मील तक सुनाई दे रही थी। ताज्जुब है, कि लोग बच्चों की नुमायश में रोने की प्रतियोगिता क्यों नहीं रखते। अगर रखें, तो आल इण्डिया चैम्पियन हम दे सकते हैं।"...शैतान बोले।

"आज कुछ ज्यादा रो रहा है।" उनकी खाला बोली—"बन्नो, फौरन नीम की पत्तियाँ, अजवायन और पुदीने को सौंफ के पानी में उबाल कर ले आ।"

"मेरे दाँत में भी दर्द हो रहा है, खाला जान," शैतान शरारत से बोले—"कई साल से है।"

"अच्छा ? तो कहीं से गधे की दाढ़ मिल सके, तो..."

"गधे की दाढ़ ? अपनी दाढ़ तुड़वा कर गधे की दाढ़ फिट करा लूँ।" शैतान बोले—"यह तो हरगिज नहीं हो सकता।"

"पहले सुन तो लिया कर। गधे की दाढ़ को शरबते बादाम में उबाल कर, इसबगोल के छिलके और काली मिर्च को पीस कर..."

"खाला जान, जायफल में एक शामी कबाब मिला कर न बाँध लूँ ! या गावजबान में थोड़ी सी मलाई और रबड़ी मिलाकर चाट लूँ ?"

"मैं कहती हूँ तूने टोटकों को समझ क्या रक्खा है। लिये फिरता है अपनी डाक्टरी और हिकमत !" वे खफा होकर बोलीं—"पिछले साल नन्हा बीमार हुआ। डाक्टर बोले, निमोनिया है, और लगे उलटी-सीधी दवाइयाँ तजवीज करने। मैंने अदरक का मुरब्बा, केकर

का छिलका, थोड़ी काली मिर्च पीस कर शरबते गुलाब में मिला कर पिला दिया। अगले दिन न निमोनिया था, न हारमोनिया। नन्हा बिलकुल तन्दुरुस्त हो गया। इस लड़की का गला बढ़ गया। डाक्टरों ने कहा, ऑपरेशन होगा। सब तैयारियाँ होने लगीं। दो दिन मेरे कहने से बड़ की कोंपल, कँवल की जड़ और लहसुन की पुलटिस बाँधी गई। जीरा, हड़ और लौंग को पीस कर यह चूरन अर्क गावजबान के साथ खिलाया गया। लड़की का गला ऐसा पिचका, जैसे कभी था ही नहीं...'

उन्होंने अनगिनत मिसालें दे डालीं।

इतने में कुत्तों के भूंकने की आवाज आई। शायद शैतान का कुत्ता दूसरे कुत्तों से वाद-विवाद कर रहा था। हम भागे। बड़ी मुश्किल से शैतान के कुत्ते को पकड़ा, और उसे बाँध-बूँध कर एक तरफ किया। शैतान के खालू भी वहीं थे। बातें होने लगीं।

"खालू जान, आपके कुत्तों की तन्दुरुस्ती अच्छी नहीं है। सब के सब दमा, दिल की धड़कन और मालीखोलिया के रोगी मालूम होते हैं।" शैतान बोले।

"वह अलसेशियन कुत्ता नहीं देखा तुमने?" उन्होंने बड़े गर्व से कहा।

"वह कुत्ता, जो गीदड़ से मिलता-जुलता है? वह बेचारा तो टी॰ बी॰ का मारा हुआ है।"

"और वह जो दो फाक्सटेरियर हैं—व्हिस्की और सोडा? वे कैसे हैं? दौड़ में वे दुनिया भर के कुत्तों को पीछे छोड़ जायँ।'

'खालू जान, माफ कीजियेगा, दोनों कुत्ते सख्त पोस्ती और अफीमी किस्म के हैं। उनके नाम व्हिस्की और सोडा के बजाय ताड़ी और ठर्रा होने चाहिये थे। मेरे ख्याल में तो वे एक इंच भी नहीं दौड़ सकते।"

"तो तुम्हारा कुत्ता ही कौन तीस-मार खाँ है ? बिलकुल उजड्ड और जाहिल कुत्ता है !"—वे बोले ।

"तो लड़ा लीजिये न !" शैतान बोले ।

यह उनका प्रिय वाक्य था । कुत्तों पर जब बहस होती, तो यह वाक्य अवश्य कहा जाता

"भाई जान का कुत्ता खूब सफेद रंग का है ।" एक बच्चा बोला ।

"हर रोज सुबह उठ कर उसे नहलाता हूँ । इसके बाद उसकी दुम और कानों पर इस्त्री की जाती है"

"और सर्दियों में ?" बच्चे ने बड़ेशौक से पूछा—"सर्दियों में तो कुत्ता हरगिज न नहाता होगा ।"

"सर्दियों में कुत्ता ड्राइ क्लीन कराया जाता है ।"

"भई, मेरे खयाल में तो तुम्हारा कुत्ता बिलकुल नीची जात का है । जब कभी मुझे मिलता है, तो एक साथ दाँत भी दिखाता है, और दुम भी हिलाता है । यानी एक ही वक्त में नाराजी भी जाहिर करता है, और खुशी भी । निहायत ही नामाकूल कुत्ता है ।" वे बोले ।

"तो लड़ा लीजिये अपने बेहतरीन कुत्ते से ! अभी फैसला हो जायगा ।" शैतान ने कहा ।"

ज़रा देर में कुत्तों के मैच की तैयारियाँ होने लगीं । सारा कुटुम्ब इकट्ठा हो गया ।

मैं बिलकुल विरक्त था । न मुझे कुत्ते पसन्द हैं, न बाकी जानवर । मुझे ये कुत्ते, बिल्लियाँ, बन्दर, आदि, सब फ़जूल लगते हैं । जंगल के जानवरों को न जाने इन्सानों ने क्यों सिर पर चढ़ा रक्खा है ! कहते हैं, कुत्ता इन्सान का दोस्त है । मेरे ख्याल में इन्सान का बेहतरीन दोस्त वह खुद है । दावा किया जाता है, कि एकान्त में यदि कुत्ता साथ हो,

तो इन्सान एकान्त से घबराता नहीं। लेकिन जो घबराने वाले हों, वे बातें करते-करते भी तंग आ जायँगे, साथी से भी तंग आ जायँगे।

कुत्तों की किस्में और श्रेणियाँ बनाई गई हैं। कुत्तों के नाम रक्खे जाते हैं। लेकिन कम-से-कम मेरे लिये तो सब कुत्ते भूंकने वाले कुत्ते हैं, और मैं एक को दूसरे से नहीं पहचान सकता, जब तक कि रंग या कद का कोई स्पष्ट अन्तर न हो।

दूसरे कमरे में एक कुत्ते ने प्रोटेस्ट किया, और जबरदस्त नारा लगाया।

"यह कौन मार रहा है इस कुत्ते को ?" शैतान के खालू ने पुकारा।

"देख लीजिये, खालू जान। मना कीजिये अपने कुत्ते को। खाह-मखाह इसने अपनी थुथनी मेरे बूट में दे मारी !"—शैतान बोले, और अपना कुत्ता लेकर मैदान में आ पहुँचे।

उधर उनके खालू जान का चैम्पियन कुत्ता अपने हिमायतियों के साथ पहुँचा। शैतान ने आग्रह किया, कि फालतू कुत्तों के प्रवेश की मनाही की जाय। अतः उनको बाहर निकाल दिया गया।

"वह भाई कहाँ गये।" एक बच्चे ने डर कर पूछा—"जो आप के साथ आये हैं।"

"वही न जो दोपहर का खाना नहीं खाते ?" शैतान बोले।

"जी हाँ।"

"वह उस कोने में बैठे हैं।"

और बच्चा मेरे पास आ बैठा। शायद उसे भी कुत्तों से सख्त नफरत थी।

कुत्तों की लड़ाई शुरू हुई। पहले राउन्ड में दोनों कुत्ते बराबर रहे। दोनों ने एक-दूसरे का अभिवादन किया और दूर-दूर से नाक-भौं चढ़ाते

रहे। दूसरे राउन्ड में गुत्थम-गुत्था हो गई। शैतान का बुरा हाल था। चिल्ला-चिल्ला कर, अपने कुत्ते को सलाह दे रहे थे।

"शाबाश डागी (यह शैतान के कुत्ते का नाम था)। हाँ, इसी तरह एक लेफ्ट हुक और लगाओ। पीछे हटो। वह—उसका स्ट्रेट आ रहा है। गोता दे जाओ। बस, एक जोर का पंच और लगे। यों नहीं। डिफेंस करो। गुस्सा मत करो। पहले थका लो, फिर नाक आउट करना।"

"भई, यह गलत है। तुम बताते क्यों हो?"—उनके खालू बोले।

"आप भी बताइये। हाँ, तो, डागी एक अपर कट लगाओ। पीछे मत हटो। अब एक राइट हुक लगे।...क्या कहने हैं। नजदीक से एक और पंच दो...एक हुक और...वाह रे, मेरे डागी!....नाक से साँस लो, नहीं तो हाँफने लगोगे, शाबाश!"

चौथे राउन्ड में डागी ने अपने प्रतिद्वन्दी को नाक आउट कर दिया। सँभलते ही वह इस बुरी तरह मैदान से भागा, कि दो दीवारें कूद गया।

शैतान ने डागी का दाहिना पंजा हवा में हिला कर, कहा—"लेडीज ऐन्ड जन्टुल मेन।....दी विनर!"

उनके खालू बोले—"मैं इसे हरगिज लड़ाई नहीं कहता। तुमने सरासर बेईमानी की है। अपने कुत्ते को बताया क्यों? तुम्हारे कुत्ते को मुकाबले से निकाला जाता है।"

एक लम्बी बहस के बाद यह तय हुआ, कि दोनों कुत्ते बराबर रहे।

कुछ देर बाद, हारा हुआ कुत्ता वापस लाया गया, और उसकी मरहम-पट्टी शुरू हुई।

शैतान की खाला बोली—"विंक्चर-विंक्चर मत लगाओ। नीला थोथा, गुलाब के फूल, इलायची और गोंद को रगड़ कर बाँध दो।"

"इस कुत्ते को तारपीन का तेल पिला दो," शैतान बोले—"फौरन हँसने-खेलने लगेगा।"

लेकिन उनकी खाला जान के टोटके पर अमल किया गया।

शैतान ने खानसामे से पूछा—"आज क्या पका है?"

वह बोला—"कीमा, कढ़ी और आइस्क्रीम।"

"आज फिर पका दी तुमने अइसक्रीम? कल तो पकी ही थी।" शैतान बोले—"तुम भी बस पूरे कढ़ी-बघार हो।"

इतने में नन्हा मेरा हैट ले आया। "भाई जान, आप का यह हैट बाहर एक गढ़े में पड़ा था।"

शैतान ने मुस्करा कर, मेरी ओर देखा।

इस कमबख्त हैट से मैं तङ्ग आ चुका था। आते समय रेल में मेरा हैट खो गया, और दिल्ली मैंने नया हैट खरीदा। जल्दी में साइज आदि का खयाल नहीं किया। जब पहन कर देखा, तो बहुत बड़ा था। मैं हमेशा उसे हाथ में रखता हूँ, सिर पर कभी नहीं लगाता।

शैतान ने हैट को हवाई जहाज का खिताब दिया। उसे देखते ही कहते—"यार, यह हैट है या हवाई जहाज?" हैट का हवाई जहाज से क्या सम्बन्ध हो सकता है। यह एक रहस्य था, जो शैतान तक ही सीमित था। आगरा पहुँच कर मैंने हर सम्भव उपाय किया, कि उस हैट से मेरा पीछा छुटे। जहाँ जाता, उसे जान-बूझ कर भूल जाता। इधर उधर छिपा देता, फेंक देता। किन्तु कोई न कोई लाकर वापस दे देता। अब शैतान हैट का खास खयाल रखने लगे, और नियमित रूप से उसकी रखवाली करने लगे। रात हवा तेज थी। मैंने छत के नीचे फेंक दिया। सोचा, कि उड़ कर कहीं चला जायगा। लेकिन नन्हें मियाँ कहीं से ढूंढ़ लाये।

दार्जिलिंग के बारे में फिर बातें हुईं। मैंने कह दिया—"भाई रूफी इस तरह तो तुम हरगिज वहाँ नहीं जा सकते। एक तो तुमने खाला जान से इस बात का अब तक जिक्र नहीं किया, दूसरे यह कि तुम हर बात में

उनसे उलझ पड़ते हो। मुझे यकीन है, कि यहाँ बुजुरगों में तुम को कोई भी पसन्द नहीं करता।"

"जिक्र तो किया था। लेकिन वह बोली—"तुम्हारी अम्मी ने लिखा है, कि "रूफी वहाँ से काफी रुपये लेकर निकला है। खुदा जाने कहाँ जायगा। अगर तुम्हारे पास आये, तो तुम उसे रुपये मत देना।"

"तो क्या तुम सचमुच बहुतसे रुपये लेकर निकले थे?"

"हाँ। लेकिन एकाएक थोड़े से रह गये। खाला जान के सामने मैंने कसम भी खाई, कि मेरे पास एक पैसा नहीं है...."

"झूठी कसम खा ली?"

"नहीं भाई। उस समय सचमुच मेरे पास पैसा नहीं था। नोट, रुपये और इकन्नी-दुअन्नी थी। लेकिन उन्होंने रुपये देने का न वायदा ही किया है, न बाक़ायदा इन्कार ही हुआ है।"

"तो फिर चलो वापस चलें।"

"हम?" शैतान अपनी छाती पर मुक्का मार कर बोले—"हम कमान के तीर हैं। एक बार निकल जायं, तो कभी वापस नहीं आते।"

अगले दिन इतवार था। सुबह तड़के एक काफला ताजमहल की ओर चल पड़ा। काफले में शैतान का कुटुम्ब था। दो एक कुटुम्ब और भी थे। हम दोनों भी थे। दिन भर का राशन साथ था।

शैतान के खालू बहुत मूड में थे। एक प्लाट में हम तीनों बैठे चिलगोजे खा रहे थे। शैतान के खालू अपने खास अन्दाज में बातें कर रहे थे।

" घास पर अभी तक ओस है। ओस तो, तुम जानते ही होगे, सुबह भी पड़ती है, और कभी-कभी तीसरे पहर भी। तीसरे पहर आज-कल काफी गर्मी रहती है, और पखें का भी जरूरत पड़ जाती है। पंखे दिन पर दिन महंगे होते जा रहे हैं। बाजार में मिलते ही नहीं। बाजार में

तुम जानते ही हो, कि अंधेर मचा है, अंधेर। सब्जियां गायब हो चुकी हैं। अगर कहीं हैं, तो सोने के तौल मिलती है। सब्जियाँ तन्दुरुस्ती के लिये बेहद मुफीद है, और खास कर शलजम या शबनम ?"

'जी बुलबुलें !" शैतान ने कहा।

"हाँ, तो ये बुलबुलें भी खूब हैं। हमारी शायरी में सुबह से शाम तक बुलबुलें चहकती हैं। फिल्मों में भी तुमने बुलबुलें देखी होगी। यह फिल्में भी दिन-पर-दिन गिरती जा रही हैं। सुना है, कि फिल्मी गाने दरअसल बैक ग्राउन्ड में कोई और गाता है। और पर्दे पर मुँह हीरो या हिरोइन का हिलता है।"

"मैंने तो यहाँ तक सुना है, कि बैक ग्राउन्ड में एक्टिंग कोई और करता है, लेकिन पर्दे पर कोई और दिखाया जाता है।" शैतान बोले।

"मैंने नहीं सुना...खैर, तो फिल्में गिरती जा रही हैं। सिनेमा-हाल में अलग शोर मचता है। खोनचे वाले शहर भर की गलियां छोड़ कर, सिनेमा हाल में आ मरते हैं। मेरे ख्याल में वहाँ सौदा बाजार से अच्छा मिलता है। परसों मैंने हाल में आम खरीदे। काफी अच्छे थे।"

"मैंने भी खरीदे थे। कलमी आम तीन आने फी जिल्द थे" शैतान बोले।

"असली आम तो दरभंगे के होते हैं। दरभङ्गा पूरबी भारत में है। पूरबी भारत में बारिश खूब होता है। बारिश चिरापूंजी में दुनिया भर से ज्यादा होती...दुनिया सौर मन्डल में बहुत ही छोटा नक्षत्र है। कहते हैं, कि सौर मन्डल...भला मैं किस चीज का जिक्र कर रहा था ?"

"अमरूदों का !" शैतान ने कहा।

"हाँ, तो अमरूद ..."

शैतान के खालू अपने खास अन्दाज में बातें कर रहे थे। शैतान को खानसामा दिखाई पड़ गया। आवाज दी—"आइसक्रीम पक चुकी या नहीं?"

"तैयार हो रही है।" जवाब मिला।

"चलिये चलें!"

हम उठ खड़े हुए।

"वह दरवाजा काफी पुराना मालूम होता है" उन्होंने संकेत करते हुए कहा।

"लेकिन जब बना होगा, तब बिलकुल नया होगा।" शैतान ने जवाब दिया।

वहाँ पहुँच कर देखते हैं, कि अनगिनत स्त्री, पुरुष और बच्चे जमा हैं। सब-के-सब काफले के सदस्य थे। पहले शैतान ने मेरा परिचय कराया और "ये दोपहर का खाना नहीं खाते" वाला जुमला भी दोहरा दिया।

"लेकिन आज जरूर खायंगे!" आवाजें आई।

"भई, आज जरूर खाना पड़ेगा!" शैतान बोले—"और तुम्हारा हैट कहाँ गया? वह हवाई जहाज?"

"मैं साथ नहीं लाया।"

"आप साथ लाये थे। कहीं छिपा आये हैं।" और शैतान ने दो-तीन बच्चों को हैट तलाश करने के लिये भेज दिया।

अब ताजमहल की तस्वीरें उतरने लगीं। काफले वालों के पास कई कैमरे थे।

ताजमहल को बैक ग्राउन्ड में लेकर, कुछ लोगों को खड़ा कराया गया, और शैतान की खाला उनकी तस्वीर उतारने लगीं। शैतान बोले—"ठहरिये!" और अपने खालू के हाथ में कैमरा दे कर, बोले—"जैसे ही

खाला जान उनकी तस्वीर उतारें आप खाला जान सहित सब की तस्वीर खींच लीजिये ।" उन्होंने फोकस किया । एक और महाशय कैमरा लिये खड़े थे । शैतान उनको खींच कर लाये, और बोले—"जब खालू जान उनकी तस्वीर उतारें, तो आप उन सब तस्वीरों की तस्वीर खींच लीजिये !" उनके लिये भी फोकस किया गया ।

जरा देर में हम मोरचा बन्दी किये खड़े थे—शैतान की खाला जान उन लोगों की तस्वीर के लिये, शैतान के खालू शैतान की खाला जान की तस्वीर के लिये, वह महाशय शैतान के खालू की तस्वीर के लिये, एक और महाशय उन महाशय के लिये, शैतान उन महाशय के लिये और मैंने शैतान का फोकस कर रखा था ।

"काश, चन्द कैमरे और होते ! अच्छा, अब मैं तीन कहूँ तो तस्वीर ले लीजिये ।" शैतान बोले—"एक...दो...चार ! माफ कीजिये ।" और सब ने तस्वीरें खींच ली ।

"अच्छी नहीं आयेगी । वक्त पर नहीं खींची गई ।"

अब खाना शुरू हुआ । मुझे जबरदस्ती शामिल किया गया ।

"अभी-अभी मैंने इस पेड़ के पास एक साँप देखा ।" शैतान बोले ।

"साँप देखा ?" सब चीख कर बोले—"जिन्दा साँप ।"

"तो फिर ?"

"फिर क्या था मैंने साँप को देखा और साँप ने मुझे देखा ।"

इतने में खानसामा ने शैतान के खालू से पूछा—"साहब वह चीज ले आऊ ?"

"अभी ठहरो" वे बोले ।

इस 'वह चीज' पर हम दोनों के कान खड़े हुए । जरूर कोई बहुत मजेदार चीज होगी । हम ने अपने खाने को गति धीमी रक्खी ।

"क्यों, साहब, यह ताजमहल का नकशा मूसा खाँ ने बनाया था न ?" शैतान ने पूछा।

"मूसा खाँ ने नहीं, उस्ताद ईसा ने बनाया था।" किसी ने जवाब दिया।

"उस्ताद क्यों ?...बच्चों को पढ़ाते थे क्या ?"

"जी नहीं...वह तो..."

"तो फिर संगीत से लगाव रखते होंगे ?"

"जी नहीं, वह, तो बहुत बड़े..."

"तो बड़े उस्ताद होंगे ?"

"बहुत बड़े मेमार थे।"

खानसामे ने फिर पूछा—" वह चीज ले आऊँ ?"

"जरा ठहरो।" शैतान के खालू बोले।

हमें फिर याद आ गया और खाने की रफ्तार बिलकुल धीमी कर दी। जैसे बिलकुल पैदल चल रहे हों।

"ताजमहल बनाने के इनाम में शाहजहाँ ने उस्ताद ईसा को खान बहादुर का खिताब तो जरूर दिया होगा।" शैतान ने कहा।...

थोड़ी देर बाद खानसामे ने फिर पूछा। शैतान के खालू झल्ला उठे। बोले—"भई, यह क्या तुम बार-बार पूछते हो ? जब मँगानी होगी, खुद बता देंगे।" और हम दोनों ने खाना बिलकुल बन्द कर दिया। उस 'चीज' की राह देखने लगे। आखिर किसी तरह इन्तजार की घड़ियाँ खत्म हुई, और शैतान के खालू बोले "ले आओ वह चीज !"

वह चीज आई। हमने बड़ी अधीरता से डोंगा लिया। ढकना उठा कर देखते हैं। तो दही था, जिस पर चीनी छिड़की हुई थी। शैतान मचल गये, कि उनको धोके में क्यों रखा गया। उन्होंने दोबारा नये सिरे से खाना शुरू कर दिया।

देर से वापस लौटे। वापसी में शैतान कहीं खाँस पड़े। उनकी खाला ने तुरन्त वहीं एक टोटका बतला दिया। रात को शैतान को करीब दो-तीन सेर पक्का काढ़ा पीना पड़ा !....

हम सब बरांडे में बैठे थे। शैतान के हाथ में एक किताब थी। बोले—"खाला जान, एक नावेल सुनाऊँ ?"

"भाई काफी देर हो चुकी है" वे बोलीं।

"बहुत ही मुख्तसर नावेल है...सुनिये...एक बाँका हीरो एक निहायत ही बाँके घोड़े पर सवार है, और बड़े बाँकेपन से सड़क पर जा रहा है, हीरो के पास एक पिस्तौल है और एक चाकू, क्योंकि आगे जङ्गल में डाकू रहते हैं।"

"भई, अब कल सुनेंगे...नींद आ रही है।" उनके खालू बोले।

"एक मिनट और...हां, तो हीरो जङ्गल में घुसा ही था, कि चारों ओर से डाकुओं ने घेर लिया। डाकू तादाद में दस थे, और सब-के-सब ही हथियार बन्द...हीरो ने फौरन पिस्तौल निकाल कर फायर किया। जवाब में कई गोलियाँ आईं..."

"बारह बजने वाले हैं....सुबह जल्दी उठना है ..."

"हीरो ने खूब मुकाबला किया, लेकिन डाकू कई थे। आखिर एक गोली हीरो के ऐसी लगी, कि बेचारा वहीं मर गया। और सौभाग्य से यह नावेल पहले ही अध्याय में खतम हो गया...बस किस्सा खतम हुआ....आप तो खाम-मखाह घबरा रहे थे !"

अगले दिन हम स्टेशन पर गये। दार्जिलिंग जाने के लिये गाड़ियों के बिलकुल नये टाइम पूछना चाहते थे (एक दिन पहले भी पूछ चुके थे) एक गाड़ी आई। हम प्लेटफार्म पर टहल रहे थे। एकाएक

शैतान किसी को देख कर, चौंक पड़े। बोले—"खूब! तो मूछें मुँड़वा दी हैं हजरत ने।"

और आगे बढ़ कर एक साहब से बोले—"आदाब अर्ज!"

वे कुछ झिझके। शैतान बोले—"जनाब, आप अपनी मूछों के बिना हमें पहचानते ही नहीं!"

बस, वह सज्जन छलांग मार कर ट्रेन से कूद पड़े, और शैतान से लिपट गये। मालूम हुआ कि शैतान के पुराने क्लास-फेलो हैं, और आज-कल कहीं प्रोफेसर हैं (शैतान के पुराने क्लास-फेलो कई-कई वर्ष से यूनिवर्सिटी छोड़ चुके हैं)। मेरा परिचय कराया गया—ये मेरे बहुत ही प्यारे दोस्त हैं, जो दोपहर का खाना नहीं खाते।"

मालूम हुआ, कि वह दार्जिलिंग से आ रहे हैं।

बस शैतान तो वहीं बिछ गये। जितने प्रश्न दार्जिलिंग के बारे में कोई परीक्षक पूछ सकता था। शैतान ने पूछ डाले। कुछ देर में गाड़ी छूट गई।

हम दोनों रेफ्रेशमेंट-रूम में बैठे चाय पी रहे थे। शैतान बोले—"भई, अब तो धैर्य का बाँध टूट चुका है। अब अगर इसी हफ्ते दर्जिलिंग न गये, तो धिक्कार है। यह कमबख्त वहीं से आ रहा है।"

"उनके डिब्बे में बहुत भीड़ थी। आज-कल सिकेण्ड क्लास में भी जगह नहीं मिलती।" मैंने कहा।

"यह भीड़ नहीं थी। ये उनके बच्चे थे। पूरी टीम-की-टीम है।" शैतान ने कहा।

"अच्छा, तो क्या विवाह हो चुका है?"

"सिर्फ विवाहित ही नहीं, बेहद विवाहित है। इस आदमी का किस्सा भी बड़ा दर्दनाक है। जब हम फोर्थ इयर में इकट्ठे थे, तो उन

दिनों यह बहुत ही खुश किस्मत था। साल भर इसकी किस्मत तेज रही। इम्तहान में पास हुआ, खेल-कूद में अच्छा रहा, ताश में खूब रुपये जीतता रहा, घुड़दौड़ में भी जाने लगा...!"

"दौड़ता था क्या?"

"नहीं घोड़ों पर रुपये लगाता था। किसी कमजोर और मरियल से घोड़े पर रुपये लगा देता, तो वह भी रो-पीट कर किसी-न-किसी तरह औवल आ ही जाता। हम सब इससे ईर्ष्या करते थे। इसकी खुशनसीबी मिसाल के रूप में पेश की जाती थी। उन्हीं दिनों यह एक लड़की से भी प्रेम करता था। लेकिन वह इसकी परवाह न करती थी। एक हफ्ते तो इसकी किस्मत का सितारा ऐसा चमका कि वह खुद हैरान रह गया। सालाना इम्तहान में औवल आया, यूनवर्सिटी टीम में ले लिया गया, यूनियन का सेक्रेट्री भी बन गया, और मैगजीन का एडीटर भी। घुड़दौड़ में पाँच सौ रुपया जीते। सब ने सलाह दी, कि लगे हाथों प्रेम भी कर डालो। किस्मत तेज है, शायद वह लड़की मान जाय।... आखिर उसने सब के कहने-सुनने पर उस लड़की को सूचित कर दिया कि उसका इरादा आत्म-हत्या करने का है, और उसके बिना उसका जीवन बेकार है। बस, वह दिन और आज का दिन, इसकी किस्मत का सितारा ऐसा डूबा, जैसे कहीं दूर चला गया हो। उसके बाद यह इम्तहान में फेल हो गया, टीम से निकाला गया, ताश में हर रोज हारने लगा। घुड़दौड़ में अगर सबसे अच्छे घोड़े पर रुपये लगाता, तो वह लँगड़ाने लगता था या जीतता जीतता हार जाता। इसका सारा मसखरापन जाता रहा, और यह बिलकुल चिड़चिड़ा हो गया।"

"तो क्या उस लड़की ने इसे ठुकरा दिया?"

"जी नहीं, बल्कि उस लड़की ने इससे शादी कर ली,"

शैतान बोले—"तुम्हारा हैट कहाँ है?'

मैंने कहा—"मैं नहीं लाया।"

शैतान तुरन्त उठ कर गये, और प्लेटफ़ार्म पर खोजकर बुकस्टाल से हैट उठा लाये, जहां मैं उसे बड़े सुरक्षित ढङ्ग से भूल आया था।

"भई, यह हवाई जहाज़ खरीदा ही है, तो पहना भी करो। गले का ढोल बजाना ही पड़ेगा।" —वे बोले।

अब शादी पर बातें होने लगीं। शैतान ने कहा—"मेरे खयाल में शादी की कोई खास ज़रुरत तो है नहीं। शादी का खयाल जन्नत और जहन्नुम के खयाल की तरह है। कोई जिक्र करे, और याद दिलाये, तभी याद आता है, नहीं तो नहीं।"

"तुम भी एक ही बहुरुपिये हो। कभी शादी के इतने भक्त हो जाते हो कि हमें भी परेशान कर देते हो, और कभी......"

"वक्त, वक्त का राग है, भई। इस वक्त मुझे बिलकुल इस तरह का कोई खयाल नहीं है। इस समय शादी के बारे में सोचना बिलकुल ऐसा ही है, जैसे फ़तेहपुर सीकरी के ऊँचे दरवाज़े से छलाँग लगा देना। जो वहाँ से छलाँग लगायेगा, या तो उसके दिमाग़ में खलल है, या वह मरना ही चाहता है। यह तय है, कि ऐसी छलाँग तन्दुरुस्ती के लिये फ़ायदामन्द नहीं हो सकती।"

"कभी-कभी यह क्या उलटी-सीधी हाँकने लगते हो? जैसे दौर आ जाता हो।"

"तुमने ही तो बात छेड़ी थी...इस समय शादी से कहीं अहम और ऊँचे मक़सद हैं हमारे सामने।"

"कौन से?"

"दार्जिलिंग जाना और दुनिया के सब से अहम और ऊँचे पहाड़ के दर्शन करना। लेकिन कुछ समझ में नहीं आता कि क्या किया जाय। खाला जान से रुपये लेना भी माउन्ट एवरेस्ट की चोटी पर

पहुँचने से कम नहीं, बल्कि शायद कठिन ही हो। तुम्हारा कहना सच है। वह कुछ नाराज सी भी हैं।''

''भई, उस खानसामाँ से सलाह क्यों न लें ? काफी समझदार मालूम होता है।''

''समझ में क्या हम किसी से कम हैं ? ''वह .खानसाना सूरत-शकल से तो गवैया मालूम होता है। तुम्ही बात करना मुझसे तो वह आइसक्रीम पकाने के सिलसिले में चिढ़-सा गया है!''

''अब चलें ?''

''हाँ, चलो, और अपना हैट साथ ले लो....।''

रात के खाने पर शैतान को हिचकियां आने लगीं। बहुतेरा कहा, कि कोई याद कर रहा है। लेकिन उसी समय उनकी खाला जान की हिदायत के अनुसार उनको जायफल, लौंग, मुनक्का हड़ और इसी तरह की पंद्रह-बीस चीजों को पीस कर शरबत उन्नाव के साथ पीना पड़ा। शैतान ने बहुत मुँह बनाया, और सबके सामने एलान कर दिया, कि उनको टोटकों पर जरा भी विश्वास नहीं है।

बड़े कमरे में एक क्लाक था। सुबह तड़के हम नाश्ते के लिये उस कमरे से गुजरते तो क्लाक में दस बजे हुए होते। यही खयाल होता कि बहुत देर हो गई। शैतान वक्त देखकर, हर रोज कहते—''आज-कल बहुत देर हो जाती है।''

मैंने खानसामे से पूछा कि—''भई, यह क्लाक इतना तेज क्यों है सुबह-सुबह दस बजा देता है ?''

वह बोला—''साहब, यह क्लाक तो बहुत दिनों से बन्द है। इसमें दो-ढाई साल से दस बजे हुए हैं।''

दो चार बातें और हुईं, और मुझे पता लगा कि उसे रुपये की सख्त

ज़रूरत है, और उसे हिम्मत नहीं पड़ती, कि शैतान के खालू से रुपये माँगे। वैसे अगर वह चाहे, तो अपने घर से भी रुपये मँगा सकता है।

"तो घर से क्यों नहीं मँगा लेते ?" मैंने मुस्करा कर पूछा।

"एक तो मुझे लिखना नहीं आता।" वह मुस्करा कर बोला—"और दूसरे वह लोग पढ़ नहीं सकते।"

मैंने उसी रोज उसे कुछ रुपये दिलवा दिये। हम दोनों कुछ-कुछ दोस्त बन गये। अब मैंने सब कुछ बता दिया, और उसकी मदद चाही। उसने एक बहुत ही सही और लाजवाब सलाह दी। मैंने वही बहुत सही और लाजवाब सलाह शैतान के हवाले कर दी, और साथ ही धमकाया भी, कि यदि इस सलाह पर बहुत जल्द अमल न हुआ, तो मैं वापस चला जाऊँगा।

जाहिर है, कि उस सलाह का सम्बन्ध टोटकों से था।

अगले दिन मैं दोपहर को शहर का चक्कर लगा कर वापस आया, तो क्या देखता हूँ, कि घर में गदर-सा-मचा हुआ है। एक ओर बच्चे लाइन लगाये खड़े हैं, दूसरी तरफ बहुत से पत्ते, तने जड़ें और थैलियाँ रक्खी हैं। शैतान और उनकी खाला खड़े बच्चों का मुआयना कर रहे हैं।

एक ओर खरल में कुछ कूटा जा रहा है। दूसरी ओर सिल पर कुछ पीसा जा रहा है। रसोई-घर में देगचियाँ खड़क रही हैं। वहां कुछ गर्म किया जा रहा है, कुछ उबाला जा रहा है। बारी-बारी पीपल के पत्ते, नीम की जड़, गूलर की कोपल, अमरुद के बीज नौसादर, सौंफ, गावजबान, दाल-चीनी और इसी प्रकार के नाम सुनाई देते हैं। कभी शैतान स्वयं कुछ फांक जाते हैं, कभी उनकी खाला जान कुछ चबाने लगती हैं, और कभी किसी बच्चे के गले में कुछ उँडेल दिया जाता है।

मुझे देखते ही, शैतान चिल्लाये—"अरे, यह तुम विरक्त से क्यों हो ?" नाड़ी देखी, और बच्चों से बोले—"कुछ अदरक, पुदीने की

पत्तियाँ, तरबूज के बीज, अनार के छिलके और जाफ़रान को शरबत उन्नाव में मिलाकर पिला दो।"

इसके पहले कि मैं कुछ बोलता, एक अत्यन्त कसीली, कड़वी दवाई मेरे मुंह में उलट दी गई। वहां से भाग कर कमरे में पहुँचा। कूटने, पीसने, छानने और उबालने की आवाजें पूर्ववत आ रही थीं। कुछ देर बैठा रहा फिर ऊँघने लगा। तीसरे पहर के करीब आँख खुली। देखा, कि शैतान मुझे झिंझोड़ रहे हैं। चेहरे पर एक खास शैतानी मुस्कराहट है।

"तैयार हो जाओ। फौरन सामान वगैरह ......"

"क्या हुआ ?"

"आज से तुम्हारे इस हैट को भी छुट्टी दी जाती है", उन्होंने हैट को उठा कर, बाहर फेंक दिया।

"आखिर हुआ क्या ?" मैंने चिल्ला कर, पूछा।

"टोटके! अच्छा यह तो बताओ, कि इस समय हमें कौन-सी-गाड़ी मिल सकती है ?"

"खुदा के लिये कुछ बताओ तो सही। क्या हुआ ?"

"बस, तुम फ़ौरन तैयार हो जाओ", शैतान बटुआ दिखा कर, बोले।

"किस तरफ़ चलेंगे ? वापस ?"

"हम?" शैतान अपनी छाती बेतहाशा कूटते हुए, बोले—"हम कमान के तीर हैं। एक बार निकल जायें, तो फिर वापस कभी नहीं आते!"

—o—

शैतान और हिमालय पर्वत

रात के नौ बजे थे। क्लब में प्रोफेसर जालीनूस का लेक्चर था। विषय कुछ ऐसा ही था। बार बार शास्त्रों के नाम आ रहे थे, वनस्पति शास्त्र, अर्थ शास्त्र, समाज शास्त्र। मैंने घड़ी देखी और शैतान बोले—"घड़ी घड़ी, घड़ी मत देखो।"

प्रोफेसर साहब को लेक्चर शुरू किये हुए मुश्किल से आध घन्टा बीता होगा, लेकिन ऐसा लगता था मानो बरसों से बोल रहे हों। सुनने वाले जम्हाइयाँ ले रहे थे। मैंने बड़ी तरकीब से समय देखा पर शैतान ने देख लिया और बोले—"कह जो रहा हूँ, घड़ी घड़ी, घड़ी की तरफ मत देखो।"

"तो फिर क्या करूँ? अच्छा जब लेक्चर खतम हो जाय तो जगा देना।" और मैं कुर्सी पर लेट गया।

शैतान झल्ला कर बोले—"सब तुम्हें देख रहे हैं—तुम सोओ मत। मैं लेक्चर अभी खतम कराये देता हूँ।"

यह कह कर शैतान ने बड़ी तेजी से अपनी घड़ी देखनी शुरू कर दी। शायद एक मिनट में पन्द्रह बीस बार। और हर बार इस ढंग से कलाई आँखों के सामने लाते कि सब देख लें। बार बार घड़ी को कान के पास ले जाकर सुनते कि कहीं बन्द तो नहीं हो गई। इसके बाद कलाई को खूब झटकते। प्रोफेसर जालीनूस का लेक्चर अपने शबाब पर था। एकाएक उनकी दृष्टि शैतान पर गई और वे बोले—"लेडीज ऐन्ड जैन्टुल मेन! मुझे इस बात का खयाल है कि मैं आपका काफी समय नष्ट कर चुका हूँ। लेकिन मेरे पास घड़ी नहीं है और न इस हाल में कोई क्लाक है इस लिये समय का अनुमान.......।"

"कोई बात नहीं।" शैतान बोले—"दाहिने हाथ को एक कैलेन्डर लगा हुआ है, उसे इस्तेमाल कीजिये।"

प्रोफेसर साहब उसी जोश से बोले जा रहे थे, बल्कि पहले से कुछ तेज हो गये थे। उस समय घोड़ों के सम्बन्ध में कुछ कह रहे थे। सहसा उन्होंने कड़क कर कहा—"आप अनुमान कर सकते हैं कि घोड़े की भावनाएँ क्या होंगी!"

यह कहकर उपस्थित लोगों की ओर देखा और एक बार फिर यही वाक्य दोहराया। अब की शैतान उठ कर बोले—साहब, मुझे क्या पता। मुझे घोड़ा रहने का कभी संयोग नहीं हुआ।"

शोर खतम होते ही प्रोफेसर साहब पचास शब्द फी सिकेंड की रफ्तार से उड़े जा रहे थे। अब शायद भारतीय रीति रिवाजों की बात हो रही थी। उन्होंने कड़क कर पूछा—"क्या आप अनुमान लगा सकते हैं कि बेचारी भारतीय दुल्हनें क्या सोचती होंगी?" और श्रोताओं की ओर देखने लगे।

शैतान तुरन्त बोले —"साहब, मैं क्या कह सकता हूँ। मुझे भारतीय दुल्हन बनने का इत्तफाक नहीं हुआ।"

इसके बाद जब कभी प्रोफेसर साहब इस प्रकार का प्रश्न लोगों से पूछते शैतान तुरन्त उठ कर इसी प्रकार का उत्तर दे देते। आखिर किसी तरह लेक्चर खतम हुआ और सभापति महोदय ने कहा— अब रूफी साहब इसी विषय पर भाषण देंगे।"

सब लोग तालियाँ बजाने लगे। शैतान के व्याख्यान का मुझे बिलकुल पता नहीं था, न मैंने उनको तैयारी करते देखा। शैतान मुस्कराते हुए स्टेज पर पहुँचे और बोले— महिलाओं और सज्जनो! भाषण तो आप सुन चुके हैं और आपका जी भाषण से भर गया है। मैं आपको एक अजीब गरीब घटना सुनाता हूँ। कुछ समय पहले की बात है कि मैं रात के समय रेल में सफर कर रहा था। मेरे साथ एक बड़ा ही रहस्य-पूर्ण व्यक्ति सवार था। डिब्बे में हम दो ही यात्री थे। मेरी आँख लग गई। जब जागा तो देखा कि वह मुसाफिर गायब है और साथ ही मेरा सामान भी गायब है केवल एक छोटा सा डिब्बा पड़ा था जिसे वह भूल गया था। मैंने सोचा चलो, यही सही। देखने में वह एक मामूली सा डिब्बा था और बाहर से देख कर कोई नहीं बता सकता था कि उसके भीतर क्या होगा। अगले दिन एक दोस्त की वर्ष गाँठ थी। मैंने वही डिब्बा उपहार में दे दिया। उस शाम को मेरे मित्र ने मुझे बुलाकर मुझे बहुत-बहुत धन्यवाद दिया और कहा कि इतना कीमती उपहार देने की क्या जरूरत थी। उसने डिब्बा वापस करना चाहा लेकिन मैंने न लिया। उसने अपने किसी दोस्त को वर्षगाँठ पर वही डिब्बा उपहार में दे दिया। परि-णाम यह हुआ कि दोनों दोस्तों में खूब लड़ाई हुई और डिब्बा वापस आ गया। मेरे मित्र ने अपनी मँगेतर की वर्षगाँठ पर उसे भेंट कर दिया। उन दोनों की खट पट हो गई थी, लेकिन इस उपहार से सारी रंजिशें दूर हो गईं। मेरे मित्र की मँगेतर ने वह डिब्बा अपनी किसी सहेली को

सालगिरह पर उसे दे दिया और दोनों सहेलियाँ आपस में खूब लड़ीं लेकिन उस सहेली ने डिब्बा वापस न किया बल्कि अपने मँगेतर को दे दिया। मँगेतर कुछ नाराज सा था। डिब्बा मिलते ही सारी नाराजी जाती रही और सुलह हो गई।......तो महिलाओ और सज्जनो वह डिब्बा बारी-बारी एक बार सुलह कराता था तो दूसरी बार जंग......।"

"उस डिब्बे के भीतर क्या था ?" एक ओर से आवाज आई।

"हाँ, उस डिब्बे में क्या था ?" कई आवाजें आईं।

"पता नहीं क्या था। ......इस वक्त तो बिलकुल याद नहीं रहा।" शैतान सिर खुजलाते हुए बोले

सब के सब पीछे पड़ गये—"बताओ उस डिब्बे में क्या था। और शैतान मासूम शक्ल बनाये खड़े थे और बार बार कहते थे कि भूल गया। वापसी में कई सज्जनों ने हमारा पीछा किया और यही सवाल पूछा।

जब हम क्लब से काफी दूर निकल आये तो मैंने पूछा—"मुझे तो बतादो कि उस डिब्बे में क्या था ?"

"पता नहीं क्या था।" वह बोले—"याद नहीं रहा।

चढ़ाई चढ़ते चढ़ते शैतान एकाएक रुक गये। एक तरफ इशारा करके बोले—"यह कोठी है उनकी।"

"किनकी ?"

"अब तुम्हें किस तरह समझाऊँ किनकी......।"यह कहकर शैतान ने ठन्डी साँस भरी और आस्मान की ओर देखने लगे।

"खुदा के लिये बताओ, कहीं तुम आशिक तो नहीं हो रहे हो ?" मैंने घबरा कर कहा।

"हो क्या रहा हूँ, हो चुका......कभी का हो चुका।"

मुझे इश्क व मुहब्बत से कोई दुश्मनी है और न इश्क करने वालों से बैर। लेकिन हर चीज मौके पर अच्छी लगती है। यह क्या कि हम,

तो पहाड़ पर सैर करने आयें और शैतान बजाय घूमने फिरने के आशिक होना शुरूकर दें और मेरे प्रोग्राम का सत्यानाश हो जाय।

मैंने कहा— रूफी, मुझे इस मैदान में खुद तजरबा नहीं है लेकिन मैंने इस विषय पर बहुत सी किताबें पढ़ी हैं। मैंने डान जु आन, कैसा नोवा, बायरन और दूसरे आशिकों के बारे में भी पढ़ा है। लेकिन तुम उन सब को मात कर गये हो। इस महीने में तुम दस बार आशिक हुए हो, या शायद ग्यारह मरतबा मेरे ख्याल में यह रिकार्ड है!"...

"लेकिन इस बार मैं इस बुरी तरह घायल हुआ हूँ कि क्या बताऊं।' शैतान दोनों हाथ छाती पर रख कर बोले—"असली और सच्ची मुहब्बत तो इस बार हुई है। वह इस कोठी में रहती हैं और इतनी हसीन हैं कि अगर तुम देख पाओ तो खुद आशिक हो जाओ।"

"शुक्रिया! मैं तो मैदानों का रहने वाला हूँ, मुझे पहाड़ों पर ...।"

"वाह! अगर हिमालय पहाड़ पर इश्क न किया तो फिर कहाँ करेंगे।" शैतान बोले।

"अब यहां से हिलोगे भी या यहीं जम जाने का इरादा है?" मैं सर्दी से ठिठुर रहा था।

"तुम हमेशा रङ्ग में भङ्ग और भङ्ग में रङ्ग मिला देते हो। अच्छा चलो, कल यहां आयेंगे।'

"पहुँच हो गई?"

"हो गई। अगले महीने जो खेल कूद हो रहे हैं, उसके टिकट बेचने गया था। वहीं उनको देखा। उनके अब्बा से खूब बातें हुईं। चलते वक्त उन्होंने कहा कि कभी फिर आना।'

"कैसे हैं?"

"उन्हें जानवरों, पक्षियों शहद की मक्खियों का बेहद शौक है। लेकिन सब से ज्यादा शौक भूतों का है। भूतों के बारे में बात चीत करना

उनका प्रिय विषय है। मैंने वहाँ कुछ किताबें भी देखीं जिनके नाम कुछ इस प्रकार थे—"भूतों की कहानियां, "जिन्नों की भाषा, " नये भूत, एक चुड़ैल की जीवनी।"

"तो इस बार क्या इरादा है ? यह मुहब्बत कितने दिन चलेगी ?"

"उम्र भर रहेगी।" शैतान बोले—" इस बार मैं सचमुच गम्भीर हूँ। अगर वे लोग आ गये तो फिर ......।"

' अच्छा ?"

हाँ।"

घर पहुँचे। शैतान की डाक रक्खी थी। उन्होंने एक लिफाफा खोल कर अजीब सा मुँह बना लिया।

"क्या हुआ रूफी ?" मैंने पूछा।

शैतान ने पत्र दिखाया। किसी महिला ने लिखा था—"अगर तुमने मेरी छोटी बहन को खत लिखना बन्द न किया तो मैं तुम्हें कच्चा चबा जाऊँगी।"

शैतान मेरी ओर देखने लगे।

"लानत भेजो। मत लिखा करो उसे खत।" मैंने सलाह दी।

"लेकिन किसे खत न लिखा करूँ ? किसकी छोटी बहन। लिखने वाली ने न तो अपना नाम लिखा है न अपनी छोटी बहन का। अब मैं अपनी डाक तो बन्द करने से रहा।"

दूसरा पत्र खोला। वह भी कुछ ऐसा ही था। वह लड़की ने लिखा था—"मेहरबानी करके मेरी तस्वीर वापस भेज दीजिये और आइन्दा ऐसे खत न लिखा कीजिये।"

"भेज दो इसकी तस्वीर।" मैंने कहा।

वे बोले—"यों नहीं, जरा अच्छी तरह भेजेंगे। वे बोले।

दो तीन घन्टे की तलाश के बाद मेज पर बहुत सी तस्वीरें इकट्ठी हो गईं। लड़कियों के फोटो, ऐक्ट्रेसों के चित्र, अखबारों से काटी हुई तस्वीरें। शैतान ने पच्चीस तीस तस्वीरें एक लिफाफे में बन्द कीं और लिखा—"कुमारी जी, विश्वास कीजिये कि मैं बिलकुल भूल गया हूँ कि आपकी तस्वीर कैसी थी, इसलिये ये कुछ तस्वीरें भेज रहा हूँ। इनमें से आप अपनी तस्वीर रख लें और बाकी तस्वीरें हिफाजत के साथ वापस भेज दें।"

जब शैतान के घर के लोग पहाड़ पर आये तो शैतान मुझे भी साथ घसीट लाये। कुटुम्ब के और लोग तो कुछ दिन बाद चले गये लेकिन हम ठहर गये। बहुत बड़ी कोठी थी। मैंने सलाह दी कि हम दोनों दो कमरे ले लें, बाकी बन्द कर दें। लेकिन शैतान ने आग्रह किया कि पूरी कोठी इस्तेमाल किया जाय। अतएव हम दो अलग अलग कमरों में रहते। एक कमरा सिग्रेट पीने के लिये अलग था, एक नाश्ते के लिये, एक दो पहर के खाने का, एक तीसरे पहर की चाय का, एक रात के खाने का। अध्ययन के लिये भी एक अलग कमरा था।

जब शैतान सोने के लिये अपने कमरे में जाने लगे तो एक बार फिर मैंने उनको इस इश्क व मुहब्बत के सिलसिले में टोका। लेकिन वह एक लम्बी सांस लेकर बोले—"मेरा कोई कसूर नहीं। यह इस ठंडे वातावरण और कम टेम्प्रेचर का असर है। समुद्र की सतह से सात आठ हजार फीट ऊँचाई का असर है, इस हवा का असर है। यह सारा कुसूर हिमालय पहाड़ का है।"

दूसरे दिन तीसरे पहर को हम दोनों उसी कोठी की तरफ गये। हमारे साथ हमारे पड़ोसियों का लम्बा चौड़ा कुत्ता भी था जिसे शैतान कभी कभी सैर कराने ले जाया करते थे। अभी हम फाटक तक ही पहुँचे थे कि आवाज आई—"जरा अपने कुत्ते को वहीं थाम कर रखिये।"

फिर आवाज आई—"अपने कुत्ते को इतनी देर तक पकड़े रखिये जितनी देर तक खरगोश बाग में न पहुँच जायँ।"

हमने कुत्ते को पकड़ लिया। आगे बढ़कर देखते हैं कि कोई पच्चीस तीस खरगोश लाइन बाँधे मार्च करते हुए बगीचे की तरफ जा रहे हैं। एक तरफ कोई पच्चास साठ बिल्लियाँ बिलकुल 'अटेन्शन' खड़ी हैं। कुछ चूहों के जैसे जानवर इधर उधर फिर रहे हैं।

हम अन्दर पहुँचे। एक बुजुर्ग बैठे बिल्लियों का राशन बाँट रहे थे। कुछ तोते उनके कंधों पर बैठे शोर मचा रहे थे। दो तीन मोर एक तरफ खड़े अपनी पारी का इन्तजार कर रहे थे। हमारा परिचय एक महाशय से कराया गया जो कुछ देर शैतान को ध्यान से देखते रहे। फिर बोले—"मेरा खयाल है कि मैंने आपको कहीं देखा है।"

"आपका खयाल सही है। जरूर देखा होगा, मैं अक्सर वहाँ जाया करता हूँ।"

चाय पर हमें शहद लगे हुए टोस्ट मिले। शैतान के टोस्ट पर बिलकुल जरा सा शहद लगा था। उन्होंने टोस्ट को पहले गौर से देखा फिर बुजुर्ग से बोले—"यह मालूम करके बड़ी खुशी हुई कि आपने एक शहद की मक्खी पाल रक्खी है।"

"एक शहद की मक्खी ?"

"जी हाँ एक, जिसका यह शहद है।"

"तुरन्त ही शैतान के सामने शहद का मिर्तबान रख दिया गया।'

हमें खरगोशों के नाम बताये गये। हर एक खरगोश का अलग अलग नाम था। एक बिल्ली दिखाई गई जिसकी कबूतरों से बड़ी गहरी दोस्ती थी! वह कबूतरों की रखवाली करती थी।

शैतान ने मौका पाकर भूतों की चर्चा छेड़ दी। भूतों की किस्में,

जातियाँ, उनके रीत रिवाज, उनका समाज सारांश यह कि भूतों पर खूब वाद विवाद हुआ।

"क्यों किबला, भूत कितनी ऊँचाई तक पाया जाता है ?" शैतान ने पूछा।

"आठ नौ हजार फिट की ऊँचाई तक तो मैंने खुद भूत देखे हैं। दार्जलिंग के टाइगर हिल पर।" वे बोले।

"सुना है कि लोगों ने कंचन चंगा और माउन्ट एवरेस्ट पर भी भूत देखे हैं।" शैतान ने कहा।

"बरखुर्दार! मालूम होता है कि तुम भूतों में न सिर्फ दिलचस्पी लेते हो बल्कि तुमने उनका काफी अध्ययन भी किया है।" उनकी बाछें खिल गईं।

"कुछ न पूछिये। मैं तो भूतों पर आशिक हूँ। सिर्फ उनके लिये जिन्दा हूँ। मैंने भारत के हर हिस्से के भूत देखे हैं। यहाँ भी कल रात कुछ भूतों का सामना हुआ।"

"अच्छा, तो यहाँ भी भूत हैं ?" बुजुर्ग चहक कर बोले।"

"भूत कहाँ नहीं हैं ?" शैतान ने मुस्करा कर कहा।

शाम हो चली थी। उनकी ओर से अनुरोध किया गया कि हम भोजन वहीं करें। भला शैतान को क्या आपत्ति हो सकती थी। हमारा परिचय बच्चों से कराया गया। बच्चे स्कूल का काम कर रहे थे। एक बच्ची ने शैतान से पूछा—"भाई जान, शुतर मुर्ग क्या होता है ?"

"डिक्शनरी में ढूंढो नन्हीं।" शैतान बोले।

इतने में नन्हें मियाँ एक कापी लाये और बोले—"मैंने अब्बा जान को एक खत लिखा है। देखिये सही है न ?"

शैतान ने गौर से खत देखा फिर बोले—"भई दूसरों का खत पढ़ना ठीक नहीं, इसलिये तुम यह अपने अब्बा जान ही को दिखलाओ।"

"कहां आ फसे ?" मैंने धीरे से कहा "चलो यहाँ से !"

दूसरे कमरे में पहुँचे। वहाँ बिलकुल अँधेरा था। स्विच आदि का पता ही न चलता था। लाचार हो अंधेरे ही में बैठ रहे। बरामदे से बुजुर्ग ने कुछ कहा शायद वे शैतान से कुत्ते के बारे में कुछ पूछना चाहते थे। शैतान चुप रहे। उन्होंने फिर पूछा। शैतान अब भी चुप रहे। जब उन्होंने तीसरी बार पूछा तो शैतान बोले — "माफ कीजिये किबला, यहाँ इतना अंधेरा है कि मैं कुछ नहीं सुन सकता।

और कमरा तुरन्त रोशनी से जगमगा उठा। खाने पर हम कुटुम्ब के अन्य सदस्यों से मिले। जब हम वापस आ रहे थे तब शैतान का मारे खुशी के बुरा हाल था।

चीड़ के वृक्षों से चाँद उदय हो रहा था। शैतान कुछ देर तक चाँद को देखते रहे फिर लम्बी साँस लेकर—"आह, चाँदनी, मुहब्बत, संगीत और हिमालय पहाड़।"

"यह हिमालय पहाड़ को तुम हर बार क्यों घसीट लेते हो ?" मैंने चिढ़कर पूछा।

"तुम्हारे तजरबे सीमित हैं, इसलिये विचार भी सीमित हैं।" शैतान ने जवाब दिया।

एक शाम को शैतान ने बताया कि कल सुबह वे लोग पिकनिक पर जा रहे हैं और हमें भी आमंत्रित्र किया गया है। सुबह तड़के हम उनके यहाँ पहुँचे। वे सब तैयार थे। बागीचे में मोटर खड़ी थी।

"किसी को मोटर चलानी आती है ?" बेगम ने पूछा।

"हाँ मुझे आती है !" शैतान ने हाथ खड़ा करके जवाब दिया। और मैं स्तब्ध था। शैतान को मोटर क्या अच्छी तरह बैलगाड़ी भी चलानी नहीं आती थी।

"तो आज तुम चलाओ, ड्राइवर बाजार गया था, वहीं जाकर मर रहा ।"

अब शैतान सिटपिटाये । बोले—"मुझे अच्छी तरह चलानी नहीं आती । बस योंही मामूली सी आती है ।"

"बाजार तक बिलकुल सीधा रास्ता है । वहाँ तक ले चलो । वहाँ ड्राइवर भी मिल जायगा ।"

"बात यह है कि मैंने थोड़ी थोड़ी सीखी है । बिलकुल मामूली सी आती है ।"

"कोई हर्ज नहीं...... आओ ।"

शैतान आगे बढ़े । मोटर को इधर उधर से सूँघा, फिर मुस्करा कर बोले—"जी बात दरअसल यह है कि मुझे अभी तक सिर्फ हैंडिल घुमाना सिखाया गया है । बाकी चीजें भी बहुत जल्द सीख लूँगा ।"

शैतान मैं और नन्हा तीनों ड्राइवर की तलाश में निकले । एक दूकान देखकर शैतान को चाक्लेट खरीदने याद आ गये । दूकान पर नोटिस लगा था—

"कुत्तों को अन्दर मत लाइये"

शैतान नन्हे से बोले—"अच्छा भई नन्हे, अब तुम जरा बाहर ठहरो । हम अभी वापस आते हैं ।"

और नन्हा मचल गया । बड़ी मुश्किल से चुप कराया । ड्राइवर को ढूँढ़ा । पता चला कि वे महाशय वापस जा चुके हैं ।

वापस पहुँचने पर हमें मालूम हुआ कि वे लोग पहाड़ी रास्ते से चले गये हैं ।

हम कार लेकर चले । आठ दस मील का रास्ता था । हम बहुत ही सुन्दर स्थान पर पहुँच गये । वहाँ कुछ झीलें भी थीं । बुजुर्गों को मछलियाँ पकड़ने का बहुत शौक था । वे पूरा साज-सामान साथ लाये थे । शैतान को मछलियां पकड़ने से कोई विशेष दिलचस्पी न थी ।

उनका खयाल था कि यदि इन्सान अफीम का एक प्याला चढ़ाकर किसी तालाब के किनारे मछलियां पकड़ने बैठ जाय तो दिन अच्छी तरह कट सकता है।

लेकिन क्योंकि बुजुर्ग को इतना शौक था इसलिये शैतान भी शरीक हो गये। हम सब कांटे पानी में फेंक कर बैठ गये। जो बोलता उसे शैतान एक लम्बी सी "शी" करके चुप करा देते।

थोड़ी देर के बाद जम्हाइयाँ आने लगीं। शैतान घास पर लेट गये और आँखें बन्द कर लीं। "तुम सो जाओ।" मैंने हमदर्दी से कहा—"जब कोई मछली फँसेगी, मैं तुम्हें जगा दूँगा।"

"तो आपको यह भी उम्मीद है। मैंने खासतौर से ऐसा तालाब चुना है जिसमें मछली तो एक तरफ रही, मेंडक भी न मिलेगा।"

"तो फिर मछलियां पकड़ने बैठे क्यों थे ?" बुजुर्ग ने पूछा।

"यों ही, जरा सुस्ताने के लिये।" यह कहकर उन्होंने आंखें बन्द कर लीं।

जरा देर बाद ही शैतान की डोर हिलने लगी—"रूफी !" मैं चिल्लाया—"डोर हिल रही है !"

वह विरक्त भाव से उठे और अङ्गड़ाई लेकर बोले—तुम चैन से सोने नहीं दोगे, और इधर यह मछलियां'''''''मालूम होता है मैंने गलत तालाब चुना था।"

शैतान की प्रेमिका खूब हँस रही थीं। शैतान की एक एक बात पर वे खिलखिला पड़तीं, लेकिन न जाने क्यों वह मुझे ना पसन्द थीं।

हम सब स्ट्राबेरी तोड़ने निकले।

इतने में हमने देखा कि शैतान की प्रेमिका अकेली जा रही हैं। शैतान मुझे छोड़ कर उनकी तरफ लपके। मैंने जितनी स्ट्राबेरी तोड़ीं,

सब खाली। पांच छः दाने हाथ में लेकर वापस लौटा। ग्रामोफोन बज रहा था और खाने की तैयारियाँ हो रही थीं। इतने में शैतान और उनकी प्रेमिका आ पहुँचे। शैतान बोले—आज मैं इतना पैदल चला हूँ और इतना थक गया हूँ कि कभी कभी मुझे यह महसूस होता था कि याद दाश्त के जोर से चल रहा हूँ।" और उन्होंने कोई तीन चार सेर स्ट्राबेरी फर्श पर उलट दीं।

"अरे!" सब चौंक कर बोले—"इतनी सारी कैसे तोड़ लीं?"

रिकार्ड बज रहा था—"आज हिमालय की चोटी पर हमने फिर ललकारा है।"

शैतान बोले—"यह सुना आपने? गाने वाला हिमालय की किसी चोटी पर चढ़ चुका है। उसने यह नहीं बताया कि कौन सी चोटी थी, कंचन चंगा, माउन्ट एवरेस्ट या कोई और। जिन चोटियों पर बड़े-बड़े भ्रमण कारी न ठहर सके, हमारा गवैया जा चढ़ा। लेकिन ऐसी एकान्त जगह से ललकारने से क्या फायदा?

बुजुर्ग स्ट्राबेरी खा रहे थे। बुरा सा मुँह बना कर बोले—"बरखुर्दार! ये तो कल की मालूम होती हैं।"

और शैतान तुरन्त मान गये कि वे मोल लाये हैं।

शाम को लौटे तो बुजुर्ग मोटर चला रहे थे। रास्ते में हमने देखा कि दो आदमी तार के खम्भे पर चढ़ रहे हैं, शायद मरम्मत के सिलसिले में।

शैतान बुजुर्ग से बोले—"यह देखा आपने? ये बेवकूफ खाहमखाह डर रहे हैं। ये समझते हैं कि आज पहली बार आप मोटर चला रहे हैं।"

"मोटर खूब तेज चल रही है।" किसी ने कहा।

"तेज क्यों न हो। घर की तरफ जो जा रही है।" शैतान बोले।

"आज की सैर कैसी रही?" किसी ने शैतान से पूछा।

"आज मैं इतने अच्छे दृश्य एक दम देख गया हूँ कि इस वक्त

कुछ नहीं कह सकता। जुगाली करके बताऊँगा।" शैतान ने जवाब दिया और बुजुर्ग इतने जोर से हँसे कि मोटर एक खम्भे से टकराते टकराते बची।

अगले दिन हम निचली सड़क पर खड़े सोच रहे थे कि आज क्या करें। इतने में एक व्यक्ति राह चलते चलते रुक गया और पूछने लगा—"क्यों साहब, मिस्टर रुफी कहाँ रहते हैं?"

रुफी ने दो फर्लांग दूर ऊँची कोठी की तरफ इशारा करके कहा—"वहाँ रहते हैं, उस कोठी में।"

सड़क से कोठी को एक टेढ़ा रास्ता जाता था। बड़ी कड़ी चढ़ाई थी। वह आदमी चढ़ाई चढ़ने लगा और दृष्टि से ओझल हो गया। थोड़ी देर में हाँपता हुआ वापस आया और रुफी को क्रुद्ध दृष्टि से देखता हुआ चला गया।

"भई ख़ाहमख़ाह नाराज कर दिया उसे। कहीं कूचए जानाँ से न आया हो।" मैंने कहा।

"अरे!" वह चौंक कर बोले—"पहले ही पूछ लेना चाहिये था, हो सकता है कोई सन्देश ही लाया हो।"

"शायद उन बुज़ुर्ग ने किसी अहम मामले पर बात चीत करने को बुलाया हो।" मैंने मुस्कराते हुए कहा। "उनको क्या पता?"

"तो तुम्हारे खयाल में किसी को पता ही नहीं। घर का घर जानता है, यहाँ तक कि वह मरियल सा कुत्ता भी तुम्हें शकको निगाहों से देखता है। उसे भी सन्देह है। अगर तुम्हारी अम्मी को पता चल गया तो मुसीबत ही आ जायगी।"

"बेशक आजाये। अर्से से मुसीबत नहींआई।" शैतान उंगलियों पर गिन कर बोले—"चार महीने हो गये हैं, कोई मुसीबत नहीं आई।"

"तो चलो, फिर यार के कूचे की तरफ चलें। अगर कुछ हुआ

तो मालूम हो जायगा लेकिन यार, ये बिल्ली चूहे, खरगोश, यह सब अला बला मुझे सख्त नापसन्द है। तुम कहना तो कभी उनसे।"

"मुझे खुद ना पसन्द है। मैं आज फिर उन बुजुर्ग को डाँटूँगा।"

"फिर डाँटूँगा— क्या मतलब ? क्या पहले कभी डाँटा था।"

"हाँ, कल भी मेरा इरादा हुआ था कि उन्हें डाँटूँ।"

हम सीधे शैतान की प्रेमिका के घर पहुंचे। बुजुर्ग बगीचे में काम कर रहे थे। हमें पता चला कि उनको पौधों आदि का भी शौक है।

"मुबारक हो।" मैंने शैतान से कहा।

बुजुर्ग ने हमें अपना जखीरा दिखाया जहाँ पर मुश्किल से दस बारह पौधे होंगे। शैतान ने बगीचे से पौधे उखाड़ उखाड़ कर जखीरे में लगाने शुरू कर दिये। मैंने टोका तो बोले—"जखीरे की इज्जत रख रहा हूँ। यहाँ कुछ तो रौनक होनी चाहिए।

चलते समय एक ब्रुश उठाकर शैतान ने बुजुर्ग को दिखाया, जिसके आधे बाल काले थ आधे सफेद। कहीं कहीं से झड़ भी गये थे। बोले—"किबला, यह ब्रुश बूढ़ा होता जा रहा है। कुछ कुछ गञ्जा भी हो चला है।"

रास्ते में शैतान ने मेरे कान में कहा—"आज शाम को सिनेमा में बुलाया है। वह पहले शो में आयेंगी। जरूर चलेंगे।"

"तुम अकेले ही जाना। भला मैं क्या करूँगा।" मैंने विरक्त भाव से कहा।

"तुम जरूर चलोगे।"

तीसरे पहर से ही तैयारियाँ शुरू हो गईं। कहने लगे—"आज काला डिनर सूट पहनूँगा।"

मैंने पूछा—"क्या डिनर में जा रहे हो ?"

बोले—"कुछ भी कहो। आज जरूर काला सूट पहनूँगा और काली बो भी लगाऊँगा।"

सूट पर इस्त्री की गई। काले मोजे तुरन्त बाजार से खरीदे गये। काले जूते पर नौकर दोपहर से पालिश कर रहा था।

जब शैतान सूट पहनने लगे तो सिनेमा में कुल पन्द्रह मिनट बाकी थे। मैं बिलकुल तैयार था। एकाएक शैतान ने एक जोरदार चीख मारी—"काली बो कहाँ गई !"

"तुमने निकाली भी थी !" मैंने पूछा।

"हाँ, निकाली थी। बिस्तर पर रक्खी थी।"

अब काली बो की तलाश शुरू हुई। जरा सी देर में बिस्तर फर्श पर पड़ा था और पलंग बिस्तर पर। मैं और शैतान पलंग के नीचे घुसे हुए दियासलाई जला जला कर काली बो ढूँढ़ रहे थे। शैतान ने बेखबरी में उठना चाहा। धड़ाम से पट्टी सिर में लगी। सिर पकड़ कर बैठ गये। उनके लिए स्प्रीन तलाश करके दी।

"टाई लगा लो, या कोई और बो सही।"

"गजब खुदा का, काले सूट पर काली बो न हो। डूब मरने की बात है। इससे तो यह अच्छा है कि तहमद बांध लिया जाय।

हम फिर तलाश में लग गये। यहाँ तक कि कमरे की एक एक चीज़ बरामदे में पहुँच गई। अब सन्दूकों की बारी आई। सिनेमा का वक्त कभी का हो चुका था लेकिन शैतान बार बार यही कहते थे कि खबरें हो रही होंगी, कार्टून हो रहा होगा।

"अच्छा बाज़ार से हो कर चलते हैं। रास्ते में खरीद लेंगे।" मैंने सलाह दी।

"हरगिज नहीं !" शैतान मचल गये ।

"अरे ! यह क्या लटक रही है तुम्हारी जेब से । लानत है तुम पर ।"

जब हम तैयार हो कर बाहर निकलने लगे तो ऐसा मालूम होता था जैसे कोठी में अभी अभी चोरी हुई है और चोरों ने खूब इतमीनान से बैठ कर अपनी पसन्द की चीजें चुराई हैं । भागम भाग सनेमा पहुँचे । इनटर वेल होने वाला था । अन्दर पहुँच कर शैतान अपनी प्रेमिका को खोजने लगे, लेकिन अंधेरे में कुछ पता न चला लाचार हो दरवाजे के पास ही बैठ गये । इतने में क्या देखते हैं कि एक महिला घबराई हुई आई और इधर उधर जगह तलाश करने लगीं । गेट कीपर ने उन्हें शैतान के बराबर वाली कुर्सी पर बैठा दिया ।

" भाई, यह तो हमें भी मात कर गई ।" शैतान बोले ।

हम दोनों ने उनकी ओर देखा । वह शैतान की प्रेमिका नहीं थी, कोई और थीं ।

अब फिल्म छोड़ छाड़ कर शैतान उन्हीं को देखने लगे । थोड़ी देर बाद वे बोले आप मेरे दस्तानों पर बैठ गई ।"

वह उठने लगीं ।

"न न.......उठिये मत........तकलीफ न कीजिये । मैंने तो यौंही कह दिया था ।"

उन्होंने दस्ताने शैतान को देदिये । शैतान बोले—"आप के हाथ बर्फ से ठंडे हैं । आप ये दस्ताने पहन लीजिये, नहीं तो सर्दी लग जाने का डर है "।

" जी नहीं ! धन्यवाद !"

उन्हों ने अपने चमड़े के बेग से कुछ निकाला और धीरे धीरे खाने लगी ।

"यह अकेले ही अकेले।" शैतान बोले।

पहले तो वह शर्माईं फिर उन्हों ने एक चाक्लेट रफी के हाथ में देदिया।

"मेरे साथ यह भी हैं, इनका हिस्सा?"

उन्हों ने एक और टुकड़ा देदिया। शैतान दोनों टुकड़े मुँह में रखकर बोले—"बड़े मजेदार चाकलेट हैं। आपने किस दुकान से लिये थे?"

वह खामोश रहीं। शैतान ने दो चार इसी तरह के और सवाल पूछे तो उठ कर अगली पंक्ति में जा बैठीं। शैतान भी उठे और ठीक उनके पीछे जा बैठे हलाँकि इधर उधर काफ़ी सीटें खाली थीं।

शैतान आगे झुक कर बोले—"अगर तकलीफ़ न हो तो कोट का कालर नीचे कर लीजिये। मुझ को कुछ नज़र नहीं आ रहा है सिवाय आपके। शुक्रिया, और पल्लू भी।"

उन्हों ने शैतान की फ़रमायश पूरी कर दी।

"और अगर आप एक सिकेन्ड के लिये अपना रूमाल दे दें तो मैं ऐनक के शीशे साफ करलूं। यकीन कीजिये वापस जरूर दे दूँगा।"

उन्होंने मुस्करा कर रूमाल दे दिया और शैतान कोई आध घन्टे तक ऐनक के शीशे साफ करते रहे। ऐसा लगता था मानो शीशे खुरच रहे हों।

रूमाल वापस मिलते ही वह एक और सीट पर जा बैठवीं शैतान ने फिर पीछा किया। आखिर तंग आकर वे दरवाजे के पास किनारे की सीट पर बैठ गईं शैतान तुरन्त उनके पीछे आ बैठे और बोले—"अब मुझे डर है कि कहीं आप बाहर न चली जायँ।"

और वह मुस्करा दीं। न केवल मुस्कराईं बल्कि हँस भी दीं।

इनटर वेल में शैतान ने उनसे बातें भी कीं।

और मैं यह सोच रहा था कि शैतान जैसा 'हवन्नक़' आदमी प्रेमी के रूप में इतना सफल कैसे रहता है। छोटा सा चेहरा लम्बी गर्दन, कोई सात फिट लम्बा क़द, खजूर की तरह दुबले होंटों पर वह मक्कारसी मुस्कराहट, नाक पर मोटे मोटे शीशों की ऐनक जिस के बिना वह अपने आपको भी नहीं देख सकते—अपनी अपनी हिम्मत है।

जब हम सिनेमा से वापस आरहे थे तो शैतान ने रोनी आवाज़ में कहा—"आज वह चोट खाई हैं कि बयान नहीं कर सकता। किस तरह कहूँ कि ...यानी....।"

"यानी आज फिर आशिक़ हो गये हो।"

"हाँ, आशिक ही नहीं, बस समझ लो फ़रेश्ता हो गया हूं, फ़िदा होगया हूँ, मर मिटा हूँ...।"

"और वह चन्द घन्टे पहले उन मोटी ताज़ी महिला पर जो आशिक थे वह?"

"वह मुहब्बत थोड़ी ही थी, वह तो सौदाय खाम था बल्कि खयाले खाम था। इस बार तो मैं सचमुच....भई तुम यों मेरा दिल न दुखाया करो, नहीं तो मैं रोदूंगा ...।"

"रोपड़ो...आज यह हसरत भी निकल जाय। आज तक मैंने भी तुम्हें रोते हुए नहीं देखा।"

"अब रोना ही रोना है ज़िन्दगी में, बहुत हँस चुके" शैतान मुंह बना कर बोले। कुछ देर खामोशी रही।

"कौन हैं ये?" मैंने पूछा।

और शैतान ने उनकी सातों पीढ़ियों का हाल बता दिया।

"वह हर रोज़ अपने अब्बा के साथ क्लब जाती हैं। अब हम भी कल से रोज़ क्लब चला करेंगे।"

शैतान मुंह उठा उठा कर इधर उधर देखने लगे। शायद वे चाँद को खोज रहे थे।

"चाँद आज नहीं निकलेगा। आज तारों को देख कर ही सब्र करलो। मैं क्लब इस शर्त पर चलूँगा कि तुम क़सम खाओ कि फिर आशिक नहीं होगे।"

"अब मैं कहाँ आशिक हो सकता हूँ। मुझ में दोबारा आशिक होने की ताब ही कहाँ हैं। अब तो क़िस्मत ने फैसला कर दिया है। जिन्दगी की मंजिल क़रीब आ पहुँचीं है ...... आह! तारे मुहब्बत और हिमालय पहाड़।" यह कह कर उन्होंने ऊंट की तरह ज़ोर ज़ोर से साँस ली।"

"सचमुच' हिमालय पहाड़ का क़सूर है।" मैंने कहा—"बेचारा हिमालय पहाड़।"

चार बजे क्लब पहुँचे। वह महिला बल्ला लिये टेनिस कोर्ट में खड़ी थीं। हमें देखकर मुस्कराईं। शैतान ने आगे बढ़ कर पूछा—*"आप खेल चुकीं क्या?"*

"खेलती कैसे? कोई और खिलाड़ी तो था ही नहीं, अकेली थी।"

"मैंने समझा शायद सिंगलर खेल रही थीं।"

मैंने उनको ग़ौर से देखा और शैतान की रुचि पर मन ही मन उन्हें धिक्कारा। आखिर किस हकीम ने सलाह दी है कि जिसे देख पाओ तुरन्त आशिक़ हो जाओ।

इतने में उनके पिता आगये। ये वहीं सज्जन निकले जिनको हम सुक़रात कहा करते थे। क्योंकि वे बड़ी ठोस और विद्वता पूर्ण बातें करते थे। वे हमें वाजिबी तौर से ही जानते थे।

शैतान मेरे कान में बोले—"ये टेनिस के आशिक़ हैं। अब इन से दोस्ती तुम्हारा फ़र्ज़ है।"

और मैं उनके साथ खूब टेनिस खेला और शैतान तथा वे दोस्त बन गये।

हम सब हाल कमरे में बैठे थे। सुक़रात साहब नौकरों की शिकायत कर रहे थे। नौकरों ने उनका टाँगा बिलकुल ही तोड़ दिया था। पहाड़ पर यह टाँगा भी एक अजीब सी चीज थी।

और कमबख्तों ने यह कहा कि टाँगा कहीं बाहर नहीं गया, बस खड़ा खड़ा एक दम टूट गया और टुकड़े टुकड़े होकर गिर गया। बताइये यह कैसे मान लूं ?"

"मुमकिन है टाँगे का हार्ट फेल होगया हो।"

उन्हों ने शैतान को सिग्रेट पेश किया। शैतान ने पहले तो इनकार किया लेकिन बहुत कहने पर लेकर सुलगाली और ऐसा प्रकट किया जैसे ज़िन्दगी में पहली बार यह पाप कर रहे हैं। (वैसे शैतान हर रोज़ डेढ़ दो टिन सिग्रेट फूंक डालते हैं।)

अभी दो ही चार कश लिये होंगे कि चेहरा परेशान सा बना लिया, आँखे लाल करलीं और घबरा कर उठा खड़े हुए।

"क्या हुआ ?" सुक़रात साहब ने पूछा।

"ग़ज़ब हो गया। सिग्रेट चढ़ गई।" शैतान बोले—"चक्कर आ रहे हैं।"

"तो तुम सचमुच सिग्रेट नहीं पीते ?"

"जी नहीं।"

"अच्छा, तो यह बात थी।" सुक़रात साहब रोब डालना चाहते थे। शैतान को पानी पिलाया गया, खुशबू सुंघाई गई। इतने में इब्ने बतूता साहब (जो अपने को हाकीम भी समझते थे) एक नारंगी उठा लाये और बोले—"इसे खाइये, इस से दिल में ताज़गी आयेगी, दिमाग़ में तरावट आयेगी और तबियत में मसर्रत पैदा होगी।"

शैतान नारंगी खाकर होश में आये और बोले—" नारंगी न सिर्फ दिल व दिमाग़ को तरावट पहुँचाती है बल्कि जबड़ों को ताक़त, गुर्दों को हिम्मत और तिल्ली को तरावट पहुँचाती है। जिगर का वर्म दूर करती है, फेफड़ों को गर्मी पहुँचाती है और बदन में ख़ालिस ख़ून पैदा करती है। कँवल के लिये अक्सीर है, आँखों में रोशनी बढ़ाती और नज़ला ज़ुकाम के लिये तो इस से बढ़कर कोई फल ही नहीं है जो फ़ायदा पहुंचाये।"

आखिर शैतान की प्रेमिका ने उनका निमंत्रण स्वीकार कर लिया। पहर को चाय पर आने का वायदा किया।

काफी इन्तजार के बाद साइकिल की घन्टी की आवाज हमारे कानों में आई। हम बाहर गये तो देखा वह साइकिल एक तरफ रक्खे खड़ी हैं। जैसे झिझक रही हों आते हुए।

"अन्दर तशरीफ ले आइये!" शैतान बोले—"आपकी साइकिल सुरक्षित रहेगी। लैम्प और पम्प भी कोई नहीं चुरायेगा।"

मैंने उनके लिबास और बनाव सिंगार को देखकर एक बार फिर शैतान को धिक्कारा। उधर शैतान थे कि बिछे जा रहे थे। अजीब उतावलापन दिखा रहे थे।

बातों बातों में न जाने इतिहास का विषय कहाँ से आ गया। देर तक बादशाहों, लड़ाइयों और नीतियों पर बहस होती रही। वह बोली—"मुझे दो आदमी बहुत पसन्द हैं।"

"दूसरा कौन है?" शैतान ने पूछा और वह शर्मा कर रह गई।

उन्होंने हमें बताया कि वह कलकत्ते में एकअर्से तक रही हैं। अब शैतान ने जो कलकत्ते की तारीफें शुरू की हैं तो मैं तङ्ग आ गया। जिस चीज का जिक्र आता शैतान तुरन्त कहते कि कलकत्ते में यह कहीं अच्छा है।

पहाड़ी दृश्यों की बात हुई तो शैतान बोले कि कलकत्ते के आस-पास इस से कहीं अच्छे दृश्य मिलते हैं। ठंड की बात चली तो शैतान ने इस ढङ्ग से कलकत्ते का जिक्र किया जैसे बारह महीने वहाँ बर्फ पड़ती है।

"यहाँ चाँद कितना बड़ा और चमक दार निकलता है।" मैंने कहा।

"लेकिन कलकत्ते का चाँद, कलकत्ते में इससे कहीं बड़ा और चमकदार चाँद निकलता है।"

जब शाम को वह चलने लगीं तो शैतान बोले—"देखिये, अगर घर पहुंच कर आपका चमड़े का बेग न मिले तो यह याद रखिये कि आप उसे यहाँ नहीं लाईं थीं।"

रविवार को खेल कूद हुए। शैतान कार्यकारिणी समीति के सदस्य थे। उन्होंने बहुत से टिकट बेचे थे। बहुत बड़ा मजमा था। खूब रौनक थी। एक साहब भागे-भागे आये और शैतान से पूछने लगे—"आप हाकी खेलेंगे?"

"जी नहीं।"

"आपने वायदा तो किया था।"

"ठीक है। लेकिन इस वक्त जी नहीं चाह रहा है।" और फिर मेरी ओर देखकर बोले—"कितना वाहियात खेल है। कोई यकीन कर सकता है कि बाईस अच्छे भले आदमी एक छोटी सी गेंद के लिये पागलों की तरह भाग रहे हैं, एक दूसरे के पैर तोड़ रहे हैं··हुँह।"

हाकी के बाद घोड़ों की दौड़ शुरू हुई जिसमें छलाँगे लगानी पड़ती थीं। शैतान को भी पकड़ लिया गया। पहले तो एक बहुत कटखना घोड़ा शैतान को दिया गया जिसको देखते ही उनके होश उड़ गये और उन्होंने साफ इनकार कर दिया कि वह घोड़े के पास भी न फटकेंगे।

इब्नेबतूता साहब ने कहा—"रूफी साहब, बुज़दिल मत बनिये।"

शैतान ने कहा—"साहब, यहाँ जान का खतरा है और थोड़ी देर की बुज़दिली उम्र भर की मौत से कहीं अच्छी है।"

यह निश्चय हुआ कि कोई और घोड़ा लाया जाय। आखिर एक घोड़ा लाया गया जो बछेड़ा अधिक था और घोड़ा कम। शैतान बोले—"मैं बचपन से घुड़सवारी का प्रेमी हूँ लेकिन, आज तक कोई घोड़ा राज़ी नहीं हुआ।"

"यह घोड़ा राज़ी है।" कई आवाजें आईं।

"लेकिन मैंने आज तक सवारी नहीं की। आज पहला मौक़ा है।"

"यह भी नया बछेड़ा है। इस पर आज तक कोई सवार नहीं हुआ। इसका भी आज पहला मौक़ा है।"

"लेकिन यह बहुत छोटा है।" शैतान बोले।

किसी ने एक न सुनी और शैतान को ज़बरदस्ती घोड़े पर बैठा दिया गया। उनके दोनों पांव ज़मीन को छू रहे थे। ऐसा लगता था जैसे शैतान गधे पर बैठे हों।

दौड़ शुरु हुई। देखने वालों को ऐसा लगता था जैसे शैतान का घोड़ा नहीं दौड़ रहा है बल्कि वे स्वयं दौड़ रहे हैं। एक जगह जो कूद फाँद हुई तो क्या देखते हैं कि शैतान एक दम रुक गये। वहीं खड़े रह गये। ध्यान से देखा तो पता चला कि शैतान कदम जमाये ज़मीन पर खड़े हैं और घोड़ा नीचे से निकल गया है। शैतान बिजयी घुड़ सवार की भाँति भीड़ की ओर लौटे। लोगों का मारे हँसी के बुरा हाल था। किसी ने बताया कि एक लड़की हँसते-हँसते बेहोश हो गई है। शैतान तुरन्त उस ओर भागे। जब आध घन्टे तक न लौटे तो मैं उन्हें ढूँढ़ने निकला। क्या देखता हूँ कि एक पेड़ के नीचे शैतान एक लड़की से घुल मिल कर बातें कर रहे हैं। मुझे देख कर बुला लिया। परिचय कराया। यह वही कुमारी जी थीं जो शैतान पर बेहोश हो गई थीं।

इतनी जल्दी वह और शैतान कैसे दोस्त बन गये, यह शैतान का 'व्यापारिक रहस्य' है।

थोड़ी देर के बाद शैतान मेरे पास बैठे कह रहे थे—"अब तुम ही बताओ मैं क्या करूँ ?

"आत्म हत्या।" मैंने झल्ला कर कहा।

वह और भी मुँह बना कर बैठ गये।

मैंने दिल खोल कर शैतान को डांटा, धमकाया, चेतावनी दी, धिक्कारा, पर उन पर कोई असर न हुआ।

"मैं कसम खाकर कहता हूँ यह मेरी आखिरी मुहब्बत है—पहली और आखिरी मुहब्बत ! आगे अगर मैं कभी किसी से इश्क करु तो जो चोर की सज़ा, वह मेरी सज़ा। उस लड़की के लिये मेरे दिल में हमदर्दी का तूफान पैदा हो गया है। उसके लिये मेरे दिल में न सिर्फ बेहद मुहब्बत पैदा हो गई है बल्कि गज़ब की हसरत और इज्जत और..................।"

अच्छा अच्छा, सुन लिया।"

अगले दिन शैतान अपनी नई प्रेमिका से मिलने गये और मुँह बनाये लौटे। बोले—'वह आज वापस जा रही हैं।'

'अच्छा हुआ।' मैंने मन में कहा।

'और आज एक अधेड़ अवस्था की महिला से खूब लड़ाई हुई।' वह बोले।

मैंने पूछा, कहाँ हुई और कैसे हुई तो शैतान ने बताया कि प्रेमिका के घर वे भी आमंत्रित थीं। कोई बहस छिड़ गई। शैतान ने जरूर उलटी सीधी हाँकी होगी जिससे वे खफ़ा हो गईं।

"तो अब क्या इरादा है ?"

'उन्हें पूरी-पूरी सजा दी जाय।' शैतान बोले।

'कैसे!'

'उनसे मुहब्बत की जाय।'

'एक अधेड़ उम्र की औरत से मुहब्बत करोगे!... अफ़सोस है।'

'वह अधेड़ उम्र की जरूर हैं लेकिन 'मिस' हैं।'

मैंने शैतान को बहुत समझाया लेकिन वह हमेशा की तरह बेकार सिद्ध हुआ। शैतान ने एक प्रेम पत्र उन अधेड़ कुमारी जी को लिखा जिसमें उनकी खूब तारीफें कीं और अन्त में लिखा—

'मेरी ज़िन्दगी उसी तरह अकेली है जैसे अकेला जूता, और उसी तरह बेकार है जैसे समुद्र पर वर्षा। मैं अक्सर रस्सी का फंदा हाथ में लेकर किसी मुनासिब दरख्त की तलाश में मारा मारा फिरता हूँ, लेकिन मेरा दुर्भाग्य कि कोई मुनासिब दरख्त नहीं मिलता.......।'

इसी प्रकार के कुछ और प्रेम पत्र लिखे। फल स्वरूप एक दिन वह सच मुच मिलने आ गईं। अब शैतान बड़े घबराये और शैतान से अधिक मैं घबराया। वह शैतान पर सचमुच आशिक हो गई थीं और उनका इरादा शादी करने का था। दोनों को बातें करते छोड़ कर मैं भीतर कमरे में जा छिपा और शीशों से देखने लगा।

"वह बोलीं—तुम्हारे खत कितने प्यारे हैं। एक-एक शब्द प्रेम में डूबा हुआ है। तुमने मुझे लिखा था कि जब तुम दूर होती हो तो मैं उदास रहता हूँ, विरक्त रहता हूँ, जिन्दगी से तंग आ जाता हूँ.......।"

शैतान बात काट कर बोले—'और आगे यह लिखना भूल गया कि जब तुम पास होती हो तब भी कोई फर्क नहीं पड़ता। तब भी वही हालत रहती है।'

आह! शादी कितना पवित्र सम्बन्ध है।' वह बोलीं—'जरा तारों की तरफ़ तो देखो, कितने सुन्दर हैं।'

'बुरे नहीं हैं ।' शैतान बोले—'एक तो ये जरूरत से ज्यादा हैं दूसरे किसी खास तरतीब से सजाये नहीं गये । इससे अच्छी तरतीब भी हो सकती थी ।'

'तुम्हारी बातें कितनी मीठी हैं । जब मैं यहाँ आई थी तो मेरे सिर में दर्द था; अब गायब हो चुका है ।'

'गायब नहीं हुआ ।' शैतान अपने माथे पर हाथ रख कर बोले—अब वह यहां आ गया है ।'

बड़ी मुश्किल से वे वापस गईं । चलते समय आग्रह करने लगीं कि शैतान के घर वालों का पूरा पता उनको बता दिया जाय जिसमें कि वे स्वयं पत्र व्यवहार द्वारा सब बातें तय कर लें ।

और मैंने शैतान को खूब डांटा—"और आशिक होते फिरो सब पर।"

सुबह नाशते पर शैतान मुंह लटकाये हुए आये। हाथ में एक तार था ।

"कुशल तो है ?" मैंने घबरा कर पूछा ।

"खुद पढ़ लो ।"

मैंने जल्दी से तार पढ़ा, लिखा था—"यह चौथा तार है, तुरन्त लौट आओ ।

"और पहले तीन तार कहाँ गये ?"

"ये रहे ।" शैतान ने तीनों तार दे दिये । शैतान को उनके इम्तहान के सिलसिले में बुलाया जा रहा था । नाशते पर हम दोनों की क़ान-फ्रेन्स हुई । तय हुआ कि तुरन्त वापस चलें ।

कुछ ही घन्टों के बाद हम लारी में बैठे थे और लारी मैदानों की ओर भागी जा रही थी । पहाड़, खतम हुए, पहाड़ियां आईं । छोटे-

छोटे टीले आये और फिर गङ्गा और सिंधु के उपजाऊ मैदान। शैतान रास्ते भर हसरत की निगाहों से घूम-घूम कर देखते रहे। शाम को हमें ट्रेन मिली।

शैतान पूर्ववत पहाड़ देख रहे थे।

जब ट्रेन चली तो शैतान ने एक ठंडी आह भरी और बोले—"मुहब्बत, संगीत और हिमालय पहाड़।"

और ऊंट की भांति ज़ोर ज़ोर से सांस लेने लगे। मैं चुप रहा।

एक बार फिर उन्होंने दोहराया—"आह! चांदनी, मुहब्बत, और हिमालय पहाड़।"

मैं फिर भी चुप रहा।

—:०:—

शैतान और ताश का खेल

'तुरुप चाल।' शैतान बोले।

बड्डी और मैं एक दूसरे की ओर देखने लगे। बड्डी ने आंख मारी और बोला—'रूफी, क्या बजा है!'

'चार बजे हैं। पत्ते डालो।' शैतान ने कहा।

'कैसी अच्छी गाय जा रही है सड़क पर……।' मैंने खिड़की की ओर इशारा करते हुए कहा।

'अभी देखते हैं, तुम पत्ते डालते जाओ।'

'अरे रूफी। यह कौन है सोफे के पीछे!' बड्डी ने घबरा कर कहा। शैतान ने पीछे घूमकर देखा और हमने तुरन्त पत्ते मिला लिये।

'लानत है। तुम खेलते हो या रोते हो!' शैतान ने पत्ते पटक दिये और ताव खाकर बोले—'अच्छा इस बेईमानी की सजा यह है कि निकालो रुपये……।'

'यार यह तो जुआ हो गया।'

'नहीं, जुआ नहीं, ब्रिज की एक किस्म है।' शैतान ने कहा। मेरी जेब में गिनती के कुछ रुपये थे। उधर बड्डी भी शायद खुक था। हम दोनों ने बड़ी विनम्रता से कहा—'उधार रहे।'

थोड़ी सी बहस के बाद शैतान बेजार होकर उठे और चाय के संबंध में आवश्यक आदेश देने चले गये।

शैतान, बड्डी और मैं ताश खेल रहे थे। यह खेल हमारा आविष्कृत था। कटथ्रोट और कोट पीस को जमा कर दो पर भाग दे दिया गया था। अक्सर बाजी लगती थी और अक्सर मैं तथा बड्डी हारते थे।

बड्डी एक मोटा ताजा अमेरिकन था जो संयोग से हमें सिनेमा में मिल गया और बहुत जल्द गहरा दोस्त बन गया। कई वर्ष से भारत में था। भारतीय भोजन पर आशिक था। कभी-कभी हम उसे आड़ी टोपी, शेरवानी और चूड़ीदार पायजामा पहनाकर मुशायरों में ले जाते और कभी-कभी कुर्ता, ढीला पाजामा और जवाहर बन्डी पहना कर कवि सम्मेलनों में ले जाते।

बड्डी हर दूसरे दिन मिलने आता। आते ही तुरन्त चार सवाल पूछता। ये सवाल इतने बँधे सधे और रटे हुए थे कि आज तक उनमें एक अक्षर का भी परिवर्तन न हुआ था। पहला सवाल—'आज क्या बना है!' दूसरा सवाल—'कोई ताजी खबर!' तीसरा सवाल—'शहर की सब से अच्छी पिक्चर कौन सी है!'

चौथा सवाल—'मैं पहले से कुछ मोटा तो नहीं हो गया हूँ!'

इसके बाद वह कम से कम एक और अधिक से अधिक कई चुटकले सुनाता।

हम लोग चाय पीने लगे। बड्डी बोला—'एक बार एक सिपाही का कोर्ट मार्शल हो गया। उसने घर की चिट्ठी लिखते समय शायद इसका जिक्र कर दिया। घर से पत्र आया। लिखा था—

'चिरंजीवी ..... खुश रहो। कोर्ट मार्शल के सम्बन्ध में पढ़ा। मन बड़ा प्रसन्न हुआ। भगवान की बड़ी कृपा है जिसने यह दिन दिखाया

अब हम भगवान से मनाते हैं कि तुम बहुत जल्द फील्ड मार्शल बन जाओ।'

उसने दूसरा चुटकुला सुनाया।

'एक सार्जेन्ट नये रंगरूटों को परेड करा रहा था। उसने सब को एक लाइन में खड़े होने को कहा। पंक्ति सीधी न बनी। वह बिगड़ गया और चिल्ला कर बोला—'नालायको! इसे लाइन कहते हो! सब के सब यहां जल्दी से दौड़ कर आओ और देखो की कैसी टेढ़ी और तिरछी लाइन है।' खैर, नई लाइन बनी। सार्जेन्ट ने कहा—'अपने दाएँ पांव हवा में उठाओ।' सब ने अपना दायां पांव उठा दिया। एक रंगरूट ने भूल से बांया पांव उठा दिया और लाइन में एक जगह दायां और बायां पांव इकट्ठे हो गये। सार्जेन्ट जोर से चीखा—'यह कौन गधा है जो दोनों पाँव हवा में उठाये खड़ा है!

'एक और हो जाय बड्डी।' शैतान ने फरमायश की।

'हमारे यहाँ एक बड़ा मशहूर आदमी हुआ है।' बड्डी बोला—'इतना मशहूर कि मैं उसका नाम भूल गया। वह बेहद मसखरा था। नब्बे वर्ष की आयु में भी वह बच्चे के समान उछलता कूदता था। एक बार पार्टी में उसने एक अत्यन्त सुन्दर लड़की देखी जिसे सब बड़ी बुरी तरह घूर रहे थे। वह कुछ देर टकटकी बाँधे देखता रहा, फिर ठंडी साँस खींच कर बोला—'काश, आज मैं सत्तर वर्ष का होता।'

अब बड्डी ने शैतान से उनके प्रेम के बारे में पूछा।

"आज का दिन कैसा रहा? गये थे उनके यहाँ?"

"हाँ, गया तो था। लेकिन क्या बताऊँ। कोल्हू के तेली की तरह हूँ। यानी तरक्की जीरो के बराबर है। उधर उस लड़की का ख्याल मुझ पर बुरी तरह सवार है, और उस लड़की को देख कर मुझे वह अमर और प्रसिद्ध चित्र याद आ जाता है जो शायद मैंने कहीं देखा

था। बस यह समझ लो कि मुझे इन दिनों मुहब्बत से मुहब्बत होती जा रही है और नफरत से सख्त नफरत हो गई है।'

'लेकिन पिछले हफ्ते तो तुम बिलकुल भले चंगे थे।' मैंने कहा।

'हाँ' मैं सिर्फ इस मङ्गल से आशिक हुआ हूं। खुदा ऐसा वक्त किसी भी दोस्त को न दिखाये। मुसीबत यह है कि मैं खुद निकम्मा हूं... यहाँ तक कि अगर मैं लड़की होता तो अपने आप को कभी पसन्द न करता।'

'अगर हम लड़की होते तो तुम्हें पसन्द कर ही लेते।'

शैतान बोले—'लेकिन वह लोग मुझे जरा खातिर में नहीं लाते।'

'तो तुम एम० ए० पास क्यों नहीं कर लेते?' बड्डी बोला।

'अब करना ही पड़ेगा!' लेकिन इस वक्त एम० ए० होना जरूरी नहीं है बल्कि सर्विस का मिलना जरूरी है। मुझे अर्से से जङ्गल विभाग पसन्द है। मेरे ख्याल में वहाँ कोशिश की जाय।'

'क्या तन्खवाह होगी?'

'पाँच रुपये रोटी कपड़ा।' शैतान बोले।

'लेकिन तुम अर्जी में लिखोगे क्या, कोई खास सनद तो है नहीं न कोई तजरबा है।'

'यह लिखेंगे कि जङ्गलों से प्रेम है। पेड़ों को पहचान सकता हूँ, पेड़ों पर चढ़ सकता हूँ, उन्हें काट सकता हूँ और जङ्गलों में काफी घूमा हूँ! क्या यह काफी नहीं है?'

'तो क्या तुम सचमुच गम्भीर हो?' मैंने पूछा।

'तो और क्या मजाक कर रहा हूँ, अफसोस है।'

'लेकिन डाक्टरी परीक्षा भी तो होगी।'

'होती रहे।'

'मेरा मतलब है तुम्हारी आंखें जरा''''''।' मैंने उनकी मोटे शीशों वाली ऐनक की तरफ इशारा किया।

'तो आँखों की परीक्षा कराये लेते हैं कल सही।' शैतान बोले—निश्चय हुआ कि कल परीक्षा हो और इसके बाद जंगल विभाग में अर्जी भेजा जाय।

मैं सुबह तड़के साढे दस बजे उठा और शैतान को कच्ची नींद से जगाया। तय हुआ कि डाक्टर शाहिद साहब को फ़ोन करके परीक्षा का समय पूछा जाय।

इसके बाद डाक्टर शाहिद को फोन किया गया। जवाब मिला 'पहले स्वयं आकर समय लीजिये फिर मुआयना होगा।'

अगले दिन डाक्टर शाहिद के यहां पहुंचे। मुआयाना शुरू हुआ। शैतान की ऐनक उतार ली गई और वे मेरा सहारा लेकर खड़े हुए नहीं तो शायद गिर ही पड़ते।

'सामने देखिये और आखिरी अक्षर पढ़िये।' डा० साहब ने कहा।

'कौन सा अक्षर?' शैतान ने चकित हो पूछा।

'आखिरी लाइन का आखिरी अक्षर।'

'कौन सी लाइन?'

'इस तख्ते की आखिरी लाइन।'

'कौन सा तख्ता?'

'सामने की दीवार पर टंगा हुआ तख्ता।'

'कौन सी दीवार?' शैतान ने हैरान होकर पूछा।

और मुआयना खतम हो गया। डा० साहब ने लिख दिया कि निगाह इतनी कमजोर है कि इसे निगाह कहा ही नहीं जा सकता।

शाम को बड्डी आया। आते ही उसने पूछा—'क्या बना है?'

'शामी कबाब और मीठे टुकड़े।' उसे बताया गया।

बड्डी की राल टपकने लगी। बोला—'कोई ताजा खबर ?'

उसे शैतान की आँख की परीक्षा का हाल बताया गया।

तीसरे प्रश्न का उत्तर दिया गया —'तूफानी घोड़ा उर्फ बदनसीब बिल्ली।' शहर की सबसे अच्छी पिक्चर है।'

अब अन्तिम प्रश्न था मोटापे के सम्बन्ध में। सो उसे विश्वास दिलाया गया कि वह कदापि और मोटा नहीं हुआ। जितना मोटा था उतना ही है।

इसके बाद चाय का दौर शुरू हुआ।

'आज बिस्कुट कुछ कड़े हैं।' मैंने एक बिस्कुट चबाते हुए कहा।

'सचमुच।' शैतान बोले—'यह बिस्कुट इतना कड़ा है कि अगर बड्डी के सिर पर मारा जाय तो बिस्कुट टूट जाय।'

'मेरा भी यही विचार है।' बड्डी बोला।

'आज का चुटकुला ?'

'कोई खास चुटकुला याद नहीं। हां, पिछले साल जब मैं कलकत्ते में था तब मेरे पड़ोस में चार गधे बंधते थे।। वे ठीक चार बजे बोलते थे और ऐसे ठीक समय में बोलते थे कि उनकी आवाज पर मैं अपनी घड़ी मिला लिया करता था।

'तो आजकल तो वहाँ सिर्फ तीन गधे रह गये होंगे।' शैतान बोले।

बड्डी कुछ शर्मा सा गया।

'आसाम में बहुत वर्षा होती है! जब मैं वहाँ था। तो चिरापूंजी के पास मुझे एक आदमी मिला। मैंने बातों बातों में पूछा कि यहाँ साल में कितने इन्च बारिश होती है ?' वह बोला—'साहब पता नहीं मैं चालीस वर्ष का हूँ। जब से होश संभाला है यहाँ वर्षा हो रही है।'

बड्डी को शैतान के प्रेम की विवशता पर दुःख हो रहा था। यह विचार हमें उदास किये देता था कि यदि बहुत जल्द कोई प्रबन्ध न किया गया तो शैतान की प्रेमिका को कोई और ले जायेगा।

अन्त में बड्डी बोला—'यह नौकरी वगैरह सब फजूल बातें हैं। कम से कम हमारे देश में तो लोग नौकरी की जरा भी परवाह नहीं करते, आदमी देखते हैं। तुम किसी तरह उनके कुटुम्ब में सर्वप्रिय हो जाओ। उन पर यों छा जाओ कि वे तुम्हारे नाम की माला जपने लगें। अपना प्रेम सिर्फ लड़की पर प्रकट करो। हर एक से मत कहते फिरो सिवाय हम दोनों के। यह मत करो कि कागों हाथ सन्देसे और चिड़ियों हाथ सलाम। (यह मुहावरा उन मुहावरों में से था जो हमने बड्डी को याद कराये थे। बड्डी ने आज पहली बार एक मुहावरा सही जगह पर इस्तेमाल किया था) खूब कसरत किया करो, हलका भोजन करो, फल और सब्जियों का इस्तेमाल जारी रक्खो और विश्वास करलो कि तुम जरूर सफल होगे।'

बड्डी का नुस्खा सचमुच बड़े काम का और रामबाण प्रतीत होता था। निश्चय हुआ कि अवश्य आज़माया जायगा।

अगले दिन से शैतान ने बड़े जोर शोर में उनके यहाँ जाना शुरू कर दिया। बड्डी ने सलाह दी कि कोई प्रतिद्वन्दी मार्ग में बाधक हो तो उसे पिटवा दिया जाय। पीटने के लिये कई व्यक्ति तैयार थे। उनकी सेवाएँ हमारे लिये 'रिजर्व' थी। एक तो हमारे मित्र रुस्तम अली 'रीछ' थे और दूसरे लोमड़ी चन्द 'जड़ाऊ'—उनका नाम कुछ और था किन्तु वे लोमड़ी से मिलते जुलते थे और जड़ाऊ इसलिये कि उन्होंने अपने चेहरे पर असंख्य कील मुंहासे और न जाने क्या क्या अला बला की खेती कर रक्खी थी।

मुसीबत यह थी कि कोई प्रतिद्विन्दी भी न पैदा हुआ था। और उन लोगों का यह निर्णय था कि किसी उपयुक्त लड़के की खोज में सारा जीवन बिता देंगे लेकिन शैतान को दामाद न बनायेंगे।

बड्डी का आग्रह था कि पहले लडकी के बाप को वश में किया जाय चाहे किसी दुआ-तावीज से चाहे बातचीत से। इसी सिलसिले में शैतान

रोज उनके घर में जाते और उन बुजुर्ग को बहकाते।

एक दिन शाम को हम दोनों वहाँ पहुंचे। बुजुर्ग बोले—'लड़को चूंकि अब चाय का वक्त तो नहीं रहा लेकिन अगर कहो तो मंगवाऊं।

'जी हाँ जरूर।' शैतान बोले।

मैंने मेज के नीचे से पैर में एक ठोकर मारी। परन्तु शैतान मेरा मतलब नहीं समझे और जोर से बोले—

"यह तुम मुझे मारते क्यों हो?"

चाय पर बातें शुरू हुई। वे बुजुर्ग रेलवे बजट की चर्चा कर रहे थे। पता नहीं उन्होंने क्या क्या कहा। क्योंकि मुझे रेलवे से थोड़ी दिलचस्पी जरूर है लेकिन बजट से जरा भी दिलचस्पी नहीं। मैंने कुछ न सुना। शैतान बढ़ बढ़ कर बोल रहे थे। आखिर उन वृद्ध महाशय ने अखबार देखकर कहा—'इस साल बजट इतने करोड़ इतने लाख, इतने हजार चार सौ निन्यानवे रुपये पाँच आने नौ पाई आया है।......इसके बारे में तुम्हारे क्या विचार हैं?'

शैतान कुछ देर सोच कर बोले—'मेरे ख्याल में बजट में दस आने तीन पाई जमा कर देने चाहिये ताकि आने पाइयों का झगड़ा खतम हो और अंक पूरे रुपयों के रह जायें।'

बजट के बारे में बात वहीं समाप्त हो गई। फिर कसरत की चर्चा चली। वृद्ध ने कहा—'इस उम्र में मैं भाग दौड़ तो नहीं सकता, हाँ साइकिल चला लेता हूँ। इससे अच्छी खासी कसरत हो जाती है।'

'मोटर में बैठने से भी काफी कसरत होती है।' शैतान बोले—'और रेल की सवारी से तो और भी कसरत हो जाती है।

वृद्ध चुप हो गये। थोड़ी देर तक कोई न बोला। आखिर तंग आकर मैंने शैतान से पूछा—'क्या सोच रहे हो?'

शैतान बोले—'यह कितनी अजीब बात है कि हम इस वास्तविक

तथ्य को भूल चुके हैं कि हम एक सितारे में बसे हुए हैं।'

इस बार बुजुर्ग ने ऐसा बुरा मुंह बनाया कि मैंने सोचा, अब यह छींक मारेंगे।'

रेडियो पर स्थानीय स्टेशन से कोई गाना प्रसारित हो रहा था। वृद्ध बोले—'बिलकुल फ़िजूल गाना हो रहा है। जाने ऐसे गवैइयों को गाने की इजाजत कौन दे देता है।

शैतान तुरन्त उठे—'अभी बन्द करवाता हूँ।' मैं साथ उठा। बराबर के कमरे में गये और रेडियो स्टेशन को फ़ोन करके पूछा गया—'इस वक्त कौन गा रहा है?'

'इस वक्त जनाब मस्त मौला साहब ताबड़ तोड़ भीम सेन भंग का ख्याल धूम धाम ध्रुपद में अलाप रहे हैं।' कुछ इसी ढङ्ग का जवाब उधर से आया।

'तो उनसे कह दीजिये कि फ़ौरन चुप हो जायें' शैतान ने कहा।

'हम भविष्य में प्रोग्राम देते समय इस बात का ध्यान रक्खेंगे कि आप उनका गाना पसन्द नहीं करते। परन्तु इस समय कुछ नहीं कर सकते।

'विश्वास कीजिये, हमें बेहद बुरा लग रहा है।

'आप कुछ देर के लिये रेडियो बन्द कर दीजिये।

'और आप अपने मस्त कलन्दर को चुप नहीं करायेंगे। अच्छा अगर यह बात है तो तैयार हो जाइये। मैं अभी आकर खबर लेता हूँ।' यह कह कर फोन बन्द कर दिया।

जब हम वापस आ रहे थे तो मैंने अपनी तुच्छ राय प्रकट कर कहा कि बुजुर्गों के सामने शैतान को थोड़ी इन्सानियत से काम लेना चाहिये।

लेकिन शैतान का विचार था कि चूंकि अभी मेरे अनुभव सीमित हैं इस लिए विचार भी सीमित हैं।

वापस कमरे में पहुंचे तो देखा कि असंख्य मच्छड़ और भाँति भाँति के भुंगे, कीड़े तथा पतिंगे बल्ब के गिर्द एकत्र हैं।

शैतान बोले—'मै उन भाग्यशाली लोगों में से हूँ जिन पर मच्छड़ भड़, ततइये, मक्खियाँ आदि बुरी तरह आशिक हैं। और जहाँ मैं जाता हूँ, ये जीव यदि कई मील के फासिल पर भी हों तब भी स्वागतार्थ आ जाते हैं।'

मच्छड़ों ने तो हमें परेशान कर दिया। तंग आकर हमने रोशनी बुझा दी। लेकिन मच्छड़ों की भनभनाहट पूर्ववत जारी रही। इतने में संयोग से एक जुगनू भी उड़ता हुआ कमरे में आ गया। शैतान बोले—'देखी तुमने इन बेईमान मच्छड़ों की शरारत। अब ये मशाल लेकर मुझे ढूंढ़ रहे हैं।'

हम दोनों जुगनू के पीछे पड़ गये। उसका बाहर जाने का बिलकुल विचार नहीं था। हमने जबरदस्ती उसे बाहर भगाया। मसहरियों में भी मच्छड़ पहुंच चुके थे। शैतान बोले—'मसहरी इस्तेमाल करने का सही तरीका यह है कि पहले मसहरी खूब अच्छी तरह लगा लो। इसके बाद एक तरफ से कुछ हिस्सा ऊपर उठा दो और कुछ देर उठाये रक्खो ताकि कमरे भर के मच्छड़ मसहरी में चले जायँ। इसके बाद मसहरी बन्द कर दो और स्वयं बाहर सो जाओ।'

अगले दिन बड्डी आया और आते ही उसने चारों सवाल पूछे। मैंने और शैतान ने निश्चय कर लिया था कि आज बड्डी की बातों पर बिलकुल नहीं हँसेंगे।

बड्डी बोला—'मैं न्यूयार्क के एक प्रसिद्ध होटल में ठहरा हुआ था। रात गये किसी ने मेरे कमरे का द्वार खटखटाया मैंने द्वार खोला, देखा कि एक आदमी नशे में मस्त खड़ा है।

मुझे देख कर बोला—'माफ कीजिये, गलती हुई। मैं दरवाजा बन्द कर के लेट गया। थोड़ी देर के बाद फिर किसी ने दरवाजा खटखटाया। जाकर देखा तो वही व्यक्ति खड़ा था। माफी माँग कर चला गया। तीसरी बार फिर आया, चौथीबार, पांचवीं बार। आखिर मैं झल्ला उठा। इस बार जो वह आया तो मैंने पूछा—'क्यों महाशय, आप बार बार मेरे कमरे में क्यों आते हैं?' उसने बड़े भोलेपन से कहा 'और मेरी समझ में यह नहीं आता कि होटल के हर कमरे में मुझे आप ही क्यों मिलते हैं।'

हम दोनों चुप रहे। बड्डी ने हमारे हँसने का कुछ क्षण इन्तजार किया फिर कहने लगा—'मैं वाशिंगटन के एक चिड़िया घर की सैर कर रहा था। मुझे एक आदमी दिखाई दिया जो बहुत से बच्चों को साथ लिये फिर रहा था। मैंने गिने तो बारह बच्चे थे। हम उस अहाते के बाहर फिर मिले जिसमें जेबरा बन्द था। वह आदमी चौकीदार के पास गया और बोला—'क्या मैं और मेरे बच्चे सब अन्दर जाकर जेबरा देख सकते हैं? चौकीदार ने पूछा—'क्या यह सब बच्चे आपके हैं'? 'जवाब मिला—'जी हाँ सब मेरे हैं।' चौकीदार कुछ देर बुत बना खड़ा रहा, फिर बोला—'तो आप यहीं ठहरिये। मैं अन्दर से जेबरे को बुलाकर लाता हूँ, जिसमें कि वह आपको देख ले।,

शैतान ने मुंह बनाया और फिर रो पड़े। अब बड्डी समझ गया कि हम उसके साथ ज्यादती कर रहे हैं। उसे मनाना पड़ा।

भोजन के बाद शैतान की प्रेमिका की चर्चा चल पड़ी 'आखिर तुम लड़की से खुद क्यों नहीं मिलते?' बड्डी ने पूछा।

'इस लिये नहीं मिलता कि अगर कहीं उसने हाँ कर दी तो मुसीबत आ जायगी। उसके बाप लाजिम तौर पर नहीं कर देंगे और फिर मैं कुछ कर बैठूँगा।'

'लेकिन तुम्हें लड़की की हाँ पर क्या आपत्ति है। समझ में नहीं आता कि तुम इंतजार किस बात का कर रहे हो। शायद तुम इस इन्तजार में हो कि कब लड़की की शादी किसी और से होती है और कब तुम्हें छुट्टी मिलती है...... क्यों ?'

'और जो लड़की ने कहीं न करदी तब उसके बाप की हाँ बेकार होगी। अगर दोनों ने न कर दी तब बड़ी कोफ्त होगी।' शैतान ने कहा।

'तुम्हारी दलील मेरी समझ से बाहर है। बड्डी ने कहा—'फिर भी मैं यह सलाह जरूर दूंगा कि तुम उसके बाप से मिलते रहा करो।

अगले दिन हम दोपहर के समय उनकी कोठी की तरफ चले। अभी सड़क पर ही थे कि किसी बच्चे के रोने की आवाज सुनाई दी।

अन्दर गये तो वहां किसी मकान का जिक्र हो रहा था। वे लोग बदलना चाहते थे। तीसरे पहर को मकान देखने का प्रोग्राम था। हमें भी बुलाया गया। वह मकान नदी के किनारे पर था।

शैतान ने कहा—'मैंने सुना है कि जो मकान नदी के किनारे पर हों उनकी उमर एक साल से ज्यादा नहीं होती, बल्कि शायद इससे पहले ही गिर पड़ते हैं।

'तुमने किस से सुना ?' बड़े मियां ने पूछा।

'अफ़वाह है।'

'किस से सुनी ?' बड़े मियां सचमुच नाराज हो गये। उन्हें बड़ी जल्दी गुस्सा आता था।

'साहब मुझे खुद ठीक से पता नहीं है। लेकिन मेरे एक दोस्त कह रहे थे कि उनका नौकर जब बाजार गया तो उसने एक दुकनदार को कहते सुना कि एक ग्राहक के किसी दोस्त ने कहीं से यह सुना कि कुछ आदमी एक जगह चरस वगैरह पीकर यह कह रहे थे कि.....

और वे वृद्ध एक दम हँसने लगे। बोले—बरखुरदार! तुम मेरे गुस्से का ख्याल न किया करो। मेरा गुस्सा ही क्या। अभी पारा ऊपर पहुंचा नहीं कि नीचे उतर आता है।'

'और अभी अच्छी तरह नीचे नहीं उतरता कि फिर ऊपर चला जाता है।' शैतान बोले और वे बड़े मियां फिर खफा हो गये।

मैंने धीरे से शैतान को टोका—'रूफी इस तरह तो तुम जिन्दगी भर लड़की को नहीं जीत सकते।'

'तुम्हारे अनुभव सीमित हैं इस लिए विचार भी सीमित हैं।' शैतान बोले। हम लोग पैदल रवाना हुए। हमारे साथ वे सज्जन भी थे जो मकान दिखाने के सिलसिले में आये थे।

मकान देखा। यों ही सा था। शैतान से राय पूछी गई। बोले—"बस मकान है।

मकान दिखाने वाले सज्जन बार बार नदी की चर्चा करते थे—'नदी के किनारे हैं' 'वह देखिये नदी' नदी बिलकुल सामने है।'

शैतान बोले—'साहब यह क्या आप घड़ी घड़ी नदी का हवाला देते हैं। मकान से उसका क्या सम्बन्ध। आप अपनी नदी को हटालें तब भी क्या बिगड़ जायगा।'

जब हम वापस आ रहे थे तो मकान दिखाने वाले सज्जन, बड़े मियाँ और मैं, तीनों शैतान से विरक्त थे।'

मैं और शैतान 'सुबह तड़के' ग्यारह बजे शेव कर रहे थे कि एक सज्जन आये और शैतान से बोले—'क्यों जनाब, रुफी साहब आप ही हैं?'

'हो सकता है कि मैं रूफी हूँ, यह भी हो सकता है कि मैं रूफी न होऊँ। वह तो इस पर निर्भर करता है कि आप किस काम के लिये आये हैं!'

असल बात यह थी कि पड़ोस के एक सज्जन हर रोज अपना नौकर हमारी साइकिल के लिये भेज देते थे। मालूम हुआ कि मकसूद घोड़े ने हमें बुलाया है। मकसूद घोड़ा एम० एस० सी० में पढ़ता था और क्रिकेट खेलते समय वह बहुत तेज भागता इस लिये उसका नाम घोड़ा रख दिया गया था। वह शैतान की प्रेमिका के पड़ोस में रहता था। शायद कूच-ए-यार की कोई ताजा खबर सुनाना चाहता हो। हम जल्दी जल्दी शेव करने लगे।

'लेकिन इस समय वह शायद लतीफ साहब के यहाँ होगें। एक घन्टे तक लौटेंगे।' उस आदमी ने कहा। लतीफ भी साइन्स पढ़ता था। आदमी को हमने वापस किया और स्वयं तैयार हो गये।

'उसका बेग जरूर ले चलना। महीनों से हमारे यहाँ मेहमान है।' मैंने याद दिलाया। बेग लेकर हम चल पड़े।

लतीफ के घर पहुँचे! दरवाजा खोला ही था कि एक साहब ने जल्दी से शैतान के हाथ से बेग ले लिया और एक कमरे में ले गये जहाँ एक बच्चा बिस्तर पर लेटा था। शैतान को 'डाक्टर साहब' कह कर सम्बोधित किया गया। शायद वे लोग किसी डाक्टर की प्रतीक्षा कर रहे थे। मेरे आश्चर्य का ठिकाना न रहा। शैतान नियमित रूप से बच्चे का निरीक्षण करने लगे। आंखों में उङ्गलियाँ डालीं 'हाँ हाँ' कराया। सीना ठोंक बजा कर देखा। कमर में एक मुक्का रसीद करके कहा—'दर्द हुआ?'

कोई आध घन्टे तक शैतान निरीक्षण करते रहे। इसके बाद बोले—"जनाब, मैं डाक्टर नहीं हूँ। एम० ए० का विद्यार्थी हूँ और लतीफ साहब से मिलने आया हूँ। लेकिन मेरे विचार में यह केस 'एक्यूट टॉन्सलाइट्स' का है। साथ ही 'फ्रंजाइट्स' और 'रहानाइट्स' भी हैं।

ताज्जुब नहीं कि 'ट्रीकी आइट्स' भी हो। बहरहाल घबराने की कोई बात नहीं है।'

पता चला कि लतीफ रात से गायब है। सीधे मकसूद घोड़े के घर पहुंचे। वहां ताला लगा हुआ था! सड़क पर इन्तजार करना पड़ा।

ऊपर से किसी ने आवाज दी। देखा तो मकसूद घोड़ा हिनहिना रहा था।

'अरे नालायक! बाहर ताला लगा कर भीतर बैठा है।'

उसने चाभी फेंकी। ताला खोल कर हम अन्दर गये। मालूम हुआ कि उसका इम्तहान शीघ्र ही होने वाला है इसलिए पढ़ाई में व्यस्त है।

'तो हमें बुलाया क्यों था?' शैतान कड़क कर बोले।

'भई सुबह सुबह रूफी की प्रेमिका के दर्शन हुए। मैं छत पर बैठा पढ़ रहा था। उधर शायद उनका भी इम्तहान है। वे किताबें लेकर छत पर आईं कुछ देर पढ़ कर वापस चली गईं। पूरी उम्मीद है कि दोबारा ऊपर जरूर आयेंगी।'

'आयेगी कहो; अदब आदर की कोई जरूरत नहीं।' शैतान बोले—'और मुझे जरा ठन्डा पानी पिलाओ। मैं हुस्न के रोब से थर्रा रहा हूँ।'

मकसूद घोड़ा पानी लेने चला गया और न जाने कहाँ गायब हो गया जब काफी देर हो चुकी तो शैतान जोर से बोले—'कहीं आक्सीजन और नाइट्रोजन लेकर शुद्ध जल तो नहीं बना रहा है, अरे भई सादा पानी ही ले आओ।'

मकसूद घोड़ा बगटुट भागा आया और बोला—'चलो छत पर।'

हम छत पर पहुंचे और बाकायदा मोरचा बनाकर आड़ से देखने लगे।' दूसरी छत पर कई लड़कियां बैठी थीं।

'यह तो कई हैं।' शैतान बोले।

'तो क्या हुआ इनमें तुम्हारी प्रेमिका भी तो है। पहचान लो।'

'कौन सी है भई रूफी?' मैंने पूछा।

'वह हरे डुपट्टे वाली।' शैतान बोले।

'वही जिसने सफेद जूते पहन रक्खे हैं ?' घोड़े ने पूछा।

'हम लड़कियों के जूतों की तरफ नहीं ध्यान देते।' शैतान ने कहा।

मैं कुछ कहने ही वाला था कि शैतान जल्दी से फिर बोल पड़े—'अरे हरे डुपट्टे वाली नहीं, वह प्याजी साड़ी वाली है।'

'अच्छा ?' हम दोनों ध्यान से देखने लगे।

'रूफी यार यह तो कुछ भी नहीं, यह योंही सी है।' घोड़ा बोला।

'तो फिर वह होगी जिसके दो लटें हैं, जो मुस्करा रही है।' शैतान बोले।

'होगी से क्या मतलब है तुम्हारा ? धिक्कार ऐसे आशिक पर जो अपने माशूक को न पहचान सके।'

'ऐनक के शीशे साफ करो।' मैंने सलाह दी।

शीशे साफ किये गये।

'भई वही है हरे डुपट्टे वाली।' शैतान ने आखिरी फैसला दे दिया।

इतने में नौकरानी आई और लड़कियों को बुला कर ले गई।

तय हुआ कि लड़की खासी है, लेकिन ऐसी नहीं है कि शैतान इतना शोर गुल मचाये कि दोस्तों के प्रोग्राम खराब कर दें।

'तुम दोनों बेहद बदमजाक मालूम होते हो। मैं तुम्हारे स्टैन्डर्ड पर अफसोस जाहिर करता हूँ।' शैतान बोले—'खैर बड्डी को दिखायेंगे, वह फैसला करेगा।'

घोड़े ने वायदा किया कि जब कभी ऐसा नादिर मौका फिर आया वह हमें सूचित कर देगा और हम बड्डी को साथ लायेंगे।

चलते समय घोड़े ने कहा—'रूफी मैं तो यही सलाह दूँगा कि तुम हरे डुपट्टे वाली के बजाय सफेद डुपट्टे वाली पर आशिक हो जाओ तो अच्छा होगा। आगे तुम्हारी मरजी।'

'मैं आशिक हूँ या मदारी ?' शैतान नाराज होकर बोले।

इसके बाद कुछ दिन तो बिलकुल खामोशी से गुजरे क्योंकि शैतान का तिमाही इम्तहान था और शायद यह उनके जीवन में पहला इम्तहान था जिसके लिये उन्होंने कुछ तैयारी की थी।

शैतान तिमाही इम्तहान में पास हो गये। यह खबर बिजली की तरह सारे शहर में फैल गई। बधाई देने वालों का ताँता बंध गया। पत्र आये, बधाई के तार आये। सब दोस्तों ने फैसला किया कि चूँकि बहुत मुद्दत के बाद यह शुभ घड़ी आई इसलिए इस खुशी में एक उत्सव मनाया जाय। रुपयों का सवाल उठा। शैतान के भाई जान वहीं थे। शैतान बोले—"भाई जान से उधार लिये जायँ।'

'और भाई जान न दें तो ?'

'उनसे पूछें ही क्यों ? उन्हें पता चलाये बिना चुपचाप उधार ले आयें।'

अतएव उत्सव मनाया गया। लगभग सभी मित्र सम्मिलित थे।

शैतान बड़े आग्रह के बाद उन बड़े मियां को भी ले आये। मैंने बहुत कहा कि इस चंडाल चौकड़ी में उन्हें हरगिज न बुलाया जाय। परन्तु वे न माने। दुर्भाग्य से वे बड़े मियाँ दो और बुजुर्ग अपने साथ ले आये। उनमें से एक तो काफी बूढ़े थे और दूसरे इतने बूढ़े नहीं थे। उन दोनों के सामने वे बड़े मियाँ अपनी उमर से कहीं कम बूढ़े दिखते थे।

शैतान शर्बत लाये ? बुजुर्ग ने इनकार कर दिया। शैतान तुरन्त अन्दर गये और उसी शर्बत को पुरानी बनावट के लम्बे से गिलास में उँडेल कर दोबारा ले आये। बड़े मियाँ ने शुक्रिया के साथ गिलास ले लिया और गट गट पी गये।

प्रोग्राम शुरू हुआ। बड़े मियां के साथ आने वाले दोनों बूढ़े शतरंज लेकर बैठ गये और चाल सोचने लगे। देर तक उन्होंने ने मोहरों से

अपनी नजरें हटाईं और न कोई चाल चली। बस सिर झुकाये सिर खुजाते रहे। उनके सामने ढोल बजाये गये, तबले खड़काये गये, शोर मचाया गया। उनका नाम ले लेकर पुकारा गया। लेकिन क्या मजाल जो उनका ध्यान जरा भी शतरंज से हटा हो। आखिर उन्हें खींच खींचकर एक दूसरे से अलग किया गया और खूब तालियां बजीं।

अब गप्प प्रतियोगिता शुरू हुई। हमारी नियमावली के अनुसार प्रत्येक गप्प इस वाक्य से शुरू होती थी—'सज्जनों! यथार्थ कहानी की अपेक्षा कहीं रोचक होता है।' और इस वाक्य पर समाप्त होती थी—'विश्वास कीजिये यह मेरी आँखों देखी घटना है।'

एक से बढ़कर एक गप्प हांकी गई। जजों ने निर्णय किया। सर्वश्रेष्ठ गप्पें ये मानी गईं :—

रुस्तम अली शेख—'एक दिन मैं समुद्र के किनारे व्हेल मछलियों का शिकार कर रहा था क्या देखता हूँ कि एक व्यक्ति समुद्र में कूदने की तैयारी कर रहा है। शायद आत्म हत्या करना चाहता था। इतने में एक राहगीर ने उसे दौड़ कर पकड़ लिया और कारण पूछने लगा। वह व्यक्ति राहगीर को एक ओर ले गया। दोनों कुछ देर तक बातें करते रहे फिर दोनों किनारे पर गए और समुद्र में डूब गये।'

बब्बू—'ब्राजील के कुछ प्रदेशों में इतनी सर्दी पड़ती है कि यहां के निवासी कहीं और जाकर रहते हैं।'

तरबूज लाल तरबूज—अफ्रीका के कुछ रेगिस्तानों में इतनी खामोशी है कि वहाँ आप अपने को सोचता हुआ सुन सकते हैं।'

मकसूद घोड़ा—'चीन के एक प्रसिद्ध प्रदेश में इतना मलेरिया है कि वहाँ मच्छडों को भी मलेरिया हो जाता है। खूब बुखार चढ़ता है।

शैतान—'आज कल मैं बन्दूक खूब चलाता हूँ। मेरे निशाने का अन्दाजा इससे हो सकता है कि कल मैंने एक गोली चलाई और दूसरी गोली चलाई और दूसरी गोली से पहली के टुकड़े उड़ा दिये।'

लोमड़ी चन्द 'जड़ाऊ'—हमारे यहाँ एक बहुत पुराना क्लाक है। उसके पिन्डोलम का साया दीवार पर दस वर्ष से पड़ रहा है और दीवार पर साये का निशान पड़ गया है।'

हकील उमर अय्यार—जब मैं घोड़े पर सवार होकर हिमालय पर्वत की सैर कर रहा था तब शाम को मैंने बर्फ पर एक पेड़ के नीचे अपना बिस्तर लगाया और घोड़े को पेड़ से बांध कर सो गया। सुबह क्या देखता हूं कि बर्फ पिघल चुकी है मैं पेड़ की चोटी पर बैठा हूं और घोड़ा टहनियों से लटक रहा है।'

भोजन शुरू हुआ।

'सालन में जरा हल्दी कम है।' एक बुजुर्ग बोले। कई अन्य सज्जनों ने उनका समर्थन किया। भोजन समाप्त हो चुकने के बाद छोटी छोटी पुड़ियां बांटी गईं। पूछा गया—'यह क्या है?'

शैतान बोले—इनमें हल्दी है। जिन सज्जनों ने हल्दी की कमी को बुरी तरह महसूस किया हो वे अब फांक लें।'

अब गाने की पारी आई। बड्डी को पकड़ा गया कि वह गाये। वह माफी मांगने लगा लेकिन कोई न माना और बड्डी को गाना पड़ा।

बड्डी के बाद शैतान का नम्बर आया। शैतान बोले—'मैं खुद तो बिल्कुल नहीं गा सकता। हां किसी मशहूर गवैये की नकल उतार सकता हूँ। मसलन अब मैं उस्ताद अब्दुल करीम खाँ की नकल उतारूँगा।' यह कह कर शैतान ने गाना शुरू किया और खूब गाया। किसी को खयाल भी नहीं था कि शैतान इतना अच्छा गा सकते हैं। खूब तारीफ हुई। शैतान बोले 'सज्जनो यह तो नकल थी। मैं स्वयं तो बिल्कुल नहीं गा सकता।'

बुजुर्ग बोले—'बहुत अच्छा माल-कोस था तुम्हें कौन कौन से राग आते हैं?'

शैतान ने बड़ी विनम्रता से कहा—'केवल दो राग आते हैं। एक तो वह जो मालकोस है और दूसरा वह जो मालकोस नहीं है।'

उत्सव समाप्त होने वाला था इस लिये सब अपनी अपनी चीजें इकट्ठी करने लगे। उन बुजुर्ग के हाथ में टार्च थी और वे कुछ ढूँढ़ रहे थे। शैतान ने पूछा वे बोले—'दिया सलाई ढूँढ़ रहा हूँ ?'

'क्या आप अपनी टार्च जलाना चाहते हैं ? यह लीजिये।' यह कह कर शैतान ने दिया सलाई उनके हाथ में दे दी।

इसके बाद सब खड़े हो गये और शैतान ने दुआ मांगी। (हमारा हर उत्सव इसी प्रार्थना पर समाप्त होता था) शैतान सिर झुका कर बोले—'हे मालिक! हमें उल्लू की सी बुद्धि प्रदान कर और ऊँट का सा धैर्य। हमें ऐसी दृष्टि प्रदान कर जिसके लिये ऐनक की आवश्यकता न पड़े। हमारे विचारों की गती इतनी तीव्र हो कि हवा को पीछे छोड़ जाय। हम में कम से कम दस हार्स पावर की शक्ति हो। हमारी आत्मा और हृदय में टेलीफोन का सिलसिला कायम हो जाय और तू हमें स्वयं वायरलेस द्वारा नेक हिदायत दे।आमीन!'

सबने (सिवाय बुजुर्गों के) जोर से कहा—'आमीन!' और उत्सव समाप्त हुआ।

और मैंने शैतान से साफ साफ कह दिया की उन बुजुर्ग के सामने ऐसी ऐसी हरकतें करने के बाद कुटुम्ब में तुम सर्वप्रिय तो क्या प्रिय तक नहीं हो सकते!

शनिवार को टीम का चुनाव होने लगा। रविवार को हमारा सालना और सब से महत्व पूर्ण क्रिकेट मैच था। इस बार हम बाहर जा रहे थे। रात भर का सफर था। शनिवार की रात को चल कर रविवार को सुबह वहां पहुंचना था। शैतान ने आग्रह किया कि उन्हें अवश्य खेलाया जाय। कप्तान हिचकिचाते थे क्योंकि शैतान ऐसे वैसे ही खिलाड़ी थे। उनका

अधिक से अधिक स्कोर पांच रन था। उनके प्रिय स्ट्रोक दो थे—'आफ बाई' और 'लोग बाई'—अपने जीवन में उन्होंने दो कैच भी किये थे। पहला इस तरह कि मैच में शैतान और मैं स्लिप में खड़े बातें कर रहे थे। मैंने कोई चुटकुला सुनाया जो उनको बहुत पसन्द आया! हँस कर बोले—'मिलाओ हाथ।' उन्होंने मेरी ओर हाथ बढ़ाया और 'शप' से एक गेंद उनके हाथ में आ गई। खिलाड़ी आउट हो गया। यह दूसरी बात थी की बहुत ही अच्छा खिलाड़ी आउट हुआ था और बड़ा ही लाजबाब कैच शैतान ने किया था। दूसरा इस प्रकार कि विपक्षी दल के एक खिलाड़ी ने जोर से हिट लगाई और गेंद पेड़ में उलझ गई और शैतान लपक कर पेड़ पर चढ़ गये। गेंद पकड़ लाये और इम्पायर से अपील की गेंद जमीन से ऊँची थी कि कैच कर ली गई बड़ा झगड़ा हुआ। जब सत्याग्रह तक मामला पहुँचा तब सबने मान लिया कि सचमुच शैतान ने कैच किया है।

मैंने बड़ी कोशिश की किउन्हें बारहवां ही खिलाड़ी रख लिया जाय। अन्त में शैतान स्कोरर के रूप में शामिल किये गये। वे अपनी नाकदरी, पर बहुत नाराज थे।

शाम को हम स्टेशन पर पहुँचे। गाड़ी रात को बारह बजे आती थी और सुबह सात बजे उस स्थान पर पहुँच जाती थी जहाँ हमारा मैच था। शैतान ने पता लगा कर खबर दी कि एक इन्टर का डिब्बा यहीं से इसी ट्रेन में लगाया जाता है। वह डिब्बा इस समय स्टेशन के एक अंधेरे कोने में खड़ा है। अच्छा होगा कि हम सब अभी से उस पर कब्जा करलें और बिस्तर बिछा कर सो जायँ। प्रस्ताव अच्छा था। हम सब शैतान के साथ हो लिये। कप्तान ने निरीक्षण किया इधर उधर से सूंघा। जब अच्छी तरह तसल्ली हो गई तो हमें अनुमति दे दी। हमने बिस्तर बिछा दिये। सर्दी खासी पड़ रही थी इस लिये दरवाजे और खिड़कियाँ बन्द कर दीं। रोशनी बुझाकर लेट गये। शैतान का आग्रह था कि तुरन्त

सो जायें। कल मैच है लेकिन नौ दस बजे नींद किसे आती है इधर उधर की बातें होने लगी। आखिर शैतान ने जबरदस्ती सब को पकड़ कर सुला दिये।

रात को मेरी आंख खुली। बिलकुल अंधेरा था। इधर उधर झांका धीरे से बोला—'रूफी।'

आवाज आई—'हाँ।'

'क्या बजा होगा?'

'पता नहीं.......बस तुम इसी वक्त सो जाओ।'

'गाड़ी किसी स्टेशन पर खड़ी है शायद?'

'शायद।' शैतान बोले।'

मैंने बड़ा यत्न किया किन्तु नींद न आई। इतने में दो चार व्यक्ति उठ खड़े हुये और समय पूछने लगे।

'मैं कोई घंटा घर हूँ या चौकीदार?' शैतान खफा होकर बोले—'यदि इसी तरह रात भर जागते रहे तो खेलोगे अपना सिर?'

'लेकिन यार रूफी, यह गाड़ी चलती क्यों नहीं। बड़ी देर से खड़ी है?'

किसी बड़े स्टेशन पर खड़ी होगी या कहीं क्रास होगा।' शैतान बोले। एक साहब ने खिड़की खोलनी चाही। शैतान ने एक डांट बताई 'खबरदार, कोई खिड़की न खोले। मुझे ठंडी हवा लगते ही निमोनिया हो जाता है। आखिर तुम लोग सो क्यों नहीं जाते?'

सब चुप हो गये। मेरी आँख लग गई। थोड़ी देर के बाद फिर जाग उठा। डिब्बे में बहस हो रही थी। सब कह रहे थे कि गाड़ी रुकी है लेकिन शैतान विश्वास दिला रहे थे कि चल रही है। उन्होंने साइन्स के कुछ सिद्धांत बता कर सिद्ध कर दिया कि जब गाड़ी बेहद तेजी से चल रही हो तो सवारियों को उसकी गति का पता नहीं चलता और यही लगता है मानों गाड़ी खड़ी है।

इतने में एक गाड़ी दूसरी ओर बड़ी तेजी से चली गई। शैतान ने चट कहा—'यह देखो, हमारी गाड़ी ने एक स्टेशन छोड़ा है।'

सम्भवतः सब संतुष्ट हो गये और थोड़ी देर में सो गये।

जब मेरी आँख खुली तो मुझे 'कुकड़ूँ कूँ' सुनाई पड़ी। कुछ मुर्गे बड़ी मुस्तैदी से बाँग दे रहे थे।

'रूफी !' मैंने धीरे से कहा।

'सो जाओ।' शैतान बोले।

'ये मुर्गे कहाँ बोल रहे हैं ?'

कुछ और लोग उठ खड़े हुए। सब यही पूछने लगे कि ये मुर्गे कहाँ बोल रहे हैं ?

शैतान ने झल्ला कर कहा—'यह तुम लोगों को हो क्या गया है। मुझे सोने क्यों नहीं देते। जहन्नुम को सिधारो तुम सब। इतना भी नहीं समझ सकते कि साथ के डिब्बे में किसी मुसाफिर के मुर्गे हैं जो बोल रहे हैं। क्या मुर्गे साथ लेकर सफर करना जुर्म है ?'

फिर सन्नाटा छा गया। लेकिन बहुत जल्द एक कोने में खुसुर पुसुर शुरू हो गई और एक साहब ने दरवाजा खोल दिया। क्या देखते हैं कि सुबह का सुहावना समाँ है। पक्षी चहचहा रहे हैं, प्रभात समीर बह रही है, मुर्गे अजान दे रहे हैं और डिब्बा वहीं खड़ा है जहाँ रात था। एक कुली जा रहा था। उससे स्टेशन का नाम पूछा। मालूम हुआ कि हम सचमुच उसी स्टेशन पर हैं जहाँ से कल रात चले थे।

हम तीसरे पहर चाय पी रहे थे कि बद्दो आगया। शैतान ने पूछा 'बद्दो आज क्या भोजन बना है ?'

बद्दो ने कुछ खानों के नाम गिना दिये।

शैतान ने ताजा खबर पूछी।

बद्दो ने फिर कुछ खानों के नाम गिनवा दिये।

शैतान ने शहर की सबसे अच्छी पिक्चर का नाम पूछा।

बड्डी बोला—'मुफ़लिस आशिक उर्फ मुफलिस माशूक'

'और मैं कुछ मोटा तो नहीं हुआ ?' शैतान ने मुस्करा कर पूछा।

'मोटा ! मोटे क्या तुम तो ठिकाने से दुबले भी नहीं हो।' बड्डी बोला।

बड्डी को अपना घर याद आ रहा था। वह अपने घर की बातें करने लगा। वहां के सुन्दर दृश्य, मनोहर ऋतु सगे सम्बंधी।

शैतान बोले—'तुम अपने घर का जिक्र कुछ इस ढंग से करते हो कि कभी कभी तो मुझे तुम्हारा घर याद आने लगता है।'

हम ताश खेलने लगे। शैतान की फरमायश पर फैसला हुआ कि आज बाजी लगेगी।

'कल मैंने एक बड़ा ही सुन्दर स्वप्न देखा।' मैंने कहा—'बड़ा ही सुन्दर स्वप्न। बस देखने से ही सम्बंध रहता है।''' आहा हा।'

लेकिन शैतान मौन थे। 'सुनाऊँ ?' मैंने पूछा।

'हरगिज नहीं।' शैतान बोले।

'ऐसा स्वप्न है कि''''''।'

'नहीं बिलकुल नहीं !' शैतान ने कहा।

'बड़े खुद गरज हो रूफी ! बड़ा अफसोस है तुमने हमारे स्वप्न का अपमान कर दिया।'

'भई इस वक़्त किसी किस्म का भी स्वप्न सुनने को जी नहीं चाहता। आज मैं कुछ अच्छे मूड में नहीं हूँ।' मालूम हुआ कि शैतान ने अपनी प्रेमिका को आज देखा था। उसके घर गये थे।

'आखिर हुआ क्या ?' बड्डी ने पूछा।

'यह पूछो कि क्या नहीं हुआ ? आज मैंने ऐसा नजारा देखा कि बस उस समय जान दे देने को जी चाहता था। लेकिन तुम लोगों

की वजह से जिन्दा रहना पड़ा। आज मैंने देखा कि एक रुपये पैसे वाले हजरत उस लड़की को देखने आये थे। पहले तो उन दोनों का परिचय कराया गया फिर लड़की की बाकायदा नुमायश शुरू हुई। चाय पर बुलाई गई। उसकी दस्त-कारी के नमूने दिखाये गये और अन्त में लड़की ने गाना गाया······।'

'कौन सा राग था?' मैंने बड़ी उत्सुकता से पूछा।

'मालकोस नहीं था। लेकिन उस सारी नुमायश में मुझे उसका गाना बहुत बुरा लगा। अब मैं उस लड़की से बिलकुल विरक्त हूँ। वाकई मक़सूद घोड़ा बिलकुल सच कहता था कि वह इतनी सुन्दर भी नहीं है। उससे तो वह सफेद दुपट्टे वाली ही अच्छी थी। अब मुझे मुहब्बत से सख्त नफरत और नफरत से मुहब्बत होती जारही है।

'सचमुच?' हम दोनों ने पूछा।

'बिलकुल।'

'तुम्हारा प्रेम भी तुरुप चाल की तरह है।' बड्डी बोला—'एक दम शुरू हो जाता है और बिलकुल ज़रा सी देर रहता है।'

'और रंग बदलता रहता है।' मैंने कहा।

'तुरुप चाल।' शैतान ने पत्ता पटका। मैं और बड्डी एक दूसरे का मुँह देखने लगे। 'पत्ते डालते जाओ' शैतान बोले—'इस वक्त पाँच बजे हैं। बड्डी, मुझे मालूम है कि सड़क पर एक बड़ी ही सुन्दर और प्यारी गाय जा रही है और यह भी मालूम है कि सोफे के पीछे कोई नहीं है यह तुम बदरंग क्यों डालते हो! ······ कह जो दिया कि तुरुप चाल!'

—:o:—